समय के पंख

सं. ८८

Samha ka pank.

आदिल रशीद

Aadit Rashid

नवयुग प्रकाशन, दिल्ली

Nawyug parkashan, Delhi

मूल्य—पाँच रुपया

द्वितीय संस्करण—जुलाई १९६८

1967

प्रकाशक—नवयुग प्रकाशन
३९ यू०ए०, बैंग्लो रोड, दिल्ली-७

मुद्रक—जय भारती प्रेस,
सदर बाज़र, दिल्ली-६

घामपुर कानपुर के निकट एक बहुत ही उपजाऊ कस्बा था। इस कस्बे की सबसे बड़ी शान यह थी कि यह आबादी के दृष्टिकोण से भी प्रसिद्ध था। यहां ज्ञान-विज्ञान की महफ़िलें सदा गर्म रहती थी। इस कस्बे ने बड़े-बड़े आलिम-फाज़िल और बुज़ुर्ग हस्तियों को जन्म दिया था। बड़े-बड़े वकील, बैरिस्टर, डाक्टर और राजनीतिज्ञ इस कस्बे से उठे थे और वह पूरे देश पर छा गए थे।

रईस अहमद इसी कस्बे के सबसे बड़े और सबसे माननीय जागीरदार थे, जो रईस मियाँ के नाम से प्रसिद्ध थे। रईस स्वभाव के बहुत ही नेक, गरीबों के हमदर्द और मित्रों के लिए जान की बाज़ी लगा देने वाले दोस्त। बहुत बड़े दिल और बहुत बड़े दिमाग के मालिक। कभी कोई सवाली उनके दरवाजे से खाली हाथ वापिस नहीं जाता था। और उनकी हवेली का मर्दानखाना मेहमानों से भरा रहता था। दूर-दूर से लोग आते थे। और आ-आकर महीनों उनके यहाँ ठहरे रहते थे।

मेहमानखाने में एक समय सौ-सौ आदमियों के ठहरने की जगह थी जिस के लिए रईस मियाँ ने नौकर-चाकर अलग रख छोड़े थे। मेहमानखाने का रसोईघर बहुत बड़ा था और इसमें बिना नागा पच्चीस-पच्चीस आदमियों का खाना पकता ही रहता था। रोज़ एक दो बकरे काटे जाते थे और बड़ी-बड़ी नान्दें खाद्य वस्तुओं से भरी रहती थीं। तंदूर लगा हुआ था। और गर्म-गर्म तंदूरी रोटियाँ और सालन और दाल और तरकारी हर अतिथि को पेश की जाती थी।

मेहमानखाने के लिए खाना पकाने वाले रसोइए हमेशा नियुक्त रहते थे। और फिर इसी पर छुटकारा नहीं बल्कि रोज़ कोई न कोई मेहमान एक न एक दरख्वास्त लेकर खड़ा ही रहता था।

"रईस मियां! मैं आपका नाम सुनकर बहुत दूर से हाज़िर हुआ हूँ। आठ दिन से आपके टुकड़ों पर पल रहा हूँ। रोज़ हिम्मत करता

था और हिम्मत जवाब दे जाती थी। बात दरअसल यह है रईस मियाँ साहिब······"वह फौरन ही बोल उठते, "हां···हां भाई कहो, आखिर क्या बात है, मैं आपकी क्या ख़िदमत कर सकता हूँ।"

"हजूर ! गरीब परवर !" वह गिड़गिड़ाने लगता, "जवान बेटी घर में बैठी हुई है। उसके ब्याह के लिए कुदरत की तरफ़ से कोई इंतज़ाम नहीं हो रहा है। बेहद गरीब हूँ और चाहता हूँ कि इस फ़र्ज से भी छुटकारा हासिल करें तो अच्छा है।"

वह अपनी आंखों से यूं ही झूठ-मूठ आँसू पोंछने लगता, "खुदा ने आपके सामने हाथ फैलाने पर मजबूर कर दिया है।"

रईस मियाँ बड़ी नम्रता से कहते, "रो क्यों रहे हो भाई। खुदा बड़ा है। उस पर यकीन रखो।" और फिर वह अपने कारिन्दों को आवाज देते, "शरफ़ अलदीन।" और जब वह हाथ बाँध कर सामने आता तो वह कहते, "देखो शरफ़ अलदीन ! यह बेचारे बहुत दूर से हमारा नाम सुनकर आए हैं। परेशान हैं। इन्हें अपनी बेटी का ब्याह करना है। तुम हमारी तरफ से अढ़ाई सौ रुपये दे दो।"

और फिर दूसरा कहता। "हुजूर ! मैं मुसाफिर हूँ। मुझे अजमेर शरीफ़ ख्वाजा गरीब नवाज के दरबार में हाजिरी देनी है······"

और वह हुक्म देते "शरफ़ अलदीन इन्हें अजमेर शरीफ़ के किराए के अलग पाँच रुपये और दे दो।"

फिर तीसरा आता "रईस मियाँ का इकबाल बुलन्द हो। मुझे वतन अमृतसर पहुँचना है।"

"मैं बीमार हूँ रईस मियाँ।"

"मुझे मुकद्दमे के लिए पचास रुपये की जरूरत है।······"

"मेरी पत्नी बीमार है।"

"मैं बड़ी मुसीबत में हूँ।"

"आपको सारी ज़िंदगी दुआएँ दूंगा। मेरी मुश्किल आसान फरमा दीजिए।"

"आपको अल्लाह पाक इसका फल देगा। मेरा इन्तजाम कर दीजिए।"

इन सवालियों में मुसलमान भी होते थे और हिन्दू भी। सिख भी होते थे और दूसरे धर्म वाले भी। वह कभी न तो किसी के बारे में पूछते और न उनके नाम के बारे में।

मेहमानखाने में जहां मुसलमानों के लिए प्रबन्ध होता था वहा हिन्दुओं के लिए भी अलग प्रबन्ध था। अगर मुसलमानों के लिए बावर्ची थे तो हिन्दुओं के लिए ब्राह्मण नौकर थे। और अगर कोई पका हुआ खाना न खाता था तो उसे रईस मियाँ की तरफ से कच्चा सामान मिलता था। आटा, दाल, चावल, नमक, मिर्च, घी, तेल और लकड़ी। और वह अपने लिए अलग पका लेता था।

रईस मियाँ को साहित्य से भी लगाव था। शायरी का भी उन्ह शौक था। और इसलिए साल में दो चार छः धूम-धाम से मुशायरे भी हो जाया करते थे। और वह इन मुशायरों में दूर-दूर से शायरों को बुलवाते थे। उन्हें आने-जाने का सैकिंड क्लास का किराया देते थे। उन्हें शानदार तरीके पर ठहराते थे। और उनकी शाही ढंग की दावतें भी करते थे। और फिर चलते समय वह हर शायर को उसकी पोजीशन, प्रसिद्धि और ख्याति के लिहाज़ से उसे नकद रुपया भी देते थे। बड़े-बड़े शायरो को तो वह चार और पाँच-पाँच सौ तक देते थे। और सौ रुपये से कम वह किसी को भी नहीं देते थे और हर शायर उनके यहाँ से खुश खुश और उनके गुण गाता हुआ वापिस जाता था।

एक दिन रईस मियाँ के पास एक आदमी आया। और वह अपना दुःख बताकर रोने लगा। और उसके रोने पर वह भी प्रभावित हुए बिना न रह सके। उनकी आंखें भी भगी गईं। और वह अवरुद्ध कंठ से बोले, "फिक्र न करो रामलाल भाई। अल्लाह बड़ा कारसाज है।" फिर उन्होंने अपने कारिन्दे को बुलाया। और जब शरफ़ अलदीन आ गया तो वह उससे बोले, "देखो भाई शरफ़ अलदीन। इन्हें पाँच सौ रुपये दे दो।" और जवाब में जब शरफ़ अलदीन उनके पास से 'जी सरकार' कहकर न गया तो वह चौंके और अभी उनके माथे पर शिकन पड़ने ही वाली थी कि शरफ़ अलदीन ने उनके कान में बड़े आदर से कहा, "सरकार! वह बात असल में यह है कि खज़ाने में इतना रुपया

नहीं है।"

"हैं......" वह एक बार ही चौंक पड़े। "यह क्या कह रहे हो तुम ?"

"मैं सच कह रहा हूँ, हजूर।" वह घिघिया कर बोला, "खज़ाने में सिर्फ डेढ़ सौ रुपये हैं। दो सौ थे। पचास मैं अभी मेहमानखाने के लिए देकर आ रहा हूँ।......"

"तो फिर ?" जिन्दगी में पहली बार चिन्ता के लक्षण उनके चेहरे पर पैदा हुए। और वह थोड़ी देर के लिए कुछ सोच में पड़ गए। और फिर वह वहाँ से चुपचाप उठे और अन्दर ज़नानखाने में चले गये।

अन्दर उनकी बेगम रज़िया ख़ादमा से सिर में तेल डलवा रही थीं। उन्होंने एक नज़र इन्हें देखा और फिर वह सीधे अपने अन्दर वाले कमरे में चले गए। वैसे वह रहते बाहर वाले ही कमरे में थे। मगर कभी-कभी उस कमरे में भी आ जाते थे।

वह कमरे में आकर सरकंडे के मोढ़े पर बैठकर कुछ सोचने लगे। और इधर उनकी बेगम ने सोचा कि ज़रूर कोई खास बात है। जभी वह इस समय ऊपर आए हैं। वरना इस समय उनका यहां क्या काम। यह सोच कर वह वहाँ से उठी और सीधी उनके कमरे में आकर बोली।

"फ़रमाइए, क्या बात है। नसीब दुश्मनों कहीं आपकी तबियत नासाज़ तो नहीं है ?"

"नहीं," वह बोले, "खुदा का फज़ल कर्म है।"

और वह फिर किसी गहरी सोच में डूब गए। रज़िया बेगम उसी जगह दूसरे मोढ़े पर बैठ गईं।

"फिर बात क्या है आखिर। आप किस सोच में पड़े हुए हैं ?" उन्होंने जवाब में उसी जगह मोढ़े पर बैठे-बैठे कई पहलू बदले।

"मैं आज जिन्दगी में पहली बार एक नई उलझन में फंसा हूँ।"

"ज़रा मैं भी तो सुनूं," रज़िया बोली, "शायद मैं कोई मदद कर सकूं आपकी।"

और वह हिम्मत से काम लेते हुए बोले, "इसीलिए तो आया हूँ।"

"फ़रमाइए," रज़िया बेगम जो कि उनकी हालत देख-देखकर

घबराई जा रही थीं, बेताब होकर बोलीं, "जल्दी फ़रमाइए। मैं तो हौल के मारे मरी जा रही हूँ।"

"जिन्दगी में पहली बार तुमसे कुछ माँग रहा हूँ। शर्म आ रही है।"

"कमाल करते हैं आप भी," वह बोलीं, "मुझे से क्या शर्म। अपनी कनीज़ों से भी कोई शर्माया है आज तक……।"

"मैंने आज तक तुम्हें दिया ही है, लिया नहीं।"

"बात क्या है," वह उलझ कर बोलीं, "साफ़-साफ़ फरमाइए…"

"मुझे एक हजार दे सकती हैं आप ?"

"हद करदी आपने भी।" रज़िया ने शांति का साँस लिया।

"खोदा पहाड़ निकली चुहिया। मैं तो समझी कि न जाने क्या बात है…" और फिर ज़रा-सा मुसकराईं। और अपने कमरे में जाकर उसने एक हजार निकाले और लाकर अपने पति के सामने रख दिए, बोली, "यह आपके ही तो हैं।"

"शुक्रिया," उन्होंने कृतज्ञता भरे ढंग से अपनी बेगम की तरफ़ देखा। और फिर वह उन रुपयों को लेकर बाहर चले गये।

× × ×

रईस मियाँ मर्दाने में बैठे थे। हुक्के से शौक फ़रमा रहे थे कि इतने में शरफ़ अलदीन आ गया और वह निहायत ही अदब से एक लम्बी तरह का फ़र्शी सलाम करके आदरपूर्वक खड़ा हो गया।

"क्या बात है," उन्होंने महनाल होठों से हटाई, "कुछ कहना चाहते हो ?"

"जी सरकार" वह गिड़गिड़ाया, "गुलाम कुछ अर्ज़ करने के लिए ही हाज़िर हुआ है।"

"कहो भाई,', वह गावतकिए पर टिक गए।

"हज़ूर, वह भोंगीलाल मारवाड़ी हाज़िर हुआ है।"

और भोंगीलाल का नाम सुनकर रईस मियाँ के माथे पर चिन्ता की शिकनें उभर आईं। वह कुछ देर ठहरकर बोले, "क्या कहना चाहता है ?"

"वह कहता है कि वह हज़ूर से सिर्फ़ दो बात करने के लिए हाजिर हुआ है।"

"अच्छा उसे बुलाओ।"

और वह अपनी जगह संभल कर बैठ गए। थोड़ी देर के बाद भोंगीलाल बिल्कुल भीगी बिल्ली बना हुआ हाज़िर हुआ। वह रईस मियाँ को देखते ही पृथ्वी चूमने लगा। और उसने इतनी लम्बी कोर्निस बजाई कि उसका हाथ फ़र्श से लग गया।

"क्या बात है," रईस मियाँ की आवाज सुनाई दी। और वहीं गिड़गिड़ा कर थूक सी निगलते हुए अपनी पगड़ी संभालने लगा और फिर उसने अपनी पगड़ी उतार कर रईस मियाँ के जूतों के पास रख दी और हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया।

"बोलो, बोलो," रईस मियाँ उसे ध्यान से देखते हुए बोले, "क्या कहना चाहते हो?"

"हजूरवाला, गरीबपरवर," उसने गिड़गिड़ाने और विनती की हद कर दी। "सरकार के पास एक विनती लेकर आया हूँ।"

"कहो।"

"सरकार हम गरीब आदमी हैं। जो व्याज का रुपया मिलता है उसी से कारोबार चलता है अपना।"

"हूँ," रईस मियाँ बोले।

"तो क्या तुम्हें दस हज़ार का सूद अभी तक नहीं मिला।"

"नहीं सरकार। मिला हो तो गऊ का मांस। चार महीने से उपर हो गया है सरकार।"

"अच्छा," रईस मियाँ ने हुक्के का एक लम्बा कश लिया।

"कितना सूद हो गया तुम्हारा।"

"बारह आने सकड़ा के हिसाब से चार महीने का तीन सौ हुआ सरकार।"

"शरफ़ अलदीन।"

"जी सरकार।"

"इधर आओ..."

और जब शरफ़ अलदीन उनके करीब गया तो उन्होंने पूछा, "कितना रुपया है तुम्हारे पास।"

वह थूक निगलते हुए बोला। "खज़ाने में अब तो कुछ भी नहीं हैं हज़ूर। कल तो मेहमानखाने के लिए भी दुशवारी होगी…"

"अच्छा," और फिर वह मूँगीलाल मारवाड़ी से बोले।

"तुम दस हज़ार और दो।

"हाजिर है सरकार। जो कुछ है इस गरीब के पास सो वह आप ही का है सरकार।" वह एक बार और पृथ्वी को चूमने लगा।

"तुम शरफ़ अलदीन को दस हज़ार और दे दो।"

और फिर वह कुछ सोचकर बोले।

"नहीं। तुम ऐसा करो कि पन्द्रह हज़ार दे दो। और अपना पिछला तीन सौ सूद का उसी में से काट लो।"

"कुल मिलाकर पच्चीस हज़ार का यही एक महीने का पेशगी काट लूं सरकार", मूँगीलाल आदरपूर्वक बोला, "गरीब आदमी हूँ मालिक।'

"हाँ, काट लो।"

"कितने दयालु हैं आप सरकार बड़े धर्मात्मा हैं आप ही जैसे रईसों के टुकड़ों पर तो हम ज़िन्दा हैं सरकार।"

यह कहकर वह चला गया। रईस मियाँ हुक्के से शौक़ फ़रमाने लगे। अभी वह हुक्के से शौक़ फ़रमा ही रहे थे कि इतने में उनके दोस्त नसर उल्लाह खाँ, ताहीद हुसैन और सेठ छगनमल ललतानी आ गए। उन्होंने बड़ी खुशी से उन सब का स्वागत किया।

"भाई हम लोग इस समय तुम्हारे पास एक काम से आए हैं।" नसर उल्लाह खाँ बोले।

"फरमाइए, बंदा हाज़िर है।"

"भाई बात दरअसल यह है कि हम लोगों ने फैसला किया है कि क़स्बे में एक पक्का कुँआ और बनना चाहिए।" ताहीद हुसैन बोले।

"और इसके खर्च का अनुमान लगाया गया है, वह दस हज़ार कम से कम है।"

"फिर।"

"फिर क्या यार," सेठ छगनमल बोले, "रईस होकर कह रहे हो फिर। फिर यही कि निकालो दस हज़ार।"

"अच्छा भाई," रईस मियाँ बोले, "काम शुरू कराओ। मैं दस हज़ार दे दूँगा।"

मगर यह कहने के साथ-ही-साथ उनका दिल जैसे कि अन्दर को बैठने लगा हो। मगर फिर उन्होंने अपनी हालत को संभाला और वह बोले : "अच्छा यार, यह तो सब होता ही रहेगा। आओ तनिक ज़रा पचपीसी हो जाए।"

और फिर यह चारों दोस्त पचपीसी खेलने बैठ गए।

"इस्तगफ़ार अल्लाह," मौलाना शफ़ीक अलरहमान ने बैठक में कदम रखते ही बड़े ज़ोर से लाहौल का नारा बुलन्द किया।

"यानी यह कि रईस मियाँ तुम यह क्या मुसीबत लेकर बैठे हो ?"

"जरा दिल बहला रहा हूँ मौलाना," रईस मियाँ ने नसरउल्ला खाँ की गोट पीटते हुए कहा। और मौलाना बिदक कर बोले, "इस्लाम में दिल बहलाना मना है।"

"जी मालूम है,"

मौलाना नाक भौं चढ़ाकर बोले। "क्या ?"

"यही कि इस्लाम में क्या मना है···" ताहीद हुसैन ने मौलाना के प्रश्न का उत्तर दिया।

"मैं कहता हूँ कि यह सब कयामत के आसार हैं।" मौलाना ने नफ़रत से मुँह बनाया।

"मुसलमान जब ही तो हर जगह ज़लील और खवार हो रहे हैं।"

"अच्छा," रईस मियाँ ने बिसात की तरफ़ से अपना ध्यान हटाकर मौलाना की तरफ़ देखा।

"फरमाइए, मैं आपकी क्या खिदमत कर सकता हूँ।"

"अब की है तुमने काम की बात, रईस मियाँ," मौलाना खुश हो गए।

"यह है मुसलमान की शान कि सब दिलबहलाव छोड़कर दीन की खबर पहले ले।"

"फरमाइए।"

"इस साल मैंने फ़ैसला किया है कि आपकी तरफ़ से कम से कम दो हाजी हज बयत अल्लाह के लिए जाने चाहिएँ।"

"अच्छा।"

"जी हाँ," वह बोले, "हज आप पर कर्ज़ है। अगर आप खुद न जा सकते हों तो अपनी तरफ़ से ही किसी को भेजकर यह सवाब हासिल कीजिए।"

"मगर मैं ख़ुद क्यों नहीं जा सकता।" रईस मियाँ बोले, "क्या मैं बूढ़ा हूँ, कमज़ोर हूँ ? जो सफ़र की मुसीबतें बर्दाश्त नहीं कर सकता। और न मैं लूला, लंगड़ा हूँ कि मुझे दुशवारी हो। मैं इस साल हज को जा रहा हूँ। मैं और मेरी बेगम दोनों जा रहे हैं। और अपने साथ तीन आदमियों को और ले जा रहा हूँ।"

यह सुनकर मौलाना का मुँह फ़क हो गया। और वह थूक निगलने लगे। फिर कुछ सोचकर बोले, "मगर किसी और को भेजकर हज का सवाब लेने में अधिक मज़ा है।"

"मगर यह किस शरह में लिखा है ?"

"फिर भी," लानामौ बिल्कुल निरुत्तर हो गये और मसकीनों जैसी सूरत बना कर बोले।

"आपको सिर्फ़ मेरी खातिर इस साल दो आदमियों को हज के लिए अपने खर्च पर भिजवाना ही होगा। मैं आपके नाम पर उन दो आदमियों से वायदा कर चुका हूँ।"

"कौन हैं वह दो आदमी "

"हैं।"

"फिर भी।"

"यह जानकर आप क्या करेंगे," मौलाना बोले, "आपको आम खाने से मतलब है या पेड़ गिनने से।"

"मगर आम खाने के साथ-ही-साथ पेड़ भी गिन लिये जाएँ तो इसमें हर्ज ही कौन सा है।"

और अब मौलाना बिल्कुल ही सिटपिटा गए। बड़ी कोशिश के बाद दाढ़ी मुबारक पर हाथ फेरते हुए मरी हुई आवाज़ में बोले,

"अच्छा आप दो न सही। एक ही को अपने खर्च पर भिजवा दीजिये।"

"मैं दो को भिजवा दूँगा," रईस मियाँ बोले, "पहले सामने तो लाइये, उन दोनों आदमियों को।"

"शरीफ़ लोग हैं बेचारे," मौलाना को एक बड़ा अच्छा दाँव हाथ लगा। "वह इस तरह अपनी बात निकालना पसन्द न करेंगे।"

"अच्छा।"

"जी हाँ···" मौलाना ने शिकार को जाल में फाँसते देखकर डोरी मज़बूत पकड़ ली।

"आप तो बस भलाई कीजिये। किसी की सूरत देखकर और नाम जान कर क्या करेंगे आप? वह ग़रीब मुसलमान हैं। हज शरीफ़ के लिये बेकरार हो रहे हैं। मैंने उनका यह शौक देखा तो आपकी तरफ से वायदा कर लिया।"

"अच्छा," रईस मियाँ बोले, "एक हाजी का खर्च मुझसे ले लीजिये। कितने लगेंगे?"

"यही कोई ढाई हज़ार।"

"कल इसी समय आकर ले जाइएगा।"

"आप इसी समय दे दीजिए ना," वह नम्रता से बोले, "नेक काम में देर कैसी। और फिर नेकी का काम तो इसी वक्त कर देना चाहिए। मैं आज ही शाम की गाड़ी से कानपुर जा रहा हूँ। वह वहीं के रहने वाले हैं बेचारे। देता आऊँगा।"

"शरफ़ अलदीन," रईस मियाँ ने आवाज़ दी। "हो गया काम।" उन्होंने शरफ़ अलदीन को देखते ही प्रश्न किया।

"जी, सरकार।"

"मौलाना को ढाई हज़ार दे दो। यह हमारी तरफ से एक आदमी को हज के लिए भेज रहे हैं।"



मौलाना कानपुर के एक बहुत बड़े सेठ के बुकी की खुशामद कर रहे थे, "मेरी दाढ़ी की लाज रखो यार घनश्याम," वह आर्द्रता से

बोले, "मैं तुम्हारा कितना पुराना हूँ। दस वर्ष हो गए कि मैं हफ़्ते में दो दिन के लिए पाबन्दी से कानपुर आता हूँ और तुम्हारे ही पास खेलता हूँ। यह इत्तफ़ाक है कि दो हफ़्ते तक अपना एक नम्बर भी नहीं लगा। हर आँकड़ा अपना कम्बख्त फेल हुआ है। और जब भी तुम्हारे चार हज़ार चढ़ गये। यह ढाई हज़ार भी बड़ी मुश्किल से लाया हूँ। कई अपने खेत महाजन के पास गिरवी किये हैं। जब कहीं जाकर इन अढ़ाई हज़ार रुपयों की सूरत दिखाई दी है। यह अढ़ाई हज़ार ले लो। पाँच सौ का मैं एक आँकड़ा ओपन में खेल रहा हूँ। और सिर्फ़ सौ की एक डबल लगा दूँगा। कुल मिलाकर तुम्हारे इक्कीस सौ रुपया हो जायेंगे। अगर आँकड़ा न लगा तो अगले ही हफ़्ते पाई-पाई चुका दूँगा और फिर आगे खेलूँगा।"

"मगर यार।"

उन्होंने घनश्याम बुकी को बोलने ही न दिया।

"यार, तुम मेरी इतनी सी बात भी नहीं मानते। अगर मैं बेईमान होता तो तुम्हारे पास यह अढ़ाई हज़ार भी लेकर क्यों आता। मैं सीधा किसी और बुकी के पास न चला जाता। और वहाँ खेल देता। मुझे खुदा का खौफ है यार घनश्याम और रसूल का खौफ है मेरे दिल में। और मैं इसीलिए किसी को धोखा नहीं देता।"

"अच्छा," घनश्याम बुकी बल खाकर बोला, "बोलो क्या आँकड़ा लगाते हो ?" और फिर वह मौलाना का आँकड़ा सुनने से पहले ही बोला, "मगर देखो अगले हफ़्ते तुमने मेरे इक्कीस सौ न चुकाए तो अच्छा न होगा।"

"नहीं प्यारे," मौलाना ने उसकी ठोडी को हाथ लगाया।

"मैंने आज तक खुदा की कसम से झूठ बात नहीं की।"

"अच्छा," घनश्याम बोला, "आँकड़ा बोलो।"

"ओपन में पाँच सौ रुपया छीका खेल दो। और अट्ठे से सेत की डबल लिख लो।"

"मगर ओपन में छीके का भाव कम है।"

"हो", मौलाना को जैसे घनश्याम ने गोली मार दी। उनका दम

निकल गया और वह मरी हुई आवाज़ से बोले, "क्या भाव है ओपन में छीके का।"

"छह: का भाव, छह: का मिलेगा।"

"यार एकदम से आठ से छह: का भाव," मौलाना बड़बड़ाए।

"इस्तगफ़ार अल्लाह।"

"देखो यार खेलना हो तो खेलो। नहीं तो मेरा दिमाग खराब न करो। धंधे का टाइम है।"

"अच्छा भाई," मौलाना का जैसे कि हार्टफेल हो गया। "छ: का भी भाव सही। पाँच सौ छीका लिख लो।"

"हो गया जाओ," घनश्याम बुकी बोला। और मौलाना अपना अंगोछा अपने कंधे पर सम्भालते हुए वहाँ से चले। रास्ते भर बड़बड़ाते चले जा रहे थे।

"बड़ा कमीना है। यह घनश्याम का बच्चा। सूअर कहीं का काफ़िर। सच है काफ़िरों से लेन देन हराम है। माशा अल्लाह कितना सच्चा और सही धर्म है हमारा," वह बड़बड़ाए, "इस्तगफ़ार अल्लाह। अब कभी इस घनश्याम के पास दाव न लगाऊँगा। क्या कानपुर के और बुकी मर गए हैं।"

और फिर वह जाते-जाते एक दम रुक गए।

"क्यों न छीके का भाव उस्ताद रसूल खां से पूछता चलूं।"

उनके दिल में विचार आया और वह फ़ौरन एक गली की तरफ मुड़ गए। सामने एक बड़े से चबूतरे पर उस्ताद रसूल खां पहलवान एक मोढे पर बैठा हुआ था।

"असलामालेकम।"

उन्होंने जाते ही बड़ी इज्ज़त के साथ असलामालेकुम का नारा लगाया।

"वाहलेकम सलाम," वह बोला, "फरमाइए मौलाना।" उसके होठों पर मुस्कराहट थी।

"यह बिना दो दोस्त के ओपन में छीके का क्या भाव दोगे ?"

"कितना लगाना है ?"

"पहले भाव बताओ ।"

"पाँच का भाव मिलेगा ।"

और उन्हें जैसे बड़े ज़ोर की तसल्ली हो गई । "लाहौल बिला कौवत," वह बड़बड़ाए और फौरन उस्ताद रसूल खां के चबूतरे से नीचे कूद पड़े । वह बुदबुदा रहे थे । "जब ही तो मुसलमानों की हालत खराब है । वेईमान जमाने भर के । जब ही तो खुदा का कहर है बदबख्तों पर । ईमानदारी तो जैसे उठ ही गई है इनसे ! वेईमान ।"

उन्होंने सड़क पर ज़ोर से थूका । और अब वह बड़ी तेज़ी के साथ मस्जिद की तरफ अपने क़दम बढ़ा रहे थे । मगरब की नमाज़ का समय पास आ गया था ।

2.

रईस मियाँ की हालत इन लम्बे चौड़े शाही खर्चों की वजह से अब दिन प्रतिदिन गिर रही थी और वह अपनी इस आन और अपनी इस राव रखाव को संभालने और उसे इसी ठाठ बाट के साथ जारी रखने की धुन में रोज़ ब रोज़ ऋणी होते जा रहे थे । मेहमानों का सिलसिला इसी तरह जारी था । और मेहमानखाने का खर्च उसी तरह था । और नित नए अन्दाज़ में मांगने वालों की भी कोई कमी नहीं थी । रोज़ कुछ न कुछ उन लोगों को देना ही पड़ता था ।

उनका सबसे बड़ा लड़का सरफराज बाप के कभी निरीक्षण न रखने और माँ की जरूरत से ज्यादा लाड़ प्यार की वजह से बिगड़ गया था । और वह दिन रात बिगड़ता ही जा रहा था । वह कस्बे के हाई स्कूल में नवीं जमायत में पढ़ता था । और वह नवीं जमायत में चार साल लगातार फेल हो चुका था । और अभी तक उसकी हालत वही थी ।

उसकी उम्र अभी सोलह साल की थी । और अभी से उसे इश्क और मुहब्बत का चस्का पड़ चुका था । कस्बे के इन्ताह से अधिक घटिया और गिरे हुए लड़के उसके दोस्त थे । सरफराज इन लोगों की संगत में छुप-छुप कर सिगरेट बीड़ी और यहाँ तक कि चरस और गाँजा तक पीना सीख गया था ।

वह कस्बे की लड़कियों को भी ताकने-झाँकने लगा था । और कस्बे के पत्तरे वाले घटिया किस्म के सारे सिनेमा हाउस में वह घटिया किस्म की सारी फिल्में देख-देख कर गंदे और भद्दे किस्म के गाने सीख गया था । और भारतीय हीरो तथा हीरोइनों को फिल्म के चित्रपट पर इश्क करते देखकर उसने भी इसी प्रकार के इश्क और मुहब्बत की रिहर्सल की कोशिश शुरू कर दी थी ।

वह आवारा और बदमाश लड़कों के साथ जुआ खेलना भी सीख गया था । और इसलिए उसका खर्च बहुत बढ़ गया था । और हर अगले दिन उसकी मां से उसके खर्च के बारे में उसका झगड़ा होता रहता था ।

गर्ज़ यह कि रईस मियाँ के घर और उनकी जिन्दगी में अब एक किस्म का अन्तर शुरू हो चुका था । शाँतमय और एक सतह पानी पर हल्की-हल्की लहरें उभरने लगी थीं और छोटे-मोटे दायरे बनने शुरू हो गये थे ।

एक दिन सरफराज सुबह ही सुबह अपनी माँ से झगड़ने लगा ।

"मैं नहीं जानता अभी मुझे कहीं से भी करके दो सौ रुपया दीजिए ।......"

"दो सौ रुपया," उसकी माँ हैरान होकर बोली ।

"तुम यह दो सौ रुपये लेकर क्या करोगे ?"

"आप तो ज़रा-ज़रा सी बात पर टोकना शुरू कर देती हैं ।" वह झुँझला कर बोला ।

"अब यह भी हिसाब बताओ कि दो सौ का करोगे क्या ।"

"मगर बेटे," वह बड़े प्यार से बोली, "लड़कों को इतने रुपये देने से बुरा होता है ।"

"क्या बुरा होता है," वह चीखा, "अब्बाजान को आप नहीं देखतीं कि वह कैसा लुटा रहे हैं ।......"

"खबरदार," उसकी मां ने उसे डाँटा, "अगर फिर कभी तुमने ऐसी गुस्ताखी की बात कही तो तुम्हारी जुबान तलुवे से पकड़ कर खींच लूँगी ।"

सच बात कितनी जल्दी बुरी लग गई। वह बदतमीज़ी से मुस्कराया। उसकी मुस्कराहट में बदतमीज़ी और गुस्ताखी दोनों शामिल थे।

"बाप ने तो लाखों लुटा दिये और बेटा सौ सौ के लिए भी मुहताज हो, कितनी अजीब बात है यह भी।......"

"बदतमीज़," उसकी माँ ने उसके गाल पर एक ज़ोर का तमाचा मारा।

"फिर वही मुर्गी की एक टाँग। जा अब तो मैं तुझे एक धेला भी न दूँगी।" वह बड़बड़ाने लगी। "हैं! हैं ग़ज़ब खुदा का। कहाँ का बच्चा अभी मुँह से दूध की बू तक नहीं गई और पड़ापड़ ज़बान चलाने लगा है," और उनकी आंखें सजल हो गईं। "सच है ज़माना बुरा लगा है जो न हो जाए वह थोड़ा है।......"

"अच्छा अब आप एक्टिंग तो न करिए।" सरफ़राज ने बदतमीज़ी की हद कर दी, "मुझे दो सौ रुपये दीजिए, स्कूल को देर हो रही है।"

"दो सौ तो मैं तुम्हें दो वर्ष तक न दूँगी सरफ़राज," वह बुरा सा मुँह बनाकर बोलीं, "मेरे इसी लाड़ प्यार और ढील ने तुम्हें इस दर्जे तक पहुँचाया है। और अब मेरी आँखें खुलती जा रही हैं...कि ज़िम्मेदार केवल माँ होती है। और मैंने ही ढील दे इस नौबत तक इस लड़के को पहुँचाया है।......"

"अब तो आपके कहने के मुताबिक मैं इस नौबत तक पहुँच ही चुका हूँ," सरफ़राज ने किसी भी बात से प्रभावित हुए बिना कहा, "मुझे दो सौ रुपये दे दीजिये, स्कूल को देर हो रही है।......"

"बड़ी अजीब मिट्टी के बने हो तुम सरफ़राज" उसकी माँ सचमुच अपनी जान से तंग आ गई थी। "तुमने आखिर अपने दिल में सोच क्या रखा है।"

"दो सौ रुपये लेने की सोच रहा हूँ मैं। मुझे भी सख्त ज़रूरत है।"

"यह अभी से तुम्हें इतने-इतने रुपयों की ज़रूरत क्यों पड़ने लगती है?"

"यह भी तो सोचिये अम्मी मैं कितने बड़े बाप का बेटा हूँ। स्कूल में एक पार्टी है। और उस पार्टी का सारा खर्च मैंने अपने ज़िम्मे

लिया है ।......"

"तुम सच कह रहे हो, सरफ़राज" उसकी मां बोली, "यह दो र तुम किसी गलत जगह तो खर्च नहीं करोगे ?"

"कमाल करती हैं आप अम्मी" सरफ़राज बोला, "क्या आपकी नज़रों में मैं इतना बुरा लड़का हूँ। आपके सिर की कसम, मैं सच कह रहा हूँ। स्कूल की पार्टी के लिए मुझे दो सौ की जरूरत है ।"

उसकी माँ उठते हुए बोली, "मगर देखो, अच्छे बेटे बनने की कोशिश करो, मेरे लाल । सोचो तो ज़रा कि तुम किसके बेटे हो। क़ितना बड़ा खानदान है तुम्हारा। बाप दादा के नाम और उनकी इज्ज़त का ख्याल करो।......"

इसके साथ ही उसे दो सौ रुपये मिल गये; जिन्हें लेकर वह अपने लंगोटिये यार के साथ 'पार्टी' मनाने कानपुर पहुँच गया ।

सस्ता ज़माना था और दो सौ के नोट । सितारा बाई तो सितारा बाई, मूलगंज कानपुर की सारी तवायफें इस दो सौ के आगे नंगी होकर नाचने लगतीं । वह तो अकेली सिताराबाई थी ।

सितारावाई नाच रही थी और यह दो मतवाले सरफ़राज और जीवन उसके मुजरे पर सिर धुन रहे थे ।

"वाह सितारा बाई मार डाला," जीवन ने आगे बढ़कर सितारा बाई की बलाएँ ले लीं। और उसके ऊपर से पाँच रुपये का एक नोट उसने निछावर करके फ़र्श पर बैठे हुए साजिन्दों के ऊपर फेंक दिया । और फिर वह मसनद पर आकर बैठ गया । उसने चुपके से सरफ़राज के कान में कहा"।

"यार ! कुछ तुम भी तो कदम उठाओ । नाक कट रही है ।"

"दो सौ तो पेशगी दे चुका हूँ। अब पेशकदमी क्या खाक का है ।"

"अरे वह तो हमने इस समय दिन के मुजरे [की] फीस दी है ।" जीवन बोला ।

"यह दस्तूर है कि मुजरे के बीच में भी कुछ न कुछ देते रहते हैं ।"

"अच्छा ।"

"हां यार, नहीं तो क्या ? तुम तो अव्वल नम्बर के बुद्धू और

गये हो।"

"तो तुमने पहले से क्यों नहीं बताया। मैं पच्चीस और अधिक लेता आता। अपनी जेब में तो सिर्फ वापिसी के रुपये हैं।"

"खैर कोई बात नहीं।" जीवन बोला, "तुम अपनी यह घड़ी मेरे पास बेच दो। दोस्ती के नाते मैं इसके बीस रुपये दे दूँगा। तुम्हारी नाक यहाँ नहीं कटनी चाहिए। यह बुरी बात है।"

"मगर यार तुम अच्छे दोस्त हो मेरे," सरफ़राज बोला।... "इतनी कीमती घड़ी लेकर तुम मुझे सिर्फ़ बीस रुपये दोगे। तुम क्या बीस रुपए उधार नहीं दे सकते। घर चल कर दे दूँगा।"

"यार देखो," जीवन बोला, "मैंने बुजुर्गों से सुना है कि कर्ज़ मुहब्बत की कैंची है। अर्थात् मुहब्बत और दोस्ती की कैंची। इसलिए मैं तुम्हें कर्ज़ न दूँगा। हमारी दोस्ती के बीच यह कर्ज़ की कैंची की रुकावट न डालनी चाहिए।"

"मगर यार इतनी कीमती घड़ी के सिर्फ़ बीस रुपए," सरफ़राज बोला।

"यह दो सौ की घड़ी है।"

"यार बड़े अजीब दोस्त हो तुम मेरे। दोस्तों के साथ सौदेबाज़ी करते हो। दोस्ती का व्यापार न हुआ, भाजी वाले की दुकान हो गई और फिर दो सौ में से मैंने एक सिफ़र ही को तो काटा है। और तुम जानते ही हो कि सिफ़र की कीमत कुछ नहीं होती।"

"अच्छा तो लाओ बीस रुपये।"

और जीवन ने सरफ़राज के हाथ में चुपके से पाँच-पाँच के चार नोट थमा दिए और सरफ़राज ने घड़ी खोलने के लिए अपने दाएँ हाथ की अंगुलियों को हरकत दी।

"कैसे पागल हो यार," उसने सरफ़राज का हाथ चुपके से पकड़ लिया।

"यह घड़ी उतार कर देने की क्या ज़रूरत है। फिर ले लूँगा। आखिर को तुम मेरे जिगरी यार हो।"

और उसने सरफ़राज का हाथ दबा दिया। सितारा बाई लहक-

लहक कर और कूल्हे मटका-मटका कर गा रही थी।

"अंधेरिया है रात, सजन ! रहियो कि जइयो।"

"अंधेरिया है रात," सरफ़राज झूमने लगा। और उसने आगे बढ़ कर सितारा बाई की बलायें ले लीं।

"कहो तो कयामत तक हम यहीं पड़े रहें मेरी जान..."

और उसने पाँच-पाँच के दो नोट उसके ऊपर से निछावर करके फेंक दिए।

सितारा बाई ने सरफ़राज के होठ मसल दिए।

"ज़ालिम..." वह मुस्कराई "...मार डालो।" और फिर वह एक बड़ा सा चक्कर लेकर गला फाड़ने लगी। "लहंगा फटी है, हो लहँगा फटी है। साड़ी लाइए। कमर लचकदार सजन रहियो कि जइयो। अंधेरिया है रात सजन रहियो कि जाइयो।"

वह नाच रही थी और गा रही थी। और सरफ़राज और जीवन उस पर दीवानों की भाँति निसार हुए जा रहे थे। आखिर वह थक कर गाव तकिए पर गिर पड़ी और उसने सरफ़राज की गोद में अपना सिर रख दिया।

'सुना है बड़े जागीरदार के बेटे हो," वह आँख नचाकर बड़ी अदा के साथ ठुमकने वाली अंदाज़ में बोली, "मुजरा सुनने खाली हाथ चले आए। न कोई हार, न चम्पाकली, न कंगन और न अंगूठी। सोचो तो सही। चढ़ती जवानी के लिए जब तुम्हारे पास कुछ नहीं है तो जब हम तुम पर मरने लगेंगे तो तुम हमें सूखे चने ही चबवा कर छोड़ोगे।"

सितारा बाई की इस अदा पर सरफ़राज का दिमाग आकाश पर उड़ने लगा। और उसे ऐसा अनुभव हुआ जैसे कि उसका दिल उसके पहलू में लोटने पर कबूतर बनकर तड़प रहा हो। उसके सारे शरीर में खून की गति तेज़ हो गई। उसकी कनपटियाँ गर्म हो गईं और उसे अंगड़ाइयों पर अंगड़ाइयाँ आने लगीं। उसे अपने शरीर में सुईयाँ सी चुभती हुई मालूम हुईं। और उसका गला बिल्कुल ही खुश्क हो गया।

उधर उसकी हालत का अनुमान लगाते हुए सितारा बाई की जवानी और अधिक फैल गई और उसने ना तजुरबेकार और कम उम्र

सरफ़राज के गले में अपनी दोनों बाहें डाल दीं। और उसे इतनी ज़ोर से भींचा कि उसका सीना सितारा बाई के सीने से घुस हो गया। और सरफ़राज पर मानो बिजली गिर पड़ी। उसकी हालत बुरी हो गई। और वह तेज़-तेज़ साँसों के बीच बोला।

"खुदा के लिए सितारा छोड़ दो मुझे। नहीं तो मेरा हार्ट फेल हो जाएगा।" उसका सारा शरीर पसीने में डूब गया था। वह एक बारगी ज़ोर से तड़पा और सितारा बाई ने उसके होंठ चूम लिए। और वह पागल हो गया। और सितारा उसे तड़पा कर और मुर्ग़ बिस्मिल बन कर एक बारगी उससे अलहदा हो गई। उसका काम हो चुका था। सरफ़राज को उसने एक ऐसे रोग से परिचित करा दिया था जिसका उसे अभी ज्ञान न था। उसका जादू चल चुका था। और सरफ़राज इस जादू के असर से उल्टी-उल्टी साँसें ले रहा था।

"सितारा बाई," वह फूली-फूली साँसों के बीच बोला। "अब कि जब मैं आऊँगा तो तुम्हारे लिए सब लेकर आऊँगा।"

"कब आओगे," सितारा ने आँखें मटकाईं। और गर्दन को इस अंदाज़ में झटका दिया कि उससे सरफ़राज की रही सही शहरग भी कट गई। और वह बिल्कुल ही खत्म हो गया।

"जब तुम बुलाओगी। मैं सिर के बल आ जाऊँगा।"

"लो और सुनो।" सितारा बाई ने अपनी सारी अदायें खत्म कर दीं। "जान लेकर पूछ रहे हैं कि अर्थी में शरीक होने कब आऊँ।"

"मैं कल ही आऊँगा।" वह एक बारगी घूरकर बोला, "रोज़ आया करूँगा।"

सितारा बाई ने अपनी माता जी की तरफ ध्यान से देखा।

"गवाह रहना माता जी। यह रोज़ आने का वायदा करके जा रहे हैं।" और अधेड़ उम्र वाली जमानासाज़ रामकली मुस्कराई।

"आ जाएँ तो समझना बेटी। यह आजकल के नौजवान हैं। कोई हमारा जमाना थोड़े ही है कि जुबान दी तो ऐसी दी कि सारी जिंदगी एक ही के होकर रह गए। लाखों लुटा दिए। और माथे पर शिकन तक न पड़ी। दिल पर दाक ज़रा सा मैल भी न आया। और सारी

जिंदगी एक ही के होकर रह गए।" वह व्यंगात्मक ढंग से मुस्कराई। "यह तो आजकल के नए-नए भंवरे हैं बेटी। कभी इस कली पर और कभी उस कली पर। कभी इस बगीचे का मुँह चूम रहे हैं, तो कभी उस फूल के कलेजे में जाकर घुस रहे हैं। इसका क्या भरोसा ?"

"नहीं मांजी," सरफ़राज ने बड़े गर्व के साथ तवायफ को पवित्र शब्द माँ से सम्बोधित किया।

"मैं जो कह रहा हूँ वही होगा।"

"जब देखूँगी बेटे तो कहूँगी," रामकली बोली, "तुम तो मेरी हँसती-खेलती बच्ची पर जीता-जागता जादू करके जा रहे हो।" और रामकली के मुँह से यह शब्द सुनकर सरफ़राज का सीना मारे गर्व के फूल गया। और वह खुशी से झूमकर बोला।

"कल अगर न आऊँ मांजी तो मुझ पर मेरी माँ का दूध हराम।" सरफ़राज ने बड़ी अच्छी जगह माँ का दूध हलाल किया। और जीवन बोला, "अच्छा अब चलोगे भी कि नहीं।"

"चलो," वह मरी हुई आवाज में बोला। और सितारा बाई ने अपनी रोती हुई आँखों से एक बार सरफ़राज की ओर देखा। और फिर वह अपनी गर्दन जोर से झटककर भागती हुई गई और सरफ़राज को दिखाने के लिए गद्दे पर गिरकर गाव तकिए में मुँह छुपाकर सिसकने लगी।

सरफ़राज जीना उतर रहा था और जीवन रामकली से कह रहा था, "मेरा कमीशन।"

"यह लो," रामकली ने पचास रुपए बढ़ा दिए।

"सोने की चिड़िया फांस कर लाया हूँ। सोने की चिड़िया। सोने के अंडे देने वाली मुर्गी है।"

"जब अंडे देगी तो देखा जायगा।" सितारा एक बार ही उसी जगह से गर्दन उठाकर बोली, "सोने का अंडा मिलेगा तो तुम भी चाँदी बटोरोगे।" और फिर जीवन भी मुस्कराता हुआ सितारा बाई के कोठे की सीढ़ियाँ उतरने लगा।



शरफ़ अलदीन भूँगीलाल की पटड़ी से नीचे उतर रहा था। वह इस समय चिन्तित था। उदास था और परेशान था। और उसके चेहरे पर व्यथा के चिन्ह स्पष्ट प्रगट हो रहे थे।

वह बड़ी मरी हुई चाल से रास्ता तय कर रहा था। उसका एक-एक कदम जैसे कि सौ-सौ मन का हो गया हो। वह किसी-न-किसी तरह खिन्न चित्त रईस मियाँ के सामने जाकर खड़ा ही हो गया।

"क्या बात है।" रईस मियाँ ने बड़े चिन्ताजनक स्वर में पूछा। "भूँगीलाल ने दिए पन्द्रह हज़ार ?"

और उत्तर में शरफ़ अलदीन ने एक बार नज़र ऊपर उठाई और फिर उसकी नज़रें नीची हो गईं। वह चुपचाप रईस मियाँ के सामने नज़रें झुकाए खड़ा था।

"भूँगीलाल ने पन्द्रह हज़ार देने से इन्कार कर दिया ?"

"जी नहीं," वह रुक-रुक कर बोला, "इन्कार तो नहीं किया उसने अलबत्ता···" फिर शरफ़ अलदीन रुक गया।

रईस मियाँ बोले, "वह इतने बहुत से रुपयों की जमानत चाहता है।"

"जी हाँ," वह बोला, "वह कहता है कि रकम अब लाख से ऊपर हो गई है ?"

"कोई बात नहीं," रईस मियाँ बड़े ठहरे हुए अन्दाज़ में बोले, "उसे बुलाकर ले आना। मैं इस्टेम्प लिखे देता हूँ।"

और फिर शरफ़ अलदीन दबी ज़ुबान से बोला।

"मेरा मतलब है सरकार कुछ खर्च।"

और रईस मियाँ ने अपने नमक हलाल और हमदर्द कारिन्दे की बात काटी "कोई बात नहीं शरफ़ अलदीन। हर आदमी अपनी किस्मत का खाता है और ले जाता है। फिर मैं अपने बाप दादा की आन और उनकी शान पर बट्टा क्यों लगने दूँ! बहुतों का भला मेरी जात से होता है। बहुत बड़ी इज्जत और शान ख़ुदा ने मुझे दे रखी है। उस पर अब आखिरी वक्त में आँच न आनी चाहिए शरफ़ अलदीन। लोगों

को सुनने का मौका क्यों मिले। और दुश्मन यह सब हैं। दुश्मन हँसेंगे तो मैं बिना मौत मर जाऊँगा। और फिर शरफ़ अलदीन तुम ही बताओ कि मैं अपने इस बढ़े हुए हाथ को कैसे समेटूँ। जमाना क्या कहेगा। हँसेगा मेरे ऊपर कि पहले मेहमानखाना आबाद था और अब यहाँ पर लँगोटी बंध गई है। और मेहमानखाने में उल्लू बोलने लगे हैं। अबाबिलें आकर बस गई हैं।" वह बड़ी शान्ति से बोले, "इस कारोबार को इसी तरह चलने दो शरफ़ अलदीन। मेरे बाद क्या होगा। यह खुदा को मालूम और फिर मैं अपने बाद की बात सोचूँ भी क्यों। बच्चे मेरी किस्मत का तो खाते नहीं हैं। सब की अपनी-अपनी तकदीर है। और उनका मुकद्दर उनके साथ है। और फिर सब कुछ अल्लाह देखने वाला है। तुम तो जानते ही हो शरफ़ अलदीन कि मैंने आज तक रुपया किसी बुरी जगह या बुरे काम में नहीं लगाया। न मैंने रईसों की तरह मुजरे सुने हैं। और न मैं मुजरे सुनता हूँ। न मैं रंडियां नचवाता हूँ और न मैंने किसी कोठे वाली को नौकर रख छोड़ा है। और फिर क्या मालूम शरफ़ अलदीन कि यह सब किस की तकदीर और किसकी किस्मत से आता है। बस मेरा ज़मीर मुझ से सहमत है। यही बहुत है मेरे लिए।" वह शरफ़ अलदीन को समझाने के तौर पर बोले।

"और फिर मैं आमदनी के और दूसरे ज़रिए सोच रहा हूँ। बहुत बड़े पैमाने पर मैं बागों की तरफ ध्यान देना चाहता हूँ। कम से कम दो अढ़ाई सौ बाग लगाऊँगा। लाखों रुपए साल की आमदनी होगी। और खुदा ने चाहा तो वह खर्च इसी तरह चलता रहेगा।"

फिर शरफ़ अलदीन भूँगीलाल को बुलाने चला गया और थोड़ी देर के बाद ही भूँगीलाल अपना खाता बगल में दबाए और हाथ जोड़े रईस मियाँ की खिदमत में हाज़िर हुआ। वह आते ही अपनी आदत के अनुसार पृथ्वी पर झुक गया। और फिर वह हकलाते हुए बोला, "सरकार! गुलाम आप से माफी चाहता है सरकार। वह बात दरअसल..."

रईस मियाँ ने भूँगीलाल की बात काटी, "तकल्लुफ छोड़ो भूँगीलाल, मामला लाखों का है। और बात भी ठीक है मैं तुम्हें इस्टेम्प पर लिख

दूंगा। तुम मेरी जागीर पर अधिक नहीं सिर्फ डेढ़ लाख दे दो।"

और यह सुनकर भूँगीलाल उछल पड़ा, "इतनी बड़ी रकम मेरे पास कहां सरकार। वह तो मैं आप जैसे रईस के दिये हुए सूद पर अपना धंधा जैसे-तैसे करके चला रहा हूँ। मालिक बस इतना है कि आपकी दुआ से अपनी साख बनी हुई सरकार···"

"अच्छा खैर, बनो मत," रईस मियाँ बोले, "डेढ़ लाख अभी जाकर भिजवा दो, मुझे ज़रूरत है। बार-बार दस हजार, पन्द्रह हजार लेने से यह ज्यादा बेहतर है कि मैं एक मुश्त डेढ़ लाख और ले लूं। और फिर मेरा काम चल जाएगा," कुछ देर रुक कर पुनः रईस मियाँ बोले,"··· मैंने बागों की स्कीम बनाई है भूँगीलाल," वह मुस्कराए"···क्या पता वह बाग तुम्हारे काम ही आ जायें।"

"राम ! राम ! राम ! सरकार !" भूँगीलाल हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। फिर बैठा और खड़ा हो गया। और उसी तरह हाथ जोड़े-जोड़े बोला, "सरकार ! दो सौ जूते मार लीजिए। मगर ऐसे बोल न बोलिए। ईश्वर आपके बच्चों को जीता और सलामत रखे मालिक। आपकी चीज़ आपके काम आये। मैं आपकी चीज़ पर अगर आँख लगाऊं तो ईश्वर मेरा सत्यानाश कर दे। वह तो सूद मिलता जाए अपने लिए यही बहुत है।"

"अच्छा। अच्छा।" रईस मियाँ बोले, "डेढ़ लाख भिजवा दो मैं स्टेम्प तैयार रखता हूँ।"

"स्टेम्प विस्टेम्प की क्या ज़रूरत है मालिक।" भूँगीलाल भिखारियों जैसी सूरत बनाकर बोला, "·········आप तो सरकार सिर्फ इसी जगह इस खाते पर दस्तखत फरमा दीजिएगा·········।"

"तो लाओ अभी करूं दस्तखत।"

और यह सुनकर भूँगीलाल का चेहरा मारे खुशी के चमकने लगा। और उसने खाते का वह सफ़ा जो कि बिल्कुल सादा था आगे कर बड़े अदब से रईस मियाँ के सामने बढ़ा लिया।

"यह लीजिए सरकार ! आपकी खुशी। मुझे भला कब इन्कार है। मैं तो गुलामों का गुलाम हूँ आपकी सरकार।"

और जब रईस मियाँ दस्तखत कर चुके तो वह बोला।

"बुरा न मानिएगा सरकार। यह सिर्फ इसलिए हैं कि याददाश्त बनी रहे वरना आपसे क्या है मालिक।" और फिर वह खाता बंद करते हुए बोला, "तो कुल मिलाकर पौने तीन लाख हो गए सरकार।"

"हो गए !"

"मैं शरफ अलदीन भैया के साथ अभी रुपया भिजवाए देता हूँ।" वह रईस मियाँ के सामने लगभग पृथ्वी को चूमने लगा, "मैं आपका दास हूँ सरकार। आपके इशारे पर रुपये की बरसात कर दूँगा।"



"मैं तुम्हारे एक इशारे पर रुपयों की झड़ी लगा दूँगा, सितारा प्यारी", सरफराज सितारा की ज़ुल्फें चूम कर बोला, "इन घटाओं के आगे क्या चीज़ मुमकिन नहीं है।"

"झूठे जमाने भरके........" सितारा एक अंगड़ाई लेकर बोली, "......वह बिन्दरावन चौधरी के यहाँ से मेरा पसंद किया हुआ हार अब तक आ रहा है ना।"

"अरे ! आ जाएगा मेरी जान", सरफराज उसके गाल पर एक प्यार की चपत लगाकर बोला।

"अमीजान के सेफ की चाबी तो मेरे कब्ज़े में आ गई है। अब फिक्र काहे की। बस जरा यह ख्याल है कि अगर एकदम से हाथ की सफाई जरा लम्बी-लम्बी शुरू कर दूँगा तो वह अपनी रकम गिनने बैठ जायेंगे। शक हो जाएगा उन्हें। हजार-हजार पाँच-पाँच सौ निकालने में तो उन्हें पता नहीं चलता। अगर एकदम से पन्द्रह बीस हजार साफ कर दूँगा तो उन्हें शक हो जाएगा। वह हार अठारह हजार का है। ज़रा और सब्र करो। मैं तिकड़म लगा रहा हूँ......" और फिर वह मुस्कराया, "और फिर जरा बाप को तो मरने दो। अगर सारी जागीर तुम्हारे कदमों में न डाल दूँ तो चमार की औलाद कह देना।"

"अच्छा", सितारा की बाछें खिल गईं। और वह सरफराज की गोद में गिर कर अंगड़ाइयां लेने लगी।

"भला कितनी रकम की तुम्हारी जागीर है।"

"यह मत पूछो मेरी जान", सरफराज ने उसे सीने से भींच लिया।

"इतनी बड़ी जागीर है मेरी कि मैं उसके रुपये से तुम्हारे लिए कानपुर से इलाहाबाद तक रुपये की सड़क बनवा सकता हूँ।"

"तो फिर........." सितारा एक बार ही बेकरार होकर उसकी गोद से उठ बैठी।

"तुम अपने बाप को मार डालो प्यारे", वह ठुनक कर बोली।

"इस बूढ़े खूसट के मरने के इन्तज़ार में तो मैं बूढ़ी हो जाऊँगी।"

"मेरी मुहब्बत तुम्हें कभी बूढ़ा न होने देगी सितारा" सरफराज बोला।

"देखो, मुमताज़ महल को वैसे सैंकड़ों बरस गुज़र गए मगर शाहजहाँ की मुहब्बत ने उसे अब तक जवान और ज़िन्दा रखा है। और मुमताज महल अपने ताजमहल की वजह से कयामत तक ज़िन्दा रहेगी और जवान रहेगी।........."

"अरे ! तुम बातें करते हो" सितारा ने तिरछी नजरों से सरफराज को देखा, बोली, "कहीं इसी तरह समय आने पर तुम मुझे बातों में तो न उड़ा दोगे।"

"तोबाह करो। सितारा तोबाह करो", सरफराज बोला,"...... मेरी यह मजाल भला, मैं और तुम्हें बातों में उड़ा दूँ। होश व हवास न उड़ जायेंगे मेरे।"

"मैं तोबा क्यों करूँ", सितारा शोख़ी से बोली, "...मैं तो हिन्दू हूँ, मैं तो राम-राम करूँगी राम-राम...।"

और इस पर वह दोनों खिलखिला कर हँस पड़े।

❁

भूँगीलाल बड़ी जोर से कहकहा मार कर हँसा।

"तुम हँस रहे हो बाबू", भूँगीलाल का बेटा चूँगीमल बुरा-सा मुँह बनाकर बोला।

"तुम ने एकदम से गाड़ी भर कर रुपया जागीरदार को दे दिया,

मेरा तो दम निकला जा रहा है।"

"बेटा", भूंगीलाल ने अपने बेटे चूँगीमल को समझाया।

"सूद दर सूद मिलाकर एक ही जगह सूद वसूल करूंगा। अब जागीरदार साहब बचकर कहाँ जाते हैं। अपना कर्ज़ा तो मकड़ी का जाला है बेटा। एक दफा जो फंसा तो फंसा। जागीरदार की पूरी जागीर भी यह कर्ज़ा न चुका पायेगी और मैं नकदी, जेवर, हवेली, और बैल बछिया सब कुर्क करा लूँगा।"

"और अगर तुम्हारे से पहले ही यह सब जागीरदार साहब, खुद ही ख़त्म कर बैठे तो।" भूँगीमल ने कौए के बच्चे की-सी स्याही दिखाई।

"तुम क्या करोगे फिर बापू," वह बोला।

"जागीरदार साहब का खर्च तो हमारे बही खाते से भी कहीं ज्यादा होता है।"

और अपने बेटे के मुँह से यह अक्लमंदी की बात सुनकर भूँगीलाल सचमुच कुछ सोचने लगा।



रईस मियाँ की बेगम रज़िया किसी गहरे सोच में बैठी थी कि इतने में उनका छोटा बेटा इकबाल कहीं बाहर से खेलता हुआ आया। और वह आ के अपनी अमी के गले में अपनी बाहें डालकर लिपट गया।

"क्या बात है अमी," वह बड़े लाड़ से बोला, "आप इतनी चुप-चाप क्यों हैं?"

"कुछ नहीं बेटे," वह प्यार से उसके सिर में अपनी अंगुलियों से कंघी करने लगी, "तुम जाओ खेलो। आज तुम्हारी छुट्टी है न।"

"हां अमी" वह बोला, "मगर अब मैं बैठकर पढ़ूँगा। अगर मैं पढ़ूँगा नहीं तो वह राजाराम है न राजाराम। वही जिसके बाप वकील हैं। वह मुझ से आगे निकल जाएगा। मैं हमेशा उससे अव्वल आता हूँ, और वह हमेशा दूसरा करके अव्वल आने की धुन में लगा रहता है। देखिये अमी," इकबाल ने अपनी माँ को रिपोर्ट सुनाई।

"थर्ड में मैं अव्वल आया और वह दूसरा नम्बर। और फिर फोर्थ में साथ-साथ आ गए। फर्स्ट टरमिनल में उसने बड़ी कोशिश की और मुझ से एक नम्बर से अव्वल हो गया। फिर सैकिंड टरमिनल में हम दोनों की लग गई। और सैकिंड टरमिनल में मैं अव्वल हो गया और अब सालाना इम्तहान है। अगर वह अव्वल हो गया तो मेरी नाक कट जाएगी। और हाँ अभी एक लड़का और है ज़फर उल्लाह खान। वह भी बड़ा तेज़ है। वह भी हम दोनों के साथ रेस कर रहा है। हमेशा दो चार नम्बरों से थर्ड रह जाता है। इस दफ़ा वह भी दिन-रात पढ़ रहा है। और अब तो आगे एक से नहीं बल्कि दो-दो से मुकाबला करना है। क्या पता कि ज़फर उल्लाह हम दोनों को मार कर फ़र्स्ट नम्बर हासिल करे। इसलिए मैंने अभी खेलना बहुत कम कर दिया है।"

"शाबाश बेटे," उसकी मां ने उसे चिमटा लिया। "काश कि तुम ही इस खानदान की नैया के खेवनहार बन जाओ। आसार मुझे कुछ अच्छे नज़र नहीं आ रहे हैं। और तुम्हारे भाई साहिब का तो बस खुदा ही हाफ़िज़ है। चार साल से बराबर इंटर में फेल हो रहे हैं। यह उनका पाँचवाँ साल है। और इस साल वह फिर फेल हो गए। उसी से बीस साल की तो माशाअल्लाह उम्र हो चुकी है और अभी तक कोई ठौर ठिकाना उनका नहीं है।"

रज़िया दुःखी हो गई। और इस पर इकबाल बोला।

"मगर मैं तो खूब जी लगाकर पढ़ता हूँ। अमी? आप फ़िक्र क्यों करती हैं। अभी तो मैं नौ ही बरस का हूँ। ज़रा और बड़ा होने दीजिए मुझे। फिर मैं सब ठीक कर लूँगा।"

"हाँ बेटे," रज़िया बोली।

"अच्छा तुम ज़रा जाते-जाते अपनी रुखसाना बाजी को तो भेजते जाना मेरे पास। अपने कमरे में बैठी पढ़ रही होगी।"

"जी अच्छा अमी।"

और उसने रुखसाना ने कमरे में जाकर कहा।

"बाजी! आपको अमीजान बुला रही हैं।" और यह कहकर वह

अपने कमरे में पढ़ने के लिये चला गया।

"इस वक्त अभी बुला रही हैं।" रुखसाना ने किताब बंद करते हुए सोचा। "जरूर कोई खास बात है।" वह सोचने लगी, "अमीजान कभी मुझे पढ़ने से नहीं उठाती।" और वह किताब बंद करके उठी। उसको अपनी अमी के बेवक्त बुलाने पर बड़ी चिंता थी। वह तेज-तेज कदम बढ़ाती हुई अपनी अमी के पास पहुँच गई।

"जी अमी," उसने जाते ही कहा, "आपने मुझे बुलाया है।"

"हां बेटी"' उसकी अमी बोली, "बैठो, तुम से जरा एक बात करनी है।"

"फ़रमाइए", वह बड़ी व्यग्रता से उसी जगह बैठ गई।

"एक बात की चिंता मुझे कल से खाए जा रही है बेटी," रज़िया बोली, "और आज मैं यह बात तुमसे कह रही हूँ।"

"क्या बात है अमी," रुखसाना बोली, "जल्दी बताइए ना क्या बात है मुझे फ़िक्र लग गई है।"

"फ़िक्र की बात है बेटी," वह बोली, "मेरी सेफ़ से किसी ने बहुत से रुपये चुरा लिए हैं।"

"हैं," रुखसाना एकबारगी उछल पड़ी। उसका मुंह फ़क हो गया। "यह कैसे ?"

"खुदा मालूम। यही बात तो कल से मेरी समझ में नहीं आ रही है। निगोड़ा लाख सोचती हूँ। मगर कुछ समझ में नहीं आता।"

"चाबी है ?"

"हाँ, वह अपनी जगह पड़ी है।"

"फिर।"

"यही तो मैं सोच रही हूँ।"

"यह काम किसी मामा, छोकरी या नौकर लड़के का तो हो नहीं सकता।" रुखसाना बोली; "ज़रूर घर के किसी आदमी की यह कारस्तानी है" और फिर उसने पूछा, "कितने रुपए कम हैं ?"

"लगभग पच्चीस हजार।"

और यह सुनकर रुखसाना का चेहरा मारे रंज और अफसोस के

सफ़ेद पड़ गया । और वह एकबारगी बोली ।

"तब तो यह भाई जान साहब के सिवा और कोई नहीं हो सकता ।" वह ज़ोर देकर बोली, "मैं सच कहती हूँ अमीजान जी यह वही है ।" और फिर वह कुछ सोचकर बोली, "परसों ही एक बात मेरे कान में पड़ी थी, और मैं सुनकर दाँतों में उंगलियाँ दबाकर रह गई थी ।"

"कैसी बात ?"

"परसों छुट्टी के घंटों में हम कई लड़कियाँ रिटायरिंग रूम में बैठी थीं कि इतने में मेरी सहेली रतन प्रभा आ गई । वह पार साल तक मेरी ही क्लास में पढ़ती थी । मगर चूँकि वह बीमार थी और बेचारी इम्तहान नहीं दे सकी इसलिए वह आठवीं ही में रह गई । और मैं नवीं में आ गई । उसने मुझसे अलहदा ले जाकर कहा कि तुम्हारे भाई जान कानपुर में एक तवायफ़ के यहाँ जाते हैं ।"

"यह बात उसे कैसे मालूम हुई," रज़िया ने धड़कते दिल से सवाल किया ।

"उनके साथ एक गुंडे किस्म का आदमी और है । उसका नाम जीवन है । और रतन प्रभा की और जीवन की बहन की जान पहचान है । वही उनसे कह रही थी । उसके घर में एक दिन इस बात पर बड़ा हंगामा भी हुआ था ।"

"हाय रे मुकद्दर," रज़िया ने अपने माथे पर बड़े ज़ोर से हाथ मारा ।

"मगर बेटी । यह बात तुमने मुझे इससे पहले क्यों न बताई ।"

"क्या करती बताकर अमी," रुखसाना बिसूरते हुए बोली "कौन-सी ऐसी खुशखबरी थी ।"

"अब क्या होगा," वह एक ठंडी साँस भर कर बोली ।

"मैं इस सिलसिले में अब करूँ भी तो क्या करूँ ?"

"आप भाई जान से साफ़-साफ़ बात कीजिए," रुखसाना बोली । "और अगर वह सीधे तरीके पर राह न आए या आपकी बात न समझे तो आप अब्बा हज़ूर के कानों तक यह बात पहुँचा दीजिए । इस मामले

में उनके साथ किसी किस्म की रियायत या ढील उनके हक में और बुरी साबित होगी।"

"कोई राय दो ढंग की बेटी," रज़िया ने करुणा भरे स्वर में कहा। वह चुप रह कर फिर बोली।

"बात बड़ी अहम है। आज उसने पच्चीस हज़ार चुराए हैं। कल वह मेरी सारी जमा पूंजी ले जाकर उड़ा देगा और मैं हाथ मलती की मलती रह जाऊँगी···।" वह रोने लगी। "मैंने बुरे भले समय के लिए यह रकम बचा कर रखी है बरसों में और वह एक मिनट में इस मेहनत की बचाई हुई रकम को फूंक कर तमाशा देख लेगा।"

"जभी तो मैं कह रही हूँ अमी जान कि आप इस मामले में ज़रा सख्त हो जाइए। बिना आपके सख्त हुए यह मामला इस तरह न सुलझेगा।"

"तो तुम्हें यकीन है बेटी कि यह रुपए सरफ़राज ही ने चुराये हैं।"

"कमाल करती हैं आप अमीजान," रुखसाना ज़रा झुँझला कर बोली···।

"कड़ी से कड़ी तो मिल गई है और अभी तक आप शक और गुनाह की बात कर रही हैं। यह काम हमारे मुहतरम भाई जान साहिब ही का है और किसी का नहीं है।"

"मगर सेफ़ की कुन्जी तो उसी जगह पर रखी हुई थी।"

"हद है लेकिन अमी···" रुखसाना बोली।

"यह भी कोई ऐसी बात है जो समझ में न आने वाली है। साफ़ ज़ाहिर है कि भाई जान ने इस जगह का पता लगा लिया जहां कि आप सेफ़ की चाबी रखती हैं और फिर रुपया निकाल कर चाबी उन्होंने उसी जगह पर रख दी।"

"अच्छा तो फिर आने दो आज इस कमीने को।"

और अभी रज़िया का यह वाक्य पूरा भी न हुआ था कि सरफ़राज आ गया और उसे देखते ही रज़िया ने उससे प्रश्न किया।

"कहाँ से आ रहे हो ?"

और उसने अपनी माँ को ध्यान से देखा। और फिर उसकी नज़रें

रुखसाना पर पड़ी। और वह अपने कमरे में जाते-जाते रुक गया। वह बड़ी बदतमीज़ी से बोला "............जहन्नुम से आ रहा हूँ। फिर ?"

"भाई जान......" रुखसाना बोली "......आप अमीजान से जिस तरह बात कर रहे हैं, वह शराफ़त के नाम पर धब्बा है।"

"ओह," वह झुंझला कर दांत पीसते हुए बोला, "तो यह तुम्हारी लगाई बुझाई है।" वह बड़बड़ाया। पहले तुम तमीज़ सीखो बड़े भाई के पास किस तरह पेश आना चाहिए।"

"सरफराज," रज़िया बोली, "तुम मेरे साथ आओ।"

"कहां।"

"मेरे कमरे में।"

"मेरे पास फिजूल किस्म की बातों के लिए फ़ालतू वक्त नहीं है...।"

"क्या यही इनाम दे रहे हो तुम मेरी मुहब्बत का।"

"आखिर आप कहना क्या चाहती हैं।"

"तुमने मेरी जेब से रुपये क्यों चुराए ?"

"मुझे ज़रूरत थी।" वह बड़ी बेअदबी से बोला।

"तुम मुझसे माँग नहीं सकते थे ?"

"आप इतनी बड़ी रकम मुझे देती ?" वह बड़े ड्रामाई ढंग से बोला।

"लाइए। मुझे पन्द्रह हज़ार की ज़रूरत है। दे दीजिए। मैं न चुराऊँगा।"

"कहीं तुम्हारा दिमाग तो खराब नहीं हो गया ?..."

"दिमाग अगर खराब होता तो मैं ऐसी सुलझी हुई बात कैसे कहता।"

"क्यों अपनी शामत आप बुला रहे हो सरफ़राज," रज़िया जैसे कि अपनी जिन्दगी से तंग आकर बोली।

"अगर अभी उनके कानों तक यह बात पहुँच जाए तो मालूम है कि क्या होगा।......"

"होगा क्या," वह बोला, यही न कि वालिद साहिब की तरफ से मुझे घर से निकल जाने का नोटिस मिल जाएगा और मैं बड़ी खुशी

के साथ घर से निकलने को तैयार हूँ," वह मुसकराया।

"सब आगा पीछा मैंने पहले ही से सोच रखा है। लिहाज़ा आप इसके बाद मुझे आगा पीछा सोचने का मशवरा न दीजिएगा।"

"तेरे दिमाग में क्या समाई है लड़के," रज़िया की आँखों में आँसू आ गए और वह रोने लगी, "क्यों अपनी माँ के पीछे तू हाथ धोकर पड़ा है। न तूने पढ़ा है और न लिखा है। दर-दर की ठोकरों के सिवा तुझे सारी ज़िंदगी और कुछ न मिलेगा।"

"तो आप मेरे साथ रोने न आइएगा। मैं अपने लिए आपको मातम की तकलीफ न दूँगा।..."

"पच्चीस हज़ार की इतनी बड़ी रकम का आखिर तूने क्या किया।"

"घर में डाल दी समझ लीजिए। अगर अभी तक कलेजा ठंडा न हुआ हो तो पुलिस में रिपोर्ट लिखवा कर मुझे गिरफ़्तार करा दीजिए। क्या होगा, यही न साल डेढ़ साल की जेल हो जाएगी और क्या। कोई फाँसी तो लगने से रही मुझे।..."

"तो यूँ कहो कि तुम बिलकुल ही हाथ से गए सरफराज," रज़िया ने अपने आँसू पोंछ डाले।

"तुम्हारी आँखों का पानी मर चुका है।......"

"हाँ ! मर चुका है। फिर ?......"

"काश कि तुम पैदा होते ही मर जाते।......"

"यह गलती आपकी थी। गला घोट देना था।......"

"तो अब मैं तेरा गला घोटती हूँ," रज़िया के माथे पर बल पड़ गए।

"तुम जैसी औलाद से बिना औलाद होना भला।......" और उसने खादमा को आवाज़ दी, "सलीमन, अरी ओ सलीमन की बच्ची, कहाँ मर गई।" और जब सलीमन हाँपती काँपती हुई आई तो उसने उसे हुक्म दिया जरा अली बख्श से जाकर कह तो आओ कि सरकार को अन्दर बुला रही हैं।..."

"अमीजान," रुखसाना जैसे काँप गई।

"अमीजान जाने दीजिए। खुदा के लिए अमीजान।......" और

उसने सलीमन को रोक लिया "......रहने दे सलीमन अब। हजूर को बुलवाने न जा।"

सरफराज इतनी देर में अपने कमरे में पहुँच चुका था।

"गुस्सा हराम होता है अमीजान......" रुखसाना बोली। "अगर ऐसा ही है तो अब्बा हजूर से फिर बात कर लीजिएगा। इस समय भाई जान का मिज़ाज भी खराब है। अगर उन्होंने अब्बा हजूर से बदतमीज़ी की तो नतीजा बुरा होगा। आप तो तिजोरी की चाबी मुझे दे दीजिए। मैं ऐसी जगह रखूँगी कि भाई जान के फरिश्तों को भी खबर न हो।"

"अच्छा," रज़िया आँचल से अपने आँसू पोंछते हुए बोली।

"फिर कभी बात करूँगी उनसे। खुदा इस बदबख्त को अक्ल दे।" और वह बुझे हुए दिल के साथ तख्त पर बैठ गई। और यह बड़ा सा पानदान अपने आगे सरका कर उससे पान बनाने लगीं। रुखसाना अपने कमरे में पढ़ने चली गई।

शाम का समय था और रईस मियाँ की हवेली के सहन में पानी छिड़का जा चुका था। और मोढ़े लग चुके थे और मेहमान आने शुरू हो गए थे। बात दरअसल यह थी कि आज रईस मियाँ की हवेली के इस सेहन में कुत्तों का दंगल होने वाला था। बड़े-बड़े नामी किसमी कुत्तों की जोड़ी मुकाबले के लिए उतरने वाली थी।

कस्बा धामपुर के रईसों के कुत्ते उनके कुत्तों के मुकाबले के लिए चुन लिए गए थे। और मुकाबला बड़ा सख्त और दिलचस्प था। "आइए रईस मियाँ" हरनालसिंह जी अपनी मूछों पर ताव देते हुए बोले। "मैं आपको अपने कुत्ते दिखाऊँ," और वह रईस मियाँ को अपने खूँखार कुत्तों की गाड़ी के पास ले गए। "देखिए रईस मियाँ," उन्होंने एक तरफ इशारा किया, "यह क्लाइव है।"

"क्लाइव," रईस मियाँ हैरत से बोले, "यानी कि आपने अपने इस कुत्ते का नाम क्लाइव रखा है।"

"जी हाँ," वह बदस्तूर अपनी मूछों पर ताव दे रहे थे। और यह रहा डलहौज़ी। और यह है एडवर्ड। और यह रहा जार्ज। और यह

वैलेज़ली है और यह रिचर्ड है। और इस कुत्ते का नाम है हिंडन।" उन्होंने एक कुतिया की तरफ इशारा किया, "और यह विक्टोरिया है।"

"मगर," रईस मियाँ बोले, "मेरा मतलब है कि आपने अपने कुत्तों के नाम इस किस्म के क्यों रखे ?"

"यह आपने उस समय सवाल नहीं किया जब कि कुत्तों के नाम शेरे मैसूर, मुजाहिद हिंद और शहीद आज़म शहनशाह टीपू के मुकदस नाम पर टीपू रखे गए थे। जब कुत्तों के नाम टीपू हो सकते हैं तो कुत्तों के नाम क्लाइव, वैलेज़ली, डलहौज़ी, एडवर्ड, जार्ज भी हो सकते हैं। और कुत्तेका नाम चर्चिल भी हो सकता है। कुतिया का नाम विक्टोरिया और एलिज़ाबेथ भी हो सकता है। इसमें कौन-सी क़बाहत है।"

"जवाब नहीं तुम्हारा प्यारे," रईस मियाँ खिले जा रहे थे, 'जवान हो तो तुम जैसा हो।"

"आपको मालूम है रईस मियाँ," हरनालसिंह बड़े दर्द के साथ बोला, "हम हिन्दुस्तानी कुत्ते जाहिल और मूर्ख हैं। हमने तो बिना सोचे समझे अपने कुत्तों के नाम टीपू रख दिए थे। मगर कुत्तों का नाम टीपू देने वाले अपने कुत्तों के नाम मेरे दिए हुए नामों पर नहीं रखेंगे और यही हम में और उनमें बड़ा अन्तर है।"

और फिर सरदार हरनालसिंह अपनी मूछों पर ताव देते हुए वहाँ से वापिस आ गए।



रईस मियाँ की कोठी का लम्बा चौड़ा सेहन कुत्तों की लड़ाई देखने वालों से भर गया था। कुर्सियों से पीछे कम्बा और बहुत से लोग थे जो कि खड़े थे। और इस लड़ाई के नज़ारे के लिए बड़े बेचैन नज़र आ रहे थे।

सरदार हरनालसिंह के नौकर हरनालसिंह के कुत्तों की जंजीरें पकड़े खड़े थे। एक बारगी हरनालसिंह अपनी जगह से उठे।

"यह क्लाइव है" उन्होंने क्लाइव की तरफ इशारा किया। और उनके नौकरों ने क्लाइव को बीच मैदान में लाकर छोड़ दिया।

"इससे कौन मुकाबला करता है।"

"यह रहा अपना शेरा," एक रईस अपनी जगह से उठा और उसने अपने नौकर को इशारा किया। उसने शेरा को क्लाइव के मुका-बले पर लाकर छोड़ दिया।

"दो सौ रुपया," हरनालसिंह जोश में बोले, "अगर तुम्हारा कुत्ता जीत गया तो मैं दो सौ दूँगा।"

"मंजूर," दूसरी आवाज़ आई, "मैं भी दो सौ दूँगा।"

और फिर शेरा और क्लाइव एक दूसरे पर झपट पड़े। और वह बहुत बुरी तरह एक दूसरे को झंझोड़ने लगे। बड़ा जानदार और दिलचस्प मुकाबला था।

"हाँ, क्लाइव शाबाश," सरदार निहालसिंह ने क्लाइव की हिम्मत बढ़ाई और उधर से वह रईस भी चीखा।

"पकड़ ले टैंटुवा शेरा। शाबाश, क्लाइव की सारी शेखी धूल में मिला दे।" और वह दोनों कुत्ते एक दूसरे को झंझोड़ने लगे। वह एक दूसरे पर दिवाना हो पिल पड़े। शेरा ने क्लाइव को उठाकर दे मारा। और वह उस पर चढ़ा हुआ था। और उसे झंझोड़ रहा था।

"उठ, क्लाइव उठ," सरदार जी चीखे।

"उठ, साले नहीं तो गोली मार दूंगा।"

क्लाइव ने उठने की बहुत कोशिश की, मगर शेरा के तेज़ और ताकतवर जबड़ों ने उसका टिटवा न छोड़ा और अब वह शेरा के मुकाबले पर बिल्ली नज़र आ रहा था। एक हकीर सा चूहा जिसे झंझोड़ा जा रहा हो।

"उठ तेरी·········।"

सरदार ने एक बहुत ही गाढ़ी किस्म की पंजाबी गाली दी उसे। मगर कोशिश के विपरीत वह अपना टिटवा शेरा की पकड़ से आज़ाद न करा सका। और अब उसकी कोशिश भी जवाब दे गई। और वह पों-पों करके रोने और चिल्लाने लगा।

शेरा वाला रईस ज़ोर से कहकहा मारकर हंसा।

"अब दूसरी जोड़ी मैदान में उतारो सरदार। यह दो सौ तो तुम

हार गए ।"

और फिर सरदार जी ने इशारा किया और उनके नौकर ने क्लाइव को मैदान से खींच लिया और अब मैदान में जार्ज खड़ा था।

"इसके मुकाबले पर कलुवा को ले आओ ।" उसी रईस ने अपने नौकर को हुक्म दिया । और जार्ज के मुकाबले पर एक स्याह रंग का कुत्ता मैदान में उतार दिया गया ।

इस कलुवा ने तो मैदान में उतरते ही जार्ज की वह मिट्टी पलीद की कि वह उसके पहले ही हमले को ताव न लाकर दुम दबाने लगा। वह कतरा रहा था कि कलुवा ने उसे झंझोड़ डाला। और वह दुम दबा कर मैदान से भाग गया। हर तरफ से हो हो, ही ही और शी शी की आवाज़ आने लगी ।

सरदार जी का मारे गुस्से के बुरा हाल हो गया । वह अपनी जगह से उठ खड़े हुए। बोले, "जार्ज के बाप साले एडवर्ड को मैदान में लाओ ।"

यह हुक्म सुनते ही एडवर्ड को मैदान में लाकर छोड़ दिया गया।

"अब कौन आता है इस एडवर्ड के मुकाबले पर," सरदार जी चीखे । "पाँच सौ की शर्त लगाता हूँ ।"

"वाह सरदार साहिब ।" वह रईस मुसकराया, "गोया आप चार सौ की हार पूरी करना चाहते हैं ।" और यह कहकर उसने अपने नौकर को हुक्म दिया, "इसके मुकाबले पर लालू को ले आओ ।"

हुक्म सुनते ही लाल रंग का एक जफादरी कुत्ता मैदान में उतार दिया गया। और इस लाल रंग के जफादरी की एडवर्ड ने वही दशा की जो कि कालू ने जार्ज की की थी। जफादरी ने एक ही झटके में अपनी दुम अपनी टांगों के बीच दबा ली और वह कान और सिर नीचा किए हुए मैदान से ऐसा भागा जैसे कि गधे के सिर से सींग ।

हर तरफ से हो हो, हा हा और ही ही की आवाज़ें सुनाई देने लगीं । और उन रईस साहिब की तेवरियों पर बल पड़ गए ।

"अब इसके मुकाबले पर जो कामयाब होगा उसे मैं एक हज़ार दूंगा ।"

सरदार जी मुस्कराए। और उन्होंने अपनी मूछों पर ताव दिया।

"डेढ़ हज़ार," एव मारवाड़ी बीच में बोल पड़ा।

और उसका सफेद रंग का कुत्ता मैदान में कूद पड़ा।

"शाबाश तिरसू," मारवाड़ी ज़ोर से उछला, "एडवर्ड को छटी का दूध याद दिला दे।"

और उसका तिरसू एडवर्ड पर झपट पड़ा। और दोनों में वह डट कर मुकाबला हुआ कि बस मज़ा आ गया देखने वालों को। कभी तिरसू एडवर्ड को लताड़ता था तो कभी एडवर्ड तिरसू की भभर साफ कर देता था। दोनों में एक घंटा तक मुकाबला होता रहा और दोनों लहू लुहान हो गए। और हार जीत न हो सकी।

और फिर तय यह हुआ कि मुकाबला बराबरी पर छोड़ दिया जाय और वह दोनों बराबर रहे।

"अब मेरे डलहौज़ी को ले आओ," सरदार जी बोले। और डलहौज़ी मैदान में आकर अपने पंजों से ज़मीन खोदने लगा।

"क्यों मियाँ सरताज खान साहिब," सरदार जी ने उन रईस की तरफ इशारा किया, "है कोई जोड़ी इस शेर तुर के मुकाबले के लिए।"

"है," सरताज खान बोले, "मगर शर्त दो हज़ार से कम की न होगी।"

"मंजूर," सरदार जी अपनी मूछों पर ताव देने लगे,।

"तो ले आओ मेरे राखू को।"

और राखू ने आते ही डलहौज़ी पर सवारी गाँठ दी। और फिर उसने राखू को वह पैंतरा बदल कर पटका कि राखू गिर कर ज़मीन चाटने लगा। और डलहौज़ी उस पर चढ़ बैठा।

मुकाबला शुरू हुआ दोनों में कि खुदा की पनाह कभी राखू डलहौज़ी को झंझोड़ने लगता था तो कभी डलहौज़ी राखू के शरीर से खून के फव्वारे छुटवा देता था। मुकाबला बड़ा सख्त था और फैसला असम्भव था कि कौन जीतेगा कि इतने में राखू ने झपट कर डलहौज़ी का टिटवा पकड़ लिया। और डलहौज़ी ने राखू की इस पकड़ से आज़ाद होने की हर संभव कोशिश कर डाली। मगर राखू ने उसका

ठिटवा न छोड़ा। राखू ने डलहौज़ी को लहू-लुहान कर दिया। और फिर वह उसके सामने चूहा बन गया। और वह दुम दबाने लगा। उसने हार मान ली थी।

सरदार साहब दो हज़ार की शर्त हार गए। और राखू की पकड़ से डलहौज़ी साहिब को छुटकारा दिलाया गया। और इस तरह यह खेल खत्म हो गया।

फिर यह लोग खाने पर बैठे तो सरदार साहब के अलावा कई और मेहमान बाहर से आ गए थे।

"यह लीजिए सरदार साहब," रईस मियाँ ने सरदार साहब की तरफ एक कबाब बढ़ाते हुए कहा।

"यह मसालेदार बटेर है।"

और अभी सरदार साहब ने वह कबाब खोली ही थी कि रईस मियाँ ने दूसरी कबाब बढ़ाई, "और हजूर यह हिरन का कोरमा है।"

सरदार साहब मुस्कराए, "हर चीज़ खाऊँगा, रईस मियाँ", वह बोले।

"आपने तो तकल्लुफ की हद कर दी।"

"तकल्लुफ क़ाहे का भाई," रईस मियाँ बोले "·········आप कौन ग़ैर हैं।"

"सरदार साहब" एक साहब लुकमा चबाते हुए बोले, "यह रईस मियाँ के लिए कौन-सी नई बात है। यहाँ तो रोज़ ही हर आए दिन इसी किस्म के तकल्लुफ होते रहते हैं।"

और फिर वह बटेर की हड्डियां कुरम-कुरम करके चबाते हुए बोले। "मगर सरदार साहब यह आपके कुत्तों को आज क्या हो गया था।"

"नाम का असर पड़ गया कम्बख्तों पर," सरदार साहिब शाही कबाब से शौक फरमाते हुए बोले। "पालिसी वाली बात तो यहाँ थी नहीं। खुली जंग थी। मात खा गए सुसरे।"

और फिर रात के बारह एक बजे यह लोग अपने-अपने बिस्तरों पर जाकर लेटे।

और लेटते ही ज़ोर-ज़ोर से खर्राटे लेने लगे। उस वक्त······

सरफराज सितारा की जांघों पर सिर रखे लेटा हुआ था। सितारा बोली, "क्यों नवाब साहबज़ादे। वह आपकी हवेली का वायदा कब पूरा होगा ?"

"जान न जलाओ सितारा," सरफराज बेज़ारी से बोला।

"कुछ तो मुहब्बत के आदाब सीखो। क्या तुम्हारी मुहब्बत की दुनिया में सिवा पैसे के और कुछ नहीं है।"

"तुम एक मुहब्बत की दुनिया को रो रहे हो। और यहाँ ईश्वर की सारी दुनिया में सिवा पैसे के और कुछ नहीं है।"

"तुम्हारा हवेली वाला वायदा भी जल्दी पूरा कर दूंगा। ज़रा मेरे किबला वालिद को तो अल्लाह का प्यारा होने दो……"

"बाप रे बाप", सितारा एक बारगी उछल पड़ी।

"तो अब गोया इस हवेली की दुआ के साथ-साथ मुझे आपके किबला वालिद साहब के लिए भी दुआ करनी होगी कि वह बहुत जल्दी अल्लाह के प्यारे हो जायें," वह मुस्कराई, "क्यों है न यही बात ?"

"देखो ! वह जेवर तो मैंने तुम्हें खरीद ही दिया है। बस हवेली का वायदा पूरा हो जाएगा।" उसने सितारा बाई की जांघों से अपना सिर उठा लिया, "अब यह मेरी कसम है कि जब तक तुम्हारे लिए हवेली न खड़ी करवा दूंगा, तुम्हारी इन जांघों पर कभी सिर न रखूंगा।"

"क्यों, रूठ गए ?"

"नहीं", वह खिन्न चित्त बोला।

वह इस समय परेशान था। और बार-बार जैसे किसी चीज़ से उलझ रहा था।

●

रईस मियाँ अपनी बैठक में बैठे 'तिलस्मेहुश रुबा' का अध्ययन बड़ी एकाग्रता से कर रहे थे कि इतने में असलामालेकुम के गगनचुंबी नारे से वह एक बारगी चौंक पड़े।

"वल्लाह रईस मियाँ" मौलाना अतीकलरहमान उनके सामने खड़े

मुस्करा रहे थे। "यानी यह कि आप डर गए।"

और वह अपनी दाढ़ी मुबारक पर हाथ फेरते हुए सरकंडे की कुर्सी पर बैठ गए। और उन्होंने रईस मियाँ के हाथ में तिलस्मेहारा सबा देखकर मतली आ जाने वाले ढंग से मुँह बिगाड़ा।

"यानी यह कि आप रईस मियाँ इन बेतुकी चीज़ों में अपना वक्त गुज़ारते हैं," उन्होंने फौरन कुतबा सादर फरमाया। "इस्लाम ने ऐसी किताबों को पढ़ने में मना फरमाया है। मैंने तो समझा कि आप कोई हदीम या वहशती जेवर पढ़ रहे हैं। इन......"

"इन किताबों को पढ़ना मना है ?........."

"बिल्कुल", वह बोले, "यह सब किस्से कहानियाँ झूठ का पूलिन्दा है। और झूठ क्या जायज़ है इस्लाम में। और इसीलिए यह अदब फदब सब बकवास है। सारे अदीब जहन्नुमी हैं। इसलिए कि वह झूठ के हजारों सामे स्याह करते रहते हैं। मायूद जमाने भर में अल्लाह पाक के सामने अपने इस झूठ के लिए इन्हें जवाब देना पड़ेगा। यह अदीब और शायर दोनों झूठे हैं। दोनों के लिए जहन्नुम की आग धधक रही है।"

"अच्छा।......"

"और नहीं तो क्या", मौलाना जोश में बोले, "......कसम खुदा की यह हरामजादे कभी बख्शे न जाएंगे।"

और फिर वह इस विषय पर और अधिक विवाद न कर अपनी बात पर आ गए।

"रईस मियाँ। मैं इस समय आपके पास एक काम से हाज़िर हुआ हूँ।"

"फरमाइए।"

"वह क्या नाम है एक गाँव हैं तहसील सराथु में करतपुरा और वहाँ की मस्जिद की हालत बड़ी खस्ता है। बरसात से पहले अगर मरम्मत न करा दी गई तो उसके शहीद हो जाने का खतरा है। उसके लिए आप कुछ मदद फरमाइए।"

"कितने की ज़रूरत है ?"

और रईस मियाँ की इस फौरन तत्परता पर मौलाना बौखला गए। और वह जल्दी-जल्दी दिल में यह हिसाब करने लगे कि इन्हें उस कानपुर वाले सट्टे के बुकी को उधार के कितने देने हैं। और उन्हें इस तरह चुप देख कर रईस मियाँ मुस्कराए, "क्या सोच रहे हैं आप ?" वह बोले।

"हिसाब कर रहा हूँ।" और फिर वह एकदम बोले, "ज़्यादा नहीं सिर्फ अढ़ाई सौ दे दीजिए।"

"अच्छा," रईस मियाँ बोले, "मेरा नाम लिख लीजिए। मैं अढ़ाई सौ दे दूंगा।"

और सुनकर मौलाना का मुंह फक हो गया। उन्हें कानपुर के उस सट्टे के बुकी को कल ही सवा दो सौ चुकाने थे। कल दो रावा था और अमरीकन काटन का बाजार कल खुल रहा था। लहजा वह घबरा कर बोले, "मगर ज़रूरत फ़ौरन है रईस मियाँ ?"

"आज शरफ़ अलदीन छुट्टी पर गया हुआ है, परसों आइएगा। आकर अढ़ाई सौ ले जाइएगा।" और फिर मौलाना बिलकुल विनम्र होकर कुछ सोचने लगे।

"अब क्या सोच रहे हैं आप ?"

और मौलाना को फ़ौरन एक बात याद आ गई। और एक बारगी उनका चेहरा दमक उठा। मगर वह अपनी इस खुशी को छुपाते हुए पैंतरा बदल कर बोले, "क्या बताऊँ रईस मियाँ। बड़े शर्म की बात है।..."

वह एक सर्द आह भर कर बोले, "मैं आप से कहना तो नहीं चाहता था। मगर कहना पड़ रहा है। इसीलिए कि न कहूँगा तो यह मेरी आपके साथ दुश्मनी होगी।"

"बात क्या है।" रईस मियाँ के माथे पर चिन्ता की शिकनें पड़ गईं।

"मैं इस खुदा के लिए अपनी जेब से तीन सौ महज़ आपकी खातिर खर्च करके आया हूँ।"

"साफ़-साफ़ बताइए, साहब बात क्या है ?"

"बुरी बात है," वह हाथ मलते हुए बोले, "सरफ़राज मियाँ अपने बाप दादा और अपने खानदान की इज्ज़त को नीलाम कर रहे हैं।"

"जी।"

"जी हाँ," मौलाना बोले, "वह कानपुर की एक नई तवायफ़ सितारा बाई के यहाँ आने जाने लगे हैं। वह दिन-दिन भर उसी के कोठे पर पड़े रहते हैं। मैंने जब यह बात सुनी तो मुझे बेहद दुःख हुआ। और मैंने कहने वाले का सिर्फ मुँह बन्द करने के लिए सौ-सौ के नोट उसी वक्त कुर्बान कर दिए। सिर्फ आपकी खातिर रईस मियाँ।..."

मौलाना कहते रहे और रईस मियाँ आश्चर्य चकित यह सब सुनते रहे। और फिर वह बोले।

"यह बात सच है मौलाना।"

"सवा सोलह आने, रईस मियाँ।"

"हूँ," वह होंठ काटते हुए बोले, और उनकी परेशानी शर्म और लज्जा से पसीने से डूब गई। उन्होंने अपने संगराव की जेब में हाथ डाला और सौ-सौ के तीन नोट निकालकर मौलाना की तरफ बढ़ा दिए।...आपका बहुत बहुत शुक्रिया। आपने यह बात मुझे बताकर मुझ पर अहसान फरमाया है।"

और मौलाना तीन सौ लेकर फौरन वहाँ से रफू चक्कर हो गए। उनका काम बढ़ी आसानी के साथ बन गया था। वह चले गए और रईस मियाँ मारे गुस्से के पेच व ताव खाने लगे। रंज और ग्लानि के मारे उनका बुरा हाल था।

●

"आपको सरकार बुला रहे हैं, छोटे सरकार?" सलीमन ने आकर सरफ़राज से कहा, और रजिया का दिल जोर-जोर से धड़कने लगा। और उनके चेहरे की रंगत उड़ गई।

"मुझे," सरफ़राज सोच में पड़ गया।

"जी हाँ," सलीमन बोली, "फौरन बुलाया है" और सरफ़राज बिना कपड़े बदले बाहर चौक की तरफ जाने लगा। उसका दिल जोर-

ज़ोर से धड़क रहा था। वह रईस मियाँ के सामने पहुंचा और उसने बड़े अदब से उन्हें सलाम किया।

"तस्लीम अरज़ करता हूँ अब्बा हज़ूर।"

और सरफ़राज के इस सवाल के जवाब में रईस मियाँ अपनी पूरी ताकत के साथ गरजे।

"क्यों बे कमीने ! तंग खानदान !! तू पैदा होते ही क्यों नहीं मर गया !!!," गुस्से के मारे उनकी आँखें सुर्ख हो रही थीं। "तू इसी वक्त मेरे घर से निकल जा। हरामज़ादे। सूग्रर। अभी मुँह से दूध की बू भी नहीं गई और तूने बड़ी शान के साथ रंडीबाज़ी भी शुरू कर दी। बाप दादा और खानदान की इज्ज़त पर अच्छी कीचड़ उछाली है तू ने," वह गला फाड़ कर चिल्लाए, "खबरदार जो अब कभी तूने मुझे अपनी यह मनहूस सूरत दिखाई तो। और फिर उन्होंने अपनी छड़ी उठा ली। और उन्होंने सरफ़राज को बेतहाशा पीटना शुरू कर दिया।"

सरफ़राज ने उनकी छड़ी पकड़ ली। और वह बड़ी गुस्ताखी से बोला, "यह खुशखबरी आपको किसने सुनाई होगी। मैं भी समझ लूंगा उससे।"

"बदतमीज़ कहीं के ! गुस्ताख ! जुबान दराज ! हरामज़ादे ?"

उन्होंने एक ज़ोरदार झटके के साथ छड़ी सरफ़राज के पकड़ से छीन-ली। और एक भरपूर हाथ उन्होंने सरफ़राज के सिर पर मारा।

"निकल जाओ मेरी हवेली से मरदूद।" वह गला फाड़कर चिल्लाये।

"दूर हो जा मेरी नज़रों के सामने से, नहीं तो मैं तेरा खून कर दूंगा।"

और सरफ़राज वहां से भन्नाया हुआ निकल गया। वह उसके पीछे भागे। उन्होंने नौकर को आवाज़ दी।

"इस कमीने को जूते मार कर मेरे घर से बाहर निकाल दो।"

वह अन्दर ज़नाने में आ गये थे। रज़िया उनके सामने हाथ जोड़ कर खड़ी हो गई, "खुदा के लिए गुस्सा थूक दीजिए। माफ कर दीजिए। फिर भी वह आपका खून है।"

रुखसाना ने दौड़कर अपने पिता के पाँव पकड़ लिए। और वह जारोकतार रोने लगी, "अब्बा हज़ूर ! खुदा के लिए माफ कर दीजिए भाई जान को ! रहम फरमाइए !!" और वह अपनी चहेती बेटी की विनती पर पसीज गए। "अच्छा, तो कहो इस हरामज़ादे से इसी वक्त मेरी हवेली से बाहर निकल जाए।"

"मैं खुद ही जा रहा हूँ," सरफ़राज अपने कमरे से बाहर निकला।

"आप राजक तो नहीं हैं।" और यह कहकर वह जाने लगा। रुखसाना उसके पीछे दौड़ी। "भाई जान, खुदा के लिए अब्बा हज़ूर से माफी माँग लीजिए भाई जान।" मगर वह रुखसाना की किसी बात का जवाब न देकर तैश में भरा हुआ हवेली से बाहर निकल गया। और रुखसाना हाथ मलकर रह गई।



सरफ़राज सीधा अपने जिगरी दोस्त जीवन के घर पहुँचा और उसने बाहर से जीवन को आवाज़ दी। जीवन थोड़ी देर के बाद बाहर आ गया।

"हैलो सरफ़राज," वह बड़ी गर्म जोशी से बोला, "कहो क्या बात है" वह सरफ़राज को बड़े ध्यान से देखते हुए बोला, "यह चेहरे पर हवाइयां कैसी उड़ रही हैं ?" और उसने बैठक का दरवाज़ा खोल दिया। सरफ़राज अन्दर आ गया।

"तकल्लुफ छोड़ो यार," सरफ़राज बोला, "ज़रा शाँति ही से बैठने आया हूँ।"

"क्या मतलब ?"

"मतलब यह कि यार खां ने घर छोड़ दिया है।"

"हैं," जीवन को जैसे कि किसी ने गोली मार दी हो। "यह हिमाकत तुमसे हुई कैसे ?"

"हिमाकत क्या यार," सरफ़राज बोला, "हमारी मुहब्बत की दास्तान घर वालों को मालूम हो गई है।"

"फिर।"

"फिर क्या। वालिद साहिब बिगड़ खड़े हुए और मैं उन सब पर लानत भेजकर यहाँ आ गया।"

यह सुनकर जीवन का मुँह फक हो गया और वह बोला। "मगर यह तुमने सख्त हिमाकत की।"

"हिमाकत क्या यार। जो कुछ हुआ वह ठीक ही हुआ है। अब मैं अपने बाप के मरने तक उस ड्योढ़ी पर जाऊँगा नहीं। तुम जैसा दोस्त मेरा मौजूद है। मुझे किस बात की फिक्र।"

"हो ! हो !!" जीवन बोला, "बिल्कुल ठीक।"

फिर वह सरफ़राज से बोला, "अच्छा ज़रा बाहर तो आओ।"

"क्यों क्या बात है ?"

"घर में मेहमान औरतें आई हुई हैं। और इलाहाबाद से दो खानदान एकदम मेहमान बनकर आ गए हैं। हम चलकर चायखाने में बात करते हैं।" और जीवन सरफ़राज को लेकर बैठक से बाहर आ गया।

"मगर यार," सरफ़राज बोला, "फिर मेरा क्या होगा ? मैं तो तुम्हारे यहाँ कुछ दिनों के लिए ठहरना चाहता हूँ।"

"फिलहाल आठ दस दिन के लिए तुम किसी और अपने दोस्त के यहाँ ठहर जाओ। फिर जब मेरे घर के मेहमान चले जाएँ तो आ जाना। मुझे कहां इन्कार हैं।"

"अच्छा तुम मुझे कुछ रुपये कर्ज़ दो" सरफ़राज बोला। "मैं घर से एक पाई भी लेकर नहीं चला। मेरी जेब में सिर्फ़ छः-सात रुपए हैं। मैं कानपुर जाता हूँ। वहाँ किसी होटल में ठहर जाऊँगा।"

"अरे वाह," जीवन बोला, "कानपुर जाकर होटल में ठहरने की क्या ज़रूरत है। वह सितारा आखिर किस दिन काम आएगी। उसी के यहाँ रहो ठाठ से। और कानपुर तक पहुँचने के लिए तुम्हारे पास रुपये बहुत काफ़ी हैं।"

"अच्छा तो मैं चलता हूँ," सरफ़राज ने जीवन से हाथ मिलाया।

"खुदा हाफ़िज़।"

"जय रामजी की," वह व्यंगात्मक ढंग से मुस्कराया और सरफ़-

राज कानपुर जाने के लिए लारी स्टैंड की तरफ चल पड़ा।

सरफ़राज जिस समय सितारा के यहाँ पहुंचा तो मारे रंज और क्षोभ के उसका दिल फटा जा रहा था। वह हाल में आकर मसनद पर गिर पड़ा। "सितारा को बुलाओ," उसने एक साज़िन्दे से कहा, "कहना कि सरफ़राज बहुत थका हुआ आया है।"

और वह साज़िन्दा सिटपिटा कर इसलिए रह गया कि सितारा अपने कमरे में लखनऊ के एक नौजवान और शौकीन मिजाज़ रईस गिरधारी लाल के साथ मस्त थी। अन्दर प्रेम का दूसरा नाटक खेला जा रहा था।

सरफ़राज हर शनिवार की शाम को आता था और इतवार की सुबह को चला जाता था। और आज भी सुबह वह सोकर गया था कि शाम के चार बजे फिर आ गया। और इसलिए दोनों नाटक एक अनजानी घटना के तौर पर एक ही समय स्टेज हो गए। सितारा को क्या मालूम था कि सरफ़राज आ जायेंगे और उसका यह वक्त गिरधारी के साथ प्रेम की रिहर्सल का था, बेचारे साज़िन्दे ने चुपके से सरफ़राज के आगमन की इतलाह अन्दर पहुँचा दी।

और यह सुनकर कि सरफ़राज आ गया है सितारा के होश उड़ गए थे। वह परेशान हो रही थी कि उसकी माँ बोली, "इसमें इतनी बोखलाहट काहे की। मैं अभी मामला ठीक किए देती हूँ।" और वह बाहर हाल में आ गई।

"क्या बात है बेटा," वह आते ही बोली......"यह बे-वक्त का आना, खैरियत तो है?"

"मुझे सितारा से मिलना है।"

"वह आखिर है किसकी," उसकी माँ बोली, "सुबह तुम गये कि उसकी तबीयत खराब हो गई। डाक्टर ने देखकर कहा कि मिलना-जुलना बन्द। इसे आराम की सख्त ज़रूरत है। अभी-अभी आंख लगी है उसकी। ज़रा आराम करो। मैं थोड़ी देर बाद उसे उठाए देती हूँ।" और फिर उसने सरफ़राज से पूछा, "मगर बेटा तुम इतने हैरान और परेशान किस लिए हो रहे हो, क्या बात है?"

"फिर बताऊँगा," सरफ़राज बोला, "फिलहाल मैं आराम करना चाहता हूँ।"

"तो आओ ना।"

वह सरफ़राज को एक कमरे में ले गई। और सरफ़राज पलंग पर जाते ही गिर पड़ा।

शाम के छः बजे थे कि सितारा ने आकर सरफ़राज को उठाया।

"क्यों ! क्या घोड़े बेचकर सो रहे हो !!" वह एक दिलवर अदा लेकर मुस्कराई। वह सरफ़राज के सीने पर सिर रखे उसके बालों से खेल रही थी। सरफ़राज के दिल को उसकी इस मुहब्बत से बड़ी ढाढस बन्धी। और वह उसके होंठ चूम कर उठ गया। वह मुस्कराया।

"एक बात बताओ सितारा मेरी जान। तुम मुझसे कितनी मुहब्बत करती हो ?"

"इतनी," सितारा ने अपने दोनों बाज़ू बिल्कुल बच्चों की तरह इधर-उधर फैला दिये। वह मुस्करा रही थी।

"क्यों, क्या आज मेरी मुहब्बत का इम्तहान लेने आ गए हो अचानक ?"

"समझ लो कि यही बात है।"

"अच्छा तो ले लो इम्तहान। अगर अव्वल न आऊँ तो मुँह पर थूक देना।"

"सितारा," सरफ़राज की आँखों में आंसू आ गए।

"खुदा की कसम मुझे तुम से यही उम्मीद है।"

और सरफ़राज की इस हालत पर सितारा का माथा ठनका। और वह घूर कर बोली, "जल्दी बताओ कि आखिर बात क्या है ?"

"मेरे बाप ने मुझे बेदखल कर दिया है। मुझे धक्के मार कर अपने घर से बाहर निकाल दिया गया है। और हमेशा के लिए मेरे घर के दरवाज़े मेरे लिए बन्द हो गये हैं।" उसने सितारा की गर्दन में अपने दोनों बाज़ू डाल दिए "और यह सब कुछ तुम्हारी मुहब्बत के नतीजे के तौर पर हुआ है। मेरी जान......।"

सितारा जैसे कि कोई भयानक किस्म का सपना देखकर चौंक पड़ी

हो। उसने घूर कर सरफ़राज की बाहों से अपने आप को आज़ाद कर लिया। और वह उठ कर एक बार ही खड़ी हो गई। उसके नथूने फड़कने लगे। और वह उसे घूरते हुए बोली।

"तो फिर यहाँ क्या लेने आए हो ?"

"मैं हमेशा के लिए तुम्हारा होकर आ गया हूँ। और अब तुम्हारे दर के सिवा मेरा कोई ठिकाना नहीं है सितारा।"

"बहुत ज़लील हो तुम," वह नफ़रत से बोली। "यहाँ रह कर तुम क्या करोगे ? मेरी दलाली करोगे। या मेरे घर की चिलमें भरोगे ?"

"सितारा," वह एक बारगी पलंग पर से कूद कर नीचे खड़ा हो गया। "यह तुम क्या कह रही हो ?"

"कोई नई बात नहीं कही मैंने जो तुम्हारी समझ में न आ सके। मैंने वही किया है जो हमारी दुनियाँ का दस्तूर है। और हमारी दुनियाँ का दस्तूर क्या है यह तुम्हें किसी भी रंडी के कोठे पर चढ़ने से पहले ही जान लेना चाहिए था।"

"क्या तुम इतनी ही जलील हो या मजाक कर रही हो मेरे साथ।"

"मजाक तो तुम कर रहे हो मेरे साथ। जो मेरे पास गरीबी और अपनी परेशानी का रोना रोने आ गये हो।" वह मुस्कराई। "जलील तुम हो तवायफ़ की गोद को अपनी माँ की गोद समझ उसमें पनाह ढूंढ़ रहे हो।" वह ज़ोर से गरजी।

"ज़लील कहीं के। गधे, उल्लू के पट्ठे, निकल जाओ मेरे पास से। मेरे बालाख़ाने से नीचे उतर जाओ। वरना नौकरों से जूते लगवा कर निकलवा दूंगी।"

"क्या मेरी मुहब्बत और मेरी वफ़ाओं का यही बदला है जो मुझे दे रही हो।" उसका दिल रो पड़ा, "मेरे हज़ारों रुपये की मेहनत बस इतनी ही थी।"

और फिर वह सितारा के सामने गिड़गिड़ाने लगा, "रहम करो मेरे ऊपर सितारा। नहीं तो मुझे खुदकशी कर लेनी पड़ेगी।"

"यह कोई नई बात तुम नहीं करोगे। इसलिए कि हमारी दुनियाँ में ऐसा आए दिन होता रहता है।"

"तुम्हारे सीने में दिल है सितारा ?"

"दिल तो हर जानदार के सीने में होता है। मगर मेरे सीने में जो दिल है, वह तवायफ़ का दिल है और तवायफ़ के दिल में जर्द जवाहर की दुनियाँ होती है। उसमें अहसास की दुनियां आबाद नहीं होती। समझे।" और फिर वह बड़े गहरे अन्दाज़ में बोली। "अच्छा तो बस आप ठंडे-ठंडे तशरीफ़ ले जाइए यहाँ से।"

"सितारा," सरफ़राज का खून उसकी रगों में लम्बा बन कर मचलने लगा, "मैं तेरा खून कर दूँगा।"

और वह सितारा पर एक भूखे शेर की तरह झपट पड़ा। उसने सितारा का गला घोंट डाला। उसने अपने दांतों से सितारा की नाक काट ली। वह सितारा की नाक काट कर हांफ रहा था। और सितारा एक ज़ोरदार चीख के साथ उसी जगह फ़र्श पर गिर कर बेहोश हो चुकी थी। सितारा के कोठे पर एक भीड़ जमा हो गई और पुलिस ने सरफ़राज के हाथों में हथकड़ियाँ डाल दीं।

सितारा को हस्पताल पहुँचा दिया गया। सितारा के अपने आदमियों ने मार-मार कर सरफ़राज की हड्डी पसली एक कर दी। वह सारी जान से लहु-लुहान हो गया।

●

"फ़रमाइए," वह बड़े प्रेम से बोले, "मैं आप लोगों के लिए क्या कर सकता हूँ।"

"यह हैं महाशय धर्म सेवक जी," सेठ छगनमल ललवानी ने महाशय धर्म सेवक का रईस मियाँ से परिचय कराया। "आप गऊ रक्षा कमेटी के प्रधान हैं और आपके पास कमेटी की मदद के लिए हाजिर हुए हैं।"

"हम आपका नाम सुनकर हाजिर हुए हैं," महाशय धर्म सेवक जी बोले। "हमने पूरे भारत में गो-रक्षा आन्दोलन शुरू कर रखा है। बहुत बड़ा काम हो रहा है। कस्बा-कस्बा और गाँव-गाँव गऊशाला बना रहे

हैं और गाय हत्या बन्द करो के आन्दोलन चलाए जा रहे हैं। सरकार से टक्कर भी हम ले रहे हैं। अब तक इस काम के लिए हमने लाखों का फण्ड जमा किया है। महाराजा ग्वालियर और डालमियां सेठ हमारे इस आन्दोलन के सहायक हैं।"

"फ़रमाइए। मैं इस सिलसिले में आपकी क्या सेवा करूँ।"

"जो भी सहायता आप देंगे। हम धन्यवाद के साथ स्वीकार कर लेंगे।"

"मैं अपनी तरफ से इस नेक काम के लिए एक हज़ार का नज़राना पेश करता हूँ। कबूल कर लीजिए।"

"धन्यवाद साहब," महाशय धर्म सेवक जी धन्यवाद के तौर पर अपनी जगह से एक ज़रा सा उठे।

"आपकी यह भेंट हमारे लिए लाख से कम नहीं है।"

"आप क्या पियेंगे, क्या मँगवाऊँ।"

और जवाब में महाशय जी अपने दोनों हाथ जोड़ कर बोले।

"धन्यवाद जी। वह बात दरअसल यह है कि मैं। मेरा मतलब है कि···" और रईस मियाँ उनकी मुश्किल आसान करते हुए बोले।

"आप मुसलमानों के यहाँ की कोई चीज़ नहीं खाते पीते।"

"जी हाँ, जी हाँ!" वह हड़बड़ा गए।

"क्षमा कीजिएगा, जागीरदार साहिब, धर्म।"

"कोई बात नहीं," रईस मियाँ प्रसन्न मुद्रा से बोले।

"अपने धर्म का पालन तो करना ही चाहिए।"

"अच्छा तो फिर आज्ञा दीजिए," महाशय जी उठ खड़े हो गए।

रईस मियाँ भी अपनी जगह से उठे। और वह नमस्ते करते हुए जाते-जाते बोले। "अभी बहुत काम पड़ा है, बहुत बड़े-बड़े काम निपटाने हैं।" और वह विदा हो गए। रईस मियाँ अपनी जगह बैठ कर हुक्के से शौक फ़रमाने लगे। वह इस समय किसी गहरी सोच में खोये हुए थे।



कानपुर के एक मालदार मुहल्ले में एक शानदार फ्लैट के ड्राइंग-रूम में महाशय धर्म सेवक जी ललवानी पालती मारे सोफ़े पर बैठे हुए थे। वह एक आदमी से कह रहे थे।

"भाई दस हज़ार से ज़्यादा इस समय मेरे पास नहीं है। तुम दस हज़ार ले जाओ और रसूला से कहो कि इतने में अपना काम चला ले। दो दिन के बाद भगवती प्रसाद का रुपया आएगा तो और भिजवा दूँगा। और उससे कहना कि मैं यहाँ से परसों बम्बई के लिए रवाना हूँगा। वह इतने दिनों में कम-से-कम डेढ़ सौ जानवर किसी-न-किसी तरह गोवा पहुँचा दे। और यह कह देना कि इस बार अच्छी होनी चाहिएँ। गोवा सरकार ने पिछले महीने हमारी भेजी हुई पचास गायें कम दाम से ली हैं। जो गायें दी थीं वह कमज़ोर थीं।" फिर वह बोले, "तुम आज ही बम्बई चले जाओ। और हाँ वह पाकिस्तान को जो हम सूती कपड़े की गाँठें भेज रहे थे उसका क्या हुआ ?"

"वह पाकिस्तान पहुँच गई हैं महाशय जी। मगर कस्टम वालों को इस बार कुछ अधिक ही खिलाना पड़ा।"

"कोई बात नहीं," वह खुश होकर बोले, "काम तो बन गया।"

"वह तो हो गया।"

"बस। बस यही चाहिए।" हम अगले साल में यह कसर पूरी कर लेंगे।" और फिर उन्होंने आवाज़ दी।

"रामभरोसे ! अबे ओ रामभरोसे।"

और जब रामभरोसे अपना अँगोछा सँभालते हुए उनके सामने आकर खड़ा हो गया तो वह उसे देखते ही चीखे।

"अबे उल्लू के पट्ठे, कहाँ गया था। गिलास कहाँ है और बोतल का क्या हुआ ?"

"नासिक व्हिस्की नहीं मिली महाराज। सोलन ले आया हु। मछली भी फ़राई तैयार है। बस लेकर आ ही रहा था।"

"अबे," वह बुरा सा मुंह बनाकर बोले, "अभी तक तू लेकर हीं

आ रहा था। जा भाग और जल्दी लेकर आ। पीने का वक्त निकला जा रहा है।"

और फिर वह फौरन बोले।

"सामान देकर घनश्याम के यहाँ जा। कहना कि मेरा दो सौ रूपया ओपन में चौका खेल दे। जा जल्दी। नहीं तो ओपन का वक्त निकल जाएगा।" और फिर वह बड़बड़ाने लगे।

"आजकल के नौकर बड़े कामचोर हो गए हैं साले, नमकहराम।"



"नमकहराम कहीं के," सरफ़राज सलाखों के पीछे से चीखा। "तुम अच्छे दोस्त हो मेरे। मैंने तुम पर हज़ारों खर्च किए और तुम मुझे दस या पाँच रुपया भी क़र्ज़ न दे सके। एक पल के लिए भी तुमने यह गवारा न किया कि मैं तुम्हारी बैठक में बैठा रहूँ। और अब तुम मेरी ज़मानत का इन्तज़ाम भी नहीं कर सकते।"

"बकवास मत करो," जीवन त्योरियों पर बल डाल कर बोला, "एक तो मैं हवालात में तुमसे मिलने आया। ऊपर से तुम अब बकवास कर रहे हो। मैं क्या, इतने बड़े जुर्म की ज़मानत कोई देने के लिए तैयार नहीं है। उधर सितारा की हालत भी हस्पताल में अच्छी नहीं है। अगर वह कहीं मर गई तो तुम्हें फाँसी हुए बिना न रहेगी।"

"सितारा का नाम न लो मेरे सामने," सरफ़राज ने उसी जगह हवालात के ऊपर थूक दिया।

"मैं तो उसे मार डालता। मगर न जाने कैसे बच गई सुअर की बच्ची।"

"अच्छा तो मैं चलता हूँ।" जीवन बोला, "तुम्हारी ज़मानत का कोई इन्तज़ाम नहीं हो सकता। अगर कहो तो रईस मियाँ से जाकर खुशामद करूँ।"

"हरगिज़ नहीं," सरफ़राज बोला।

"मैं अब उन लोगों को अपना मुंह नहीं दिखा सकता। तुम तो इस खबर को भी वहाँ न पहुँचने देना और तुम्हारा यही अहसान मेरे

लिए बहुत है।"

"तो फिर मैं जाता हूँ।"

"जाओ।"

जीवन वहाँ से चला गया। और सरफ़राज दीवानों की तरह हवालात की सलाखों में अपना सिर पटकने लगा। उसका सिर लहू-लुहान हो गया था।

●

"न जाने क्यों मेरा दिल आप ही आप डूबा जा रहा है," रज़िया एकदम व्यग्र होकर बोली, "न जाने मेरा बच्चा कहाँ और किस हाल में है।"

जीवन रईस मियाँ से कह रहा था।

"आपका बेटा सरफ़राज हवालात में है। उसने कानपुर की मशहूर तवायफ़ सितारा बाई की नाक काट ली है। उसकी ज़मानत कोई नहीं दे रहा।"

और यह सुनकर रईस मियाँ का सिर चकरा गया और वह दाँत पीसते हुए बोले, "दूर हो जाओ मेरी नज़रों के सामने से। मर जाने दो उस नालायक को। मैं उसे आक कर चुका हूँ। अब उसके अच्छे-बुरे से मुझे कोई सरोकार नहीं है। खुदा करे कि उसे फाँसी हो। और इस तरह मेरी इज्ज़त को धूल में मिलाने वाले का खात्मा हो जाए।"

उन्होंने जीवन को ज़लील करके अपनी बैठक से बाहर निकाल दिया। और फिर वह अन्दर आए। वह आते ही गरजने लगे।

"सुन लिया तुमने," वह अपने होंठ काटते हुए बोले, "आपके साहबज़ादे ने हमारे खानदान की नाक काटने के बाद कानपुर की तवायफ़ सितारा बाई की नाक काट ली है, और अब वह पोलीस की हवालात में बन्द है।"

और यह कहते-कहते उनका सिर चकरा गया। और वह अपना सिर पकड़ कर उसी जगह बैठ गए। रज़िया के होश उड़ गए। और वह उन्हें सँभालते हुए रोकर बोली।

"किसने यह मनहूस ख़बर सुनाई आपको।"

"उसके लफंगे दोस्त जीवन ने।"

"तो फिर खुदा के लिए कुछ कीजिए।" रज़िया अपने दोनों हाथों से अपना कलेजा मसोल रही थी, "कुछ भी हो उसे माफ़ कर दीजिए। बचा लीजिए उसे।..."

"मैं क्या कर सकता हूँ अब। जुर्म उसने संगीन किया है। सज़ा मिलकर ही रहेगी।" वह रो पड़े।

"अच्छी नेकनामी इसकी तरफ से हमें मिली है।"

"खुदा के लिए कुछ कीजिए," रज़िया रोने लगी, "मुकदमे की पैरवी तो आपको करनी चाहिए।"

"ज़रूर," वह लगभग गला फाड़ कर चिल्लाए, "ताकि मेरी इज़्ज़त का नीलाम हज़ारों के बीच में हो। मैं उसका बाप बन कर अपनी इस बेइज़्ज़ती की जगह मर जाना ज़्यादा पसन्द करूँगा," वह निर्णयात्मक ढंग से बोले, "उसका नाम न लेना मेरे सामने। उसे अपनी करतूतों की सज़ा भुगतने दो। अगर आपने उसका नाम फिर लिया तो मैं कहे देता हूँ कि मुझसे बुरा कोई न होगा।" वह अपना सिर पकड़े बैठे थे और अपनी इतनी बड़ी बेइज़्ज़ती पर उनकी आँखें सावन भादों की तरह बरस रही थीं।



रज़िया की आँखें सावन भादों की तरह बरस रही थीं और रुख़साना भी ज़ार-ज़ार रो रही थी। रज़िया ने चोरी-चोरी जीवन को बुलवाया था। और वह उससे पर्दे की ओट से बातें कर रही थीं।

"तुम मेरे बेटे के दोस्त हो भैया। उसके लिए कुछ करो।"

"मैं क्या कर सकता हूँ माँ जी।" जीवन बोला, "मैंने बहुत कोशिश की मगर इतने बड़े जुर्म की ज़मानत नहीं हो रही। बहुत ज़्यादा रुपयों की ज़रूरत है।"

"कितना लगेगा," रज़िया ने पूछा।

"कम से कम चालिस हज़ार नकद की ज़रूरत है, मे पास इतना

कहाँ है।"

रज़िया के पास कुल पचहत्तर हज़ार जमा थे। जिसमें से चालिस हज़ार के करीब सरफ़राज निकाल कर ले गया था। और अब उसके पास सिर्फ पैंतीस हज़ार बचे थे। वह सोचने लगी। फिर वह जीवन से बोली, "मैं तुम्हें पैंतीस हज़ार नकद देती हूँ भैया। बस इतना ही बचा है मेरे पास," वह गिड़गिड़ाने लगी। "तुम किसी न किसी तरह इतने में मेरे बेटे को छुड़ा लाओ।"

"मगर चालीस हज़ार तो सिर्फ़ ज़मानत के लिए हो गए। फिर मुकदमा होगा और उसका खर्च अलग होगा। कम से कम दस हज़ार इस मुकदमे के लिए लाज़मी है।"

"तो तुम ऐसा करो। मैं तुम्हें पैंतीस हज़ार नकद देती हूँ। कुछ ज़ेवर ले जाओ और उन्हें दस पन्द्रह में बेच दो।"

"अच्छा", जीवन का मारे खुशी के बुरा हाल हुआ जा रहा था। मगर वह बन कर बोला, "लाइए, देखता हूँ। अगर कुछ और लगेगा तो मैं अपने पास से भी लगा लूँगा। आखिर को सरफ़राज मेरा दोस्त है। भाई की तरह मैं उसे प्यार करता हूँ। और अगर उसका इतना ख्याल मुझे न होता तो मैं इतनी दौड़ धूप क्यों करता। उसके लिए ज़मींदार साहब के पास क्यों आता और वह मुझे ज़लील करके और गालियाँ देकर क्यों निकाल देते।"

"उनकी बात जाने दो, बेटा," रज़िया बोली, "वह सरफ़राज से नाराज हैं। तुम्हारी बेइज्ज़ती के लिए उसकी तरफ़ से माफी मैं मांगती हूँ।"

"कोई बात नहीं।" जीवन मुस्करा रहा था। "वह भी क्या मेरे बाप की जगह नहीं हैं। मैं बड़ों की बात का बुरा नहीं मानता।"

और फिर रज़िया ने पैंतीस हज़ार नकद लाकर जीवन के हवाले कर दिए और पन्द्रह सोलह हज़ार के ज़ेवर भी उसने उसे दिए और रोकर बोली।

"भैया! तुम मेरा यह काम कर दो। जिन्दगी भर अहसान मानूँगी। देखो इन तमाम बातों का ज़िक्र तुम किसी से भी न करना।

"किसी को कानों कान खबर न होगी," जीवन का मारे खुशी के हार्टफेल हुआ जा रहा था।

वह यह सारी चीज़ें लेकर चला गया। और जब वह जा चुका तो रुख्साना बोली।

"अमी जान। क्या पता कि जीवन ने यह सब हमसे धोखा किया हो। मेरा तो दिल कह रहा था कि वह पैंतीस हज़ार और ज़ेवर सब खा पी जाएगा। और भाई जान के लिए कुछ भी न करेगा। वह अपने ही हाल में रहेंगे और आपका सारा जोड़ा बटारा सब धूल में मिल जाएगा।"

"अपने नसीब", रज़िया आश्चर्य से बोली।

"जो होगा देखा जाएगा। अगर कुछ न हुआ तो समझ लूंगी कि यह सब कुछ मैंने सरफ़राज के लिए जमा किया था। ममता का फर्ज़ तो पूरा हो गया। आगे सरफ़राज और उसका मुकद्दर।"

●

"तुम्हारा मुकद्दर भैया सरफ़राज।"

जीवन ने पांच का एक नोट सरफ़राज को दिखाते हुए चुपके से पुलिस के सिपाही की ओर बढ़ाते हुए कहा।

"मैं तुम्हारे मना करने के बाद भी अब्बा हज़ूर के पास गया था। मैंने उनकी बहुत खुशामद की। बहुत हाथ-पाँव जोड़े मैंने। मगर उन्होंने मुझे ज़लील करके अपनी हवेली से निकाल दिया। और कहा कि सरफ़राज को अगर फाँसी हो जाए तो मुझे ज़्यादा खुशी होगी। वह ज़मानत तो एक तरफ तुम्हारे बारे में एक लफ़्ज़ भी सुनने के लिए तैयार न हुए", वह बोला, "और फिर मैंने तुम्हारी अमी जान से किसी न किसी तरह कहलवाया।"

"हाँ फिर," सरफ़राज एक बार ही बेचैन होकर बोला।

"उधर से क्या जवाब मिला ?" वह स्वयं से बोला, "अमी जान तो जरूर बेचैन हो गई होंगी।"

"हूँ", जीवन व्यंगात्मक ढंग से मुस्कराया। "उन्होंने मुझे बुलाकर

बात की। और मैं समझा कि बस अब काम बन जाएगा। मगर उन्होंने मेरी किसी बात के सुनने से पहले ही तुम्हारे नाम पर कोसना और गालियाँ शुरू कर दी। उन्होंने मुँह बना कर कहा, मर जाने दो उस नामुराद को, चोर ज़माने भर का। अगर वह जेल में सड़ जाए तो मुझे ज्यादा खुशी होगी।"

"हाय", सरफ़राज के कलेजे पर बड़े ज़ोर का घूँसा पड़ा।

"जी हाँ", जीवन बोला, "मैंने खुशामद की कि ज्यादा नहीं हज़ार दो हज़ार का बन्दोबस्त कर दीजिए तो कुछ हो सकता है। मगर वह बोली कि मैं उस जैसे कमीने के लिए एक धेला भी न दूंगी। कुत्ते की मौत मरे नामुराद तो अच्छा हो।"

"कोई बात नहीं," सरफ़राज की गर्दन शर्म से नीचे झुक गई। और उसके सीने से एक आह निकल गई। "मेरा मुकद्दर।" वह रो दिया।

"तुम कोई चिन्ता न करो।" उसने अपना फ़र्ज़ पूरा कर दिया।

और फिर उसका मुकदमा पेश हुआ। और उसने बड़ी ही सफ़ाई से पहली ही जिरह में अपने जुर्म का इकबाल कर लिया।

इस पहली ही पेशी में सरफ़राज के इकबाल जुर्म पर इस मुकदमे का फ़ैसला हो गया। उसे पाँच साल की कठोर कारावास की सज़ा का हुक्म सुना दिया गया।

और उसको अपनी सज़ा भुगतने के लिए पुलिस अपनी बंद कार में ले जाकर जेल की चारदीवारियों में छोड़ आई।

●

शाहिदा बेगम उर्फ़ शदो बीबी रईस मियाँ की छोटी बहिन थी और रईस मियाँ उससे बेहद प्रेम करते थे। वह रईस मियाँ से सिर्फ चार साल छोटी थी। मगर रईस मियाँ उससे इस तरह प्यार करते थे जैसे कि वह उनसे दस पन्द्रह साल छोटी हो। वह उन्हें अपनी सगी औलाद की तरह चाहते थे। और प्यार करते थे। वह समझते तो यही थे कि उनकी यह बहिन भी उन्हें इसी प्रकार प्रेम करती है जिस प्रकार कि वह

उसे प्यार करते हैं। मगर सत्य इसके बिल्कुल विपरीत था।

वह रईस मियाँ को सिर्फ़ अपने मतलब और अपनी गर्ज़ के लिए प्यार करती थी। वह बड़ी ज़माना-साज़ औरत थी। और उसे हमेशा अपने मतलब से मतलब था और बस। वह रईस मियाँ को अपने मतलब के लिए प्यार करती थी।

शदो बीबी की शादी और रईस मियाँ की शादी उसके मां-बाप ने दोनों के हेरे फेरे से की थी। दो दिन पहले रईस मियाँ ब्याहे गए थे। और इसके दो ही दिन बाद शदो बीबी दुल्हन बनकर अपने ससुराल सिधारी थी।

उसके पति बम्बई में थे और पुलिस के महकमे में काम करते थे। घर के भी रईस थे और उनके बाप के पास अच्छी खासी जायदाद थी और छोटा-मोटा बिज़नेस भी था।

शदो बीबी जब भी ससुराल से अपने मायके आतीं, रईस मियाँ की खुशी की सीमा न होती। और वह अपने बहनोई अलताफ़ हुसैन, अपनी बहिन और अपने भाँजे सराज और भाँजी सलमी के आगे बिछ-बिछ जाते।

और जब बहिन वापिस जाने लगती तो वह उसे हज़ारों रुपये नकद देते और हज़ारों के तोहफे उसकी नज़र करते। कभी ऐसा न हुआ कि बहिन आई हो और रईस मियाँ ने हज़ारों न खर्च किये हों।

और इस दफा भी उसकी बहिन शदो बीबी आई और वह निहाल हो गए। वह अकेली आई थी और उसके साथ कोई नहीं आया था।

रईस मियाँ के घर में सरफ़राज के कारण एक खास प्रकार की उदासी और बेचैनी छाई हुई थी। मगर रईस मियां और उसके सारे घर ने शदो की दिल खोलकर आवभगत की। खातिर तवाजा की और अपनी किसी बात से अपने गम का प्रदर्शन न किया।

खुद रज़िया ने भी बेटे के ग़मों के विपरीत शदो बीबी का दिल खोलकर स्वागत किया और आवभगत की।

"सरफ़राज नहीं दिखाई देता।" शदो बीबी ने आने के दूसरे दिन सरफ़राज के बारे में पूछा।

"वह बाहर गया हुआ है," रज़िया ने कलेजे पर पत्थर रख कर उत्तर दिया।

"कहाँ गया है ?" शदो ने पूछा।

"दोस्तों के साथ टूर कर रहा है," रज़िया ने बात बनाई, "कालेज के लड़कों के साथ आगरा दिल्ली वगैरह गया है।"

और फिर रज़िया के दिल में किसी ने बड़ी ज़ोर से चुटकी ली और वह रुखसाना को अलग ले जाकर बोली।

"बेटी ! तुम किसी तरह पता तो लगाओ कि वह कम्बख्त जीवन आखिर मर कहाँ गया। उसे तो आज आठ दस दिन हो गए फिर खबर तक न दी कि क्या हुआ।"

और यह सुनते ही रुखसाना की आँखों में आँसू आ गए। वह बोली, "अमी जान। मैंने आपसे कहा नहीं था कि आपको रंज होगा। स्कूल की लायब्रेरी में अखबार आते हैं। उसमें मैंने पढ़ लिया था कि भाई जान को पाँच साल की सज़ा हो गई है। उन्होंने अदालत के सामने जुर्म इकबाल कर लिया था।"

यह सुनकर रज़िया के होश उड़ गए। उसका कलेजा यह सुनते ही उसके मुँह को आ गया। और वह एक सांस के साथ गश खाकर उसी जगह गिर पड़ी। और जब उन्हें होश आया तो रुखसाना ने उससे कहा।

"मुझे रत्न प्रभा से मालूम हुआ है कि वह कमीना जीवन बम्बई भाग गया है," वह बोली।

"वह ज़रूर आपकी जमा की हुई दौलत से वहाँ ऐश कर रहा होगा।" वह बोली, "मैंने उस दिन कहा था न अमी कि मुझे जीवन की नियत पर शक है।"

"सरफ़राज की किस्मत," रज़िया ने शोक भरे स्वर में कहा, "मैं तो लुट गई। जोड़-जोड़ कर जो दौलत बुरे वक्त के लिए रखी थी, वह भी जाती रही। अब खुदा जाने कि कैसी पड़े और कैसी न पड़े। अब मांगोगी तो कफ़न के लिए मेरे पास एक धेला भी न निकलेगा।" उसकी आँखों में दुबारा अश्रु झलक आये।

"वाह री किस्मत। बेटा भी गया और दौलत भी गई। अपनी हार दोनों तरफ से हुई बेटी।" वह आह भर कर बोली, "खुदा बुरी औलाद दुश्मन को भी न दे।"

●

"खुदा बुरा वक्त किसी पर न डाले भैया," शदो बीबी ने एक गहरी साँस ली और इस पर रईस मियाँ बेचैन होकर बोले।

"साफ-साफ कहो शदो आखिर हुआ क्या।"

"आपसे साफ-साफ न कहूँगी तो फिर किससे कहूँगी भैया," वह आँखों से आँसू छलका कर बोली।

"आप तो जानते ही हैं कि पुलिस की नौकरी कितनी बुरी होती है। एक झूठे मुकदमे में वह फ़ँस गए हैं। उन पर एक बहुत बड़ी फर्म से रिशवत लेने का इलज़ाम है कि उन्होंने दो लाख की रिशवत ली हैं। और अब वह मुअत्तल है। और उन पर मुकदमा चल रहा है।"

"अरे," रईस मियाँ एकदम बौखला गए, "यह बात तुमने मुझे पहले क्यों न बताई।" वह होंठ काटने लगे।

"तुम चिन्ता न करो मैं अलताफ़ की बेगुनाही सिद्ध करने के लिए अभी ज़िन्दा हूँ।........."

"इसलिए तो आई हूँ भैया। मुकदमे के लिए और बाइंज तबरी होने के लिए कम से कम एक लाख की ज़रूरत अभी और है। अभी तक चालीस हज़ार खर्च हो चुके हैं।" वह रोने लगी।

"आप ही तो अपने हैं। और किसके पास जाऊँ। किसी तरह भी एक लाख का बन्दोबस्त कर दीजिए।"

"किसी और के पास जाएँ तुम्हारे दुश्मन," रईस मियाँ बड़ी मोहब्बत से चुलबुलाकर बोले, "मेरे पास लाख क्या पचास हज़ार भी नहीं है। मगर मैं अपने दो बड़े गाँव बेच कर एक लाख ले लूंगा तुम फिक्र न करो।"

"जुग-जुग जियो भैया," शदो बोली, "जिन्दगी भर मैं अपने भाँजी और भाँजों के लिए खैर की दुआ करूँगी। और भाई के लिए मैंतो

अपनी खाल की जूतियाँ तक बनवा दूँगी । और यह एक लाख मैं आपको वापिस कर दूँगी भैया ।"

"यह बातें छोड़ो," रईस मियाँ बोले, "तुम दो चार दिन ठहरो । मैं इंतज़ाम किये देता हूँ ।"

और फिर उसी वक्त रईस मियाँ ने भूँगीलाल को बुलवाया, "भूँगीलाल !" वह बोले, "तुम मुझ पर एक एहसान करो ।"

और दस बार वह इनकी जूतियाँ चाटने वाला भूँगीलाल जो कि इनके सामने अदब से हाथ जोड़े खड़ा रहता था, उनके सामने बड़ी शक्ति से तन के तख्त पर आलती-पालदी मार कर बैठ गया । और बड़ी सख्ती से बोला ।

"देखिए, रईस मियाँ ! अब मैं आपको एक पाई भी न दूंगा," वह बोला, "कारण कि ज़माना बुरा है ।"

"मुझे एक लाख की ज़रूरत है," रईस मियाँ गिड़गिड़ाने वाले अन्दाज़ में बोले । "तुम मुझसे मेरे दो गांव रसूलपुर और महाशाला लिखा लो ।"

"दो गांव से क्या बनेगा रईस मियाँ," वह बोला, "ब्याज इतना हो गया है कि एक लाख यह और पिछला मिलाकर मय ब्याज के छः गांव से भी पूरा न होगा ।"

"क्या बकता है," रईस मियाँ को गुस्सा आ गया और वह रईस मियाँ की एक ही डाँट पर तख्त से नीचे खड़ा हो गया ।

"आप तो नाराज़ हो रहे हैं, रईस मियाँ," और स्वभावानुसार उसने दोनों हाथ फिर जोड़ दिए । खाता हाथ से छूट कर नीचे गिर पड़ा ।

"सच अरज करता हूँ कि मेरे पास अब रुपया नहीं है ।"

"पैदा करो," वह ज़ोर से भारी आवाज़ में बोले, "वरना मैं तुम्हें गोली मार दूंगा ।"

"पैदा क्या करूँ खाक रईस मियाँ," वह हकलाते हुए बोला, "बुढ़ापा आ गया है साहब । अब मुझसे कुछ न हो सकेगा ।"

"पैदा," वह मुस्कराये, "मैं रुपए की बात कर रहा हूँ...।"

"ओह," वह हंसने लगा, "अच्छा तो आपके हुक्म पर एक लाख कहीं से भी करके देता हूँ, मगर सरकार, रसूलपुर और महाशाना के साथ ही साथ आपको बलीपुर और वह बीर स्यानू," वह हड़बड़ा गया।

"मतलब यह सरकार कि बस समझ लीजिए हजूर कि मर जाऊँगा।"

"अच्छा, अच्छा," रईस मियाँ एक ठंडी सांस के साथ बोले।

"तुम एक लाख का बन्दोबस्त करो। मैं यह तीनों गाँव और वह एक बेरियां लिखे देता हूँ।"

और वह खुश हो गया, "ईश्वर आपको जीता रखे मालिक। आप ही जैसे रईसों के सहारे तो हम जैसे गरीबों की गाड़ी चलती है।" और फिर दबी जुबान से बोला।

"और सरकार। मेरा मतलब है। ब्याज काट लूंगा।"

"मुझे पूरे एक लाख की जरूरत है," वह आँखें निकाल कर बोले, "तो फिर सरकार," वह थूक निगलने लगा और फिर अपने होंठों पर अपनी ज़ुबान फिराते हुए बोला।

"वह आमों के पास जो खेत सरकार। मेरा मतलब है कि ब्याज बहुत ज़्यादा हो गया है।"

"वह भी लिख दूंगा।"

और यह सुनते ही वह पृथ्वी को घूमने लगा। "ईश्वर अगर रईस बनाए तो आप जैसा दिल वाला, सरकार की जय हो।"

और वह खाता संभाल कर जाने लगा।

"कब आते हो।"

"शाम तक सरकार। कागज़ात बनवाकर साथ लाना है न सरकार।"

"अच्छा। अच्छा।" रईस मियाँ बुझे दिल के साथ बोले, "मगर शाम तक ज़रूर आ जाना।"

"समझ लीजिए ना कि आ गया हूँ सरकार" वह चला गया और रईस मियाँ एक ठंडी साँस भरकर उसी जगह तख्त पर लेट गए। वह छत की कड़ियाँ गिन रहे थे।

शदो बीवी नोटों के बंडल गिन रही थी। आखिर हज़ार के नोट गिन कर वह मुस्कराई।

"खुदा आपको जीता-जागता रखे भैया।" वह रईस मियाँ की बलायें लेने लगी। "खुदा ने चाहा तो आपकी एक-एक पाई चुका दूंगी।"

और फिर वह पास ही बैठी हुई रज़िया से लिपट गई।

"भाभी ! खुदा की कसम मैं आपके इस अहसान को कभी न भूलूंगी। अगर मैं सारी ज़िन्दगी आपकी जूतियाँ धो धोकर पीऊँ तो भी कम है।"

और फिर उन्होंने इकबाल को लिपटा लिया।

"बेटा, यह तुम्हारी अमानत है जो मैं लेकर जा रही हूँ। जब तुम्हें ज़रूरत होगी, पाई पाई चुका दूंगी। अगर इस अमानत में एक ज़रा सी भी खयानत करूँ तो मरते वक्त कलमा नसीब न हो।"



"मरते वक्त कलमा नसीब न हो अगर मैं आपसे झूठ कह रही हूँ," रज़िया आँखों में आँसू भर कर बोली, "आपके सिर की कसम, मेरे पास इन गहनों के सिवा और कुछ नहीं है। यह है और दो-अढ़ाई हज़ार शायद इधर-उधर ढूंढ़ने से मिल जाएँ।"

"फिर तो बड़ी मुसीबत है।" रईस मियाँ के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही थीं। "ज़मीदारी उन्मूलन का सरकार ऐलान कर चुकी है और इसीलिए भूँगीलाल सूद के लिए पाँव पसार रहा है। अगर बीस हज़ार उसे कल न दिये गए तो बड़ी मुसीबत आ जाएगी। मेरे पास एक पाई नहीं और अब जागीर पर कोई मारवाड़ी धेला भी देने को तैयार नहीं है। यह हवेली नीलाम हो जाएगी।"

"तो अब यह ज़ेवर ही भूंगीलाल को उठा कर दे दीजिए न।" रज़िया बोली, "इज्ज़त बच जाए, यही बहुत है।"

"गहने भी दिए तो बेइज्ज़ती से कम नहीं है।" रईस मियाँ उलझ कर बोले।

"कुछ समझ में नहीं आता कि क्या करूँ। यह गहने देकर तो अपने पास सिवा हवेली के और कुछ न बचेगा। मेहमानखाने का खर्च अलग रुक रहा है।"

वह हाथ मल रहे थे। वह एक ठंडी साँस भर कर बोले, "खुदा! तू मेरी इस बेकसी की लाज रख दे? गुनहगार हूँ माफ कर दे, मेरे गुनाहों को।"

"क्या बताऊँ?" रज़िया रोने लगी।

"मेरे तो भाई भी नहीं हैं। न कोई रिश्तेदार ही बैठा है कि उससे जाकर माँग लाऊँ।"

"छोड़ो भी।" रईस मियाँ ने रज़िया को तसल्ली देनी चाही।

"तुम फिक्र न करो। मैं देखता हूँ।"

और वह उठ कर बाहर चले गए। उनकी चाल में चिन्ता स्पष्ट थी।

"इन सब बातों से काम न चलेगा, रईस मियाँ।" भूँगीलाल अब शेर बन कर बोल रहा था।

"आप तो अपनी जागीर के मुआवज़े का इस्टेम्प मुझे लिखकर दे दीजिए। जब भी मुआवज़ा मिलेगा, मैं वसूल कर लूँगा। समझ लूँगा कि ब्याज नहीं मिला। घाटा पड़ेगा।" वह बड़बड़ाया, "मैं तो आपको लाखों देकर फँस गया। न जाने सरकार जागीरदारों और ज़मीदारों का रुपया कब चुकाए।"

"मगर।"

अब उसमें रईस मियाँ की बात काटने की जुर्रत पैदा हो गई थी। बोला, "ना। ना। रईस मियाँ। अगर आप मुआवज़े वाला इस्टाम्प लिखकर न देंगे तो मैं मजबूर होकर अपनी रकम की अदायगी के लिए अदालत का दरवाजा खटखटाऊँगा और फिर आपकी इज्जत का जो नीलाम होगा, उसकी ज़िम्मेदारी मुझ पर न होगी।"

"मैं इस्टाम्प लिखे देता हूँ। तुम मुवावज़े में अपना रुपया पहले ले लेना।"

"हाँ।" वह हँसा, "यह की है आपने रईस मियाँ, अकलमन्दों वाली

बात ।"

"अच्छा तो अब बोहनी कराइए ।"

"क्या मतलब ?" रईस मियाँ जैसे कब्र से बोल रहे हों ।

"मतलब यह कि मैं खालीखूली जागीर के सरकारी मुवावज़े के इन्तज़ार में थोड़े ही इतने दिन बैठा रहूँगा। कुछ नकदी और अगर बिल्कुल न हो तो जेवर-शेवर । कम-से-कम थोड़ी बहुत तो सूद की इतनी बड़ी रकम में से बोहनी हो ।"

"अच्छा ।" रईस मियाँ खून का घूंट पीकर बोले । जैसे शेर को सलाखों में बन्द कर दिया गया हो । "मैं अभी इन्तज़ाम करता हूँ" और उन्होंने शरफ़ अलदीन को आवाज़ दी । और जब वह आया तो उन्होंने चुपके से उसके कान में पूछा, "खज़ाने में कुछ है ?" तुम ज़रा बाहर जाओ, भूँगीलाल" शरफ़ अलदीन ने बड़े बे-रुखे स्वर में भूँगीलाल को बाहर जाने को कहा और वह महत्वपूर्ण दृष्टि से शरफ़ अलदीन को देखता हुआ बाहर चला गया और उसके जाने के बाद शरफ़ अलदीन अपने मालिक रईस मियाँ के सामने हाथ जाड़ कर खड़ा हो गया ।

"सरकार ! खजाने में मेहमानखाने के एक हफ्ते के खर्च के सिवा और कुछ नहीं है । अलबत्ता आपका दिया हुआ मेरे पास इतना ज़रूर है कि उससे भूँगीलाल जैसे खून चूसने वाले मारवाड़ी का मुंह बन्द किया जा सके । मैंने आपके दस्तरखान से जो टुकड़े चुन-चुन कर जमा किए हैं । उन्हें लाकर हाजिर किए देता हूँ ।"

"शरफ़ अलदीन ।" रईस मियाँ ने शरफ़ अलदीन की इतनी बड़ी शराफत और वफ़ादारी को अपने गले से लगाया । वह बोले, "तुम फिक्र न करो शरफ़ अलदीन । हाथी लाख घट कर सवा लाख टके का रहता है । मैं अपनी छोटी-मोटी चीज़ें बेचकर भूँगीलाल का मुँह बन्द कर दूंगा ।"

"नहीं सरकार," शरफ़ अलदीन बोला, "गुस्ताखी माफ । मैं आपको हरगिज़ ऐसा न करने दूंगा । आपकी आन, आपकी इज्ज़त पर कुर्बान हो जाने ही में मेरी शान है । मेरे पास पच्चीस तीस हज़ार जमा है । सरकार । और वह आपके हैं । मैं उनसे भूँगीलाल का सूद चुकाये देता

हूँ ।" वह हाथ जोड़ने लगा, "और मेरी अर्ज़ माननी पड़ेगी सरकार । मैं आपकी इतने दिन की खिदमत का सिर्फ यही एक इनाम आपसे मांग रहा हूँ ।" वह रो पड़ा । आपको खुदा रसूल का वास्ता सरकार । मेरी इस सबसे बड़ा खुशी को पूरा हो जाने दीजिए ।"

आज वह रईस मियाँ के पाँव पकड़े हुए था और रो रहा था । और फिर वह अपने आँसू अपने दामन से पोंछता हुआ बाहर की तरफ भागा । "चल बे मारवाड़ी के बच्चे ।" उसने भूँगीलाल को एक धक्का दिया । "तू अपनी पौड़ी पर चल । सरकार ने इन्तज़ाम कर दिया है । मैं तेरी रकम लेकर अभी तेरी शादी में शरीक होने के लिए आ रहा हूँ ।"

❁

उत्तर प्रदेश सरकार ने जमींदारी का बिल पास कर दिया और जिस का शक हो रहा था वह शक यकीन बन गया और अब जागीरदारों और जमीदारों की सारी महानता और शान मिट्टी में मिल गई । ज़मीदार और जागीरदार जो कि ऐश्वर्यपूर्ण जीवन व्यतीत करने के अतिरिक्त और कुछ नहीं जानते थे बिलू-बिलू करने लगे और अब उनकी समझ में यह नहीं आ रहा था कि आखिर इसके बाद करेंगे क्या ।

रईस मियाँ ने जब पहले पहल यह खबर सुनी थी कि कांग्रेस सरकार ज़मींदारी सिस्टम खत्म करने वाली है तो वह केवल मुस्करा कर रह गये थे । वह इस बात पर हँसते थे कि ऐसा असम्भव है । बाप दादा की जायदाद और जागीर छीन लेने की किस में हिम्मत है । जैसे जागीरदारी और ज़मीदारी न हुई लूट का माल हो गया कि जब जी में आये एक घुड़की देकर धरवा ली ।

एक दिन तहसीलदार साहिब उनके यहा आकर ठहरे और उन्होंने खुद इस बात की चर्चा की तो उनके कान खड़े हो गए और वह तहसीलदार साहिब से बोले, "क्या सचमुच ऐसा होना मुमकिन है, तहसीलदार साहिब ?" उस वक्त उनकी दशा दयनीय थी ।

"क्यों साहिब । ऐसा होना नामुमकिन क्यों ?" तहसीलदार साहिब

मुस्करा कर बोले, "समझ लीजिए कि ऐसा हो चुका है।"

"क्या हमारी जागीरें और ज़मींदारियां सरकार के बाप की हैं।"

"बड़े-बड़े राजे और महाराजे और बड़े-बड़े नवाब भी तो यही कहा करते थे।" तहसीलदार साहिब ने मानो अपनी कही हुई बात की पुष्टि की। वह भी तो यही कहते थे कि रियासतें हमारी हैं। हमारे बाप दादों ने अपनी जान की बाज़ी लगाकर और अपनी जवान-मर्दी, बहादुरी और अक़्लमन्दी से रियासत बनाई थी और हासिल की थी। और अब किसकी मजाल थी कि वह हमारे बाप दादा की इस रियासत को छीन ले।"

और तहसीलदार की जुबान से यह उदाहरण सुनकर रईस मियां को पसीना आ गया। और वह मरी हुई आवाज़ में बोले, "यह तो आप दुरुस्त फ़रमाते हैं तहसीलदार साहिब।"

"फिर तहसीलदार बोला, "जब रियासतें न रहीं और खुद अंग्रेज इतना बड़ा मुल्क छोड़कर यहाँ से नौ दो ग्यारह हो गए तो यह छोटे-मोटे जागीरदार, ज़मींदार किस खेत की मूली हैं।"

और फिर उसी दिन से रईस मियां का दिल धड़कना शुरू हो गया था। और उसकी बाँई आँख फड़कने लगी थी। और वह यह सोचने लगे थे कि अब उनकी तबाही अपना जबाड़ा फाड़े उनके बहुत करीब आ पहुँची है।

इधर कर्ज़ लेने वालों के तक़ाज़े शुरू हो गए और भूँगीलाल ने तो जागीर के मुआवज़े पर अपना हक़ लिखवा कर रही-सही कसर पूरी कर दी।

इधर हर रोज़ का इतना बड़ा खर्च। प्रतिदिन की बख़शीशें, इतना बड़ा मेहमानखाना और लंगर। वह अपनी पगड़ी संभालने की चिन्ता में बीमार हो गए। उनका खुला हुआ हाथ और जब उनके खुले हुए हाथ पर चोट पड़ी तो वह अपनी मानसिक स्थिति कायम न रख सके और एक बार ही चीख पड़े।

"अब मेरी इज्ज़त का क्या होगा। वह एक बार ही अपनी मसहरी पर से उठकर बैठ गए। वह लोग क्या कहेंगे। क्या सोचेंगे वह लोग

जो मेरा नाम सुनकर अपनी ज़रूरतें पूरी कराने के लिए मेरे पास दूर-दूर से आया करते थे। मेरे मेहमानखाने का क्या होगा। और मेरी आन कब किसको मुंह दिखाएगी।"

और वह लगभग रो पड़े। और उनकी बेगम रज़िया की आंखों में आँसू आ गए। और वह उन्हें तसल्ली देने के तौर पर बोली। "आप काहे को फिक्र करते हैं। जिस अल्लाह ने इतनी बड़ी इज्जत दी है, वही इस इज्ज़त का निगेबान भी तो है। वह सब कुछ देख रहा है। वह आपको हरगिज़ हरगिज़ रुसवा व ज़लील न होने देगा।"

"और अभी हमारे पास इतना है कि हम अब्बा हज़ूर आपकी इज्जत पर आँच न आने दें। यह आखिर हमारे जेवर किस लिए हैं।" रुखसाना अपने अब्बा हज़ूर से लिपट गई।

"आप कोई फिक्र न कीजिए। आपका मेहमानखाना इसी तरह आबाद रहेगा और सबकी ज़रूरतें पूरी होती रहेंगी।"

"और नहीं तो क्या।" रज़िया बोली, "हाथी घटते-घटते भी सवा लाख टके का आखिर रहता ही है। सब कुछ ठीक हो जायेगा।"

"मगर।" वह निराशा के सागर में डूबते हुए बोले।

"यह आखिर चलेगा कितने दिन।"

"जब तक अल्लाह चलाएगा।" रज़िया बोली, "यह क्या, आपका यकीन अपने अल्लाह पर से उठ गया है खुदा न खास्ता।" उसने अपने पति को दिलासा दिया। "आज से आप सारी फ़िकरें छोड़ दीजिए। इन सब बातों का ज़िम्मा आज से मेरा है।"

"बेग़म।" वह अवरुद्ध कंठ से बोले। "हमने अपने मौला का क्या कसूर किया था।" वह एक कराहट के साथ बोले और उनके ऊपर एक गहरे किस्म का दिल का दौरा पड़ा। और सारा घर बेचैन हो गया। रज़िया व्याकुल होकर चीखी। "फौरन हकीम साहब को बुलाओ।"

हकीम साहब रईस मियां की नब्ज़ बड़े गौर से देख रहे थे। और पर्दे के उस तरफ रज़िया और रुखसाना का मारे घबराहट के बुरा हाल था। रईस मियाँ बेहोश थे।

इकबाल ने हकीम साहिब को बेताब होकर झंझोड़ डाला।

"क्या हुआ हकीम साहिब ! मेरे अब्बा हजूर को यह क्या हो गया ?"

"ठहरो बेटे।" उन्होंने इकबाल को तसल्ली दी। "कुछ नहीं। रईस मियाँ इंशाअल्लाह ठीक हो जाएँगे।"

और फिर उन्होंने नाड़ी पर से अपनी उँगलियां हटाईं। वह इस समय गौर व फिक्र की दुनियाँ में खोए हुए थे। पर्दे के पीछे रज़िया की आवाज़ सुनाई दी।

"हकीम साहब। खुदा के लिए उन्हें जल्दी होश में लाइए।" उनकी आवाज़ में बहुत ही घबराहट और बेचैनी थी।

"फिक्र न कीजिए हजूर बेगम साहिबा।" हकीम साहिब रईस मियाँ की तरफ ध्यानपूर्वक देखते हुए बोले, "अल्लाह अपना फ़ज़ल करेगा।" और फिर वह शरफ़ अलदीन की तरफ देखकर जो कि हैरान और परेशान उसी जगह खड़ा था बोले।

"देखो तुम इसी वक्त कानपुर भागो। मैं जो नुसखा लिखकर दे रहा हूँ वह मुहल्ला तलाकमहल कानपुर के अत्तार अब्दुल इलाही साहिब के यहाँ से बंधवाना। उसमें जो दो एक दवायें हैं वह यहाँ कहीं नहीं मिलेंगी। वहीं मिलेंगी। सिर्फ तलाक महल के अत्तार अब्दुल इलाही साहिब के यहां। मगर इन दवाओं की ज़रूरत बहुत जल्दी है।" हकीम साहिब परेशान होकर बोले, "तुम इतनी दूर जाकर इतनी जल्दी वापिस कैसे आ सकोगे ?"

"कानपुर यहां से छत्तीस मील दूर है।" शरफ़ अलदीन बोला। "और मेरी बिजली की तरह तेज़ घोड़ी छत्तीस मील का रास्ता सिर्फ एक घंटे में तय कर लेगी और वहां से मैं प्राइवेट मोटर में उल्टे पाँव वापस आ जाऊँगा।"

"नहीं।" अन्दर से रज़िया की आवाज़ सुनाई दी। "तुम एक पूरी लारी को आने जाने के लिए तय कर लो। वह जितना मांगे दे देना। उस पर जाओ और वापस आ जाओ। एक घण्टे में तुम जाकर आ भी जाओगे। वह अगर पांच सौ माँगे तो दे देना।"

"अच्छा।" शरफ़ अलदीन बोला, "नुसखा लाइए। मैं किसी न किसी तरहादवायें लेकर एक घंटे के अन्दर ही वापस आ जाता हूँ," और फिर शरफ़ अलदीन तो नुसखा लेकर भागा और हकीम साहिब ने उठते हुए कहा, "मैं खमीरा मुरदार और एक दवा भिजवा रहा हूँ। रईस मियाँ को फौरन दे दीजिएगा। मैं एक घंटे के अन्दर ही दोबारा फिर आता हूँ। दवा खाते ही पांच मिनट में होश आ जाएगा।"

"आप खुद ही दवा लेकर वापस आ जाइए हकीम साहिब।" अन्दर से आवाज़ सुनाई दी। "आप होंगे तो हमें तसल्ली रहेगी।"

"बहुत बेहतर।" हकीम साहिब बोले, "मैं दवा लेकर अभी हाज़िर होता हूँ।" और जैसे ही हकीम साहब बाहर गए। रज़िया और रुख-साना बड़ी बेताबी के साथ अन्दर आ गईं। दोनों की आँखों में आंसू थे। और होंठों पर आहें थी। और दोनों के चेहरे सुते हुए थे। ऐसा लग रहा था जैसे कि वह महीनों की बीमार हैं।

बाहर बैठक में रईस मियाँ के दोस्तों की भीड़ लगी हुई थी।



रईस मियाँ की हालत दो दिन तक न सुधरी। उन्हें हकीम साहिब की दवा से होश जरूर आ गया था। मगर हालत कुछ ज़्यादा शाँति-जनक नहीं थी। उन पर बार-बार दिन में कई-कई बार दिल के दौरे पड़े थे।

और फिर कानपुर से कई डॉक्टर एक साथ बुलाए गए। इलाहा-बाद से डॉक्टर मुकट जी को बुलवाया गया जो कि इस बीमारी का सबसे मशहूर डॉक्टर था।

मगर किसी की दवा से और किसी की तदबीर से रईस मियाँ को कोई लाभ न हुआ। दवाएँ और इंजेक्शन सब बेकार हो गए। और उनकी हालत बुरी से बुरी होती गई। उनकी हवेली में मातम की सफ़ा बिछी हुई थी।

रज़िया की समझ में कुछ नहीं आ रहा था। रईस मियाँ की क्षीण आवाज़ रज़िया के कानों में गूँजी। वह लपक कर उनके पास

पहुँची। और उनकी मसहरी पर उनके पास जाकर बैठ गई। "क्या बात है ?" वह बड़े दर्द से बोली, "घबराएँ नहीं। खुदा ने चाहा तो आप बिल्कुल ठीक हो जाएँगे।" वह अपने आँसुओं को अपने दिल में धार रही थी कि रईस मियाँ के होंठ हिले।

"तुम अपना मेहर।"

वह अपने होंटों पर अपनी ज़ुबान फिराने लगे कि रज़िया चीख कर उनसे लिपट गई। वह फूट पड़ी। "खुदा के लिए ऐसी बातें न कीजिए। आपको रसूल का वास्ता।" कि उन्होंने बोलने की कोशिश की। "मैं तुम लोगों को कुछ देकर नहीं जा रहा हूँ।" वह बहुत धीरे-धीरे और बड़ी तकलीफ से रुक-रुक कर बोल रहे थे। "जो कुछ था। वह सब कुछ खत्म हो गया। जागीर, जमीन, जायदाद, रुपया, पैसा···और और···और मैं इतना बदनसीब हूँ कि मैं तुम्हें सिर्फ कर्ज की नेमत और जवान बेटी की जिम्मेदारियाँ और मासूम इकबाल··· और और···।"

वह इसके आगे कोशिश के विपरीत भी कुछ न बोल सके। कुछ देर बाद उनकी कमज़ोर और क्षीण आवाज फिर सुनाई दी।

"मेहर।"

और रज़िया घबरा कर पछाड़ें खाती हुई बोली।

"मैंने अपना 'मेहर' माफ कर दिया," उसने चीख मार दी। "आपने मुझे बहुत कुछ दिया। क्या कुछ आपने नहीं दिया मुझे।" और फिर वह मारे रंज के बेहोश हो गई। इकबाल और रुखसाना का रोते-रोते बुरा हाल हो गया। और जब रज़िया को होश आया तो उसने देखा कि उसके पति की लाश सफेद चादर से ढकी हुई है। और उसके हाथ की चूड़ियाँ चकनाचूर पड़ी हुई हैं। उसकी दोनों कलाइयाँ नंगी हैं और उसके बच्चों का रो-रो कर बुरा हाल हो गया है।

आँसू उसकी आँखों में दर्द बन कर जम गए थे। और वह अपनी फटी-फटी आँखों से इस वातावरण को पागलों की भाँति तक रही थी।

इकबाल और रुखसाना बिलबिला कर उससे लिपट गए। वह उससे लिपटे हुए थे और उसे झंझोड़ रहे थे। और फिर वह भी एक

बार ही जैसे कि अपने होश में आ गई। और वह अपने बच्चों को दिवानों की तरह अपने कलेजे से लगा कर फूट-फूट कर रोने लगी। उसकी नज़रों में सारा जहान अंधकारमय हो चुका था।



भूँगीलाल अपना बहीखाता लिये हुए जनानखाने की ड्योढ़ी में खड़ा था और दुहाई देने वाले स्वर में कह रहा था।

"बड़ी बेगम साहब। ईश्वर जानते हैं कि मैं एकदम घाटे में हूँ। हज़ूर सरकार जागीरदार साहब को जो पैसा दिया, उसको यूँ समझिए कि ब्याज तक वसूल नहीं हुआ। चार सौ हज़ार नकद दिया था। सोचिए कितना होता है और···"

रज़िया ने, जो अन्दर पर्दे में खड़ी थी, उसकी बात काटी, "तो तुम्हें और क्या चाहिए भूँगीलाल। जागीर के मुआवज़े का बाण्ड तो सारे का सारा तुम अपने नाम लिखवा चुके हो और उनकी ज़िन्दगी में तुमने वह चार छः गाँव भी अपने नाम करा लिये थे।"

"यही तो मुझ पर सितम हुआ है सरकार बेगम साहिबा," वह बोला।

"गाँव जो लिखाए थे वह तो सरकार ले गई। और बांड जो सारा का सारा आपने लिखकर दिया है वह ससुर अभी कहाँ वसूल हो रहे हैं। कहीं धीरे-धीरे करके चालिस वर्ष में वसूल होंगे। और इसीलिए तो अपना दिवाला निकल गया है बेगम साहिबा।"

"कर्जा रह जाएगा तो सरकार जागीरदार साहब रईस मियाँ की पीठ भी वहाँ कब्र में न लगेगी। वह लेन-देन के बड़े पक्के थे सरकार।"

"देखो बको मत, मूँगीलाल," रज़िया जलभुन कर बोली। "साफ़-साफ़ कहो कि तुम क्या कहना चाहते हो ?"

"यही सरकार कि" वह हकलाने लगा, "अगर यह हवेली और यह सब इसका सामान, और मेहमानखाना, यह सब आप मुझे दे दें तो सरकार की पीठ कब्र में लग जाएगी और उनकी आत्मा आपको दुआएँ देगी।" वह बोला, "और फिर में भी समझ लूँगा कि सब वसूल

हो गया।"

"यह बकवास करता है बेगम हजुर।" शरफ़ अलदीन जो कि भूँगीलाल के पास ही खड़ा था चिल्लाकर बोला।

"आप इसे अब एक धेला भी न दीजिएगा। यह कमीना है, बेईमान है। सूदखोर ! एक की जगह हज़ार इसने लिखे होंगे।"

"देखो शरफ़ अलदीन भाई," भूँगीलाल ने उसे अपनी गोल और छोटी आँखों से घूरा।

"अगर बहुत गड़बड़ तुमने की तो सच कहता हूँ यहाँ खड़े रहकर गिड़गिड़ाने की जगह मैं सरकार की अदालत में जाकर फरयाद करूँगा। मेरा खाता कभी झूठ नहीं बोलता। और फिर यह सब सामान और हवेली-मेहमानखाना। सबका सब कुर्क हो जाएगा। अभी यह होगा कि बेइज्ज़ती न होगी। और उस वक्त इज्ज़त का सवाल ही बाकी न रहेगा।" वह बोला, "और वह सब जो मैं गिड़गिड़ा कर कह रहा हूँ। वह इसीलिए कि भगवान जाने सरकार रईस मियाँ बड़े भले मानुस थे।"

"तुमको यह सारी चीजें मिल जाएँगी, भूँगीलाल," रज़िया दिल पर पत्थर रखकर बोलीं, "तुम फिक्र न करो। मैं नहीं चाहती कि मेरे मरहूम शौहर पर किसी का कोई बाकी रह जाए, मैं उनके कर्ज़ की पाई पाई चुका देना चाहती हूँ। ताकि कल कोई यह न कह सके कि इनका जागीरदार साहिब पर कुछ बाकी रह गया है।"

"धन्य हो सरकार, धन्य हो।" भूँगीलाल चहक कर बोला।

"मुझे आपकी शराफ़त और समझदारी से यही आशा थी।" और फिर वह रुककर बोला।

"तो फिर—मेरा मतलब है सरकार कि मैं कब तक और इंतज़ार करूँ।"

"बहुत ज़्यादा इंतज़ार नहीं करना पड़ेगा तुम्हें। बस इतना ठहर जाओ कि मेरी बच्ची के इम्तिहान खत्म हो जाएँ।"

"हाँ ! हाँ ! क्यों नहीं।" भूँगीलाल बोला।

"मेरी तरफ से महीना भर सही। अभी ऐसी जल्दी थोड़ी है मुझे।" और फिर वह बड़ी नम्रता से बोला, "मैं तो कहता हूँ कि आप

रुखसाना बीबी की शादी तक यहीं रहें। मगर क्या करूँ कि ईश्वर की कृपा से मेरी भी एक बिटिया है और इसका ब्याह बस होने ही वाला है। बरातियों को मैं इसी हवेली में ठहराऊँगा। और यह हवेली तो मैंने अपनी बेटी के दहेज में दे भी दी है।"

और रज़िया के दिल से आवाज़ निकली कि रुखसाना बेटी का इम्तिहान तो यूँ समझो कि अब शुरू हो गया है। मगर वह अपने होंठ काटते हुए बोली, "तुम तो बस एक हफ्ता और ठहर जाओ।" और यह कहते-कहते उसकी आँखों में आँसू झलक पड़े। उसका दिल भर आया और वह घूम कर दहलीज़ से अन्दर चली गई।

और अन्दर जाकर वह फूट-फूट कर रोने लगी। वह रो रही थी और रुखसाना अपने दिल को संभालते हुए उसे संभालने की कोशिश कर रही थी। भूँगीलाल खुशी में झूमता हुआ अपनी पौड़ी की तरफ वापिस जा रहा था। रुखसाना अपनी अम्मी से कह रही थी, "आप शरफ़ अलदीन का कर्ज़ भी चुका दीजिए अम्मी।" वह बोली, "शरफ़ अलदीन ने अब्बा हजूर की तरफ से भूँगीलाल को सूद के बीस हज़ार रुपये चुकाए थे।"

"मुझे मालूम है बेटी।" रज़िया बोली।

"मैंने आज ही सुबह हिसाब किया है। कुल मिला कर हमारे पास पच्चीस छब्बीस हज़ार के जेवर हैं। मैं उनमें से बीस हज़ार कीमत के गहने शरफ़ अलदीन को दे दूंगी। मैं खुद नहीं चाहती कि उनकी जात पर और उनके नाम पर किसी दोस्त या किसी दुश्मन का एक धेला भी निकले।"

"और अगर शरफ़ अलदीन ने न लिया तो?"

"मैं उसे खुदा रसूल का हवाला दूंगी। मैं उसके सामने हाथ जोड़ कर खड़ी हो जाऊँगी कि उसे अपना यह कर्ज़ा लेना ही पड़ेगा।" रज़िया आत्म-विश्वास से बोली।

"वह कैसे लेगा।" और फिर उसी के दो घण्टे के बाद रज़िया ने शरफ़ अलदीन को बुलाया। और जब वह ड्योढ़ी में आ गया तो उसने सलीमन से कहा कि यह जेवरों का बक्स शरफ़ अलदीन को दे

दे । और जब जेवरों का वह बक्स सलीमन ने शरफ़ अलदीन की तरफ बढ़ाया तो वह बहुत ज्यादा परेशान होकर बोला ।

"हजूर बेगम साहिबा ! खुदा के लिए आप मुझे इतना ज़लील न कीजिए । मैंने बरसों आपका नमक खाया है । मैंने बड़ी कमसनी से मरहूम बड़े सरकार की गुलामी की है । मैंने बहुत कमाया है बड़े सरकार की जूतियों के साथ में । यह तो एक गुलाम का अपने मेहरबान आका की खिदमत में हदिया खलूस था ।" वह तिलमिला कर बोला । "मैं इसे कभी वापिस न लूंगा ।"

"देखो शरफ़ अलदीन ।" रज़िया बोली । "यह तुम्हें लेना ही पड़ेगा और अगर तुम ज़िद करोगे तो मैं सामने आकर तुम्हारे सामने हाथ जोड़ कर खड़ी हो जाऊँगी । मैं इस कर्ज़ की वापिसी के लिए तुम्हारे सामने गिड़गिड़ा कर कहूँगी और खुदा की कसम अगर तुमने फिर भी मेरी बात न मानी तो मैं तुम्हारे पांव पकड़ लूँगी ।"

यह सुनकर शरफ़ अलदीन निरुत्तर हो गया । रज़िया ने ऐसी बात कही थी कि कोशिश के विपरीत इन्कार की जुर्रत उसकी खत्म हो गई । और उसने सलीमन के हाथ से वह बक्स दिल न होते हुए भी अपने हाथों में तो लिया, मगर वह रो रहा था ।

"हजूर का यह बहुत बड़ा जुल्म हुआ है मेरे ऊपर ।"

"यह समझ कर तुम इस जुल्म को पी जाओ शरफ़ अलदीन कि मैं तुम्हारी मालकिन हूँ । तुम्हारी आका हूँ । और यह कि मैं मां हूँ तुम्हारी ।"

"हजूर बेगम साहिबा ।" शरफ़ अलदीन की आवाज़ उसके गले में फँस रही थी ।

और फिर वह कुछ देर रुक कर बोली । "तुम जाओ शरफ़ अलदीन और शाम तक अपनी बीवी और बच्चों को हमारे पास भेज दो ।"

"बहुत बेहतर हजूर ।" और शरफ़ अलदीन सलाम करके चला गया ।

"मगर अम्मी जान ।" रुखसाना बोली "फूफी जान तो अब्बा हजूर

मौत पर हमारे गम में शरीक होने भी नहीं आईं, हम वहाँ उनके पास क्या समझ कर जा रहे हैं ?"

"और कहां जायें बेटी।" रज़िया के होंठों से एक ठण्डी सांस निकली। मैं खुद समझ रही हूँ इन बातों को मगर।" वह ठहर कर बोली। "देखो क्या होता है। किस्मत जो दिखाएगी हम देखेंगे।"

"फूफी जान ने अफसोस का तार देकर और एक मुख्तसर से खत में अपनी बिमारी की लिखकर यह समझ लिया कि उनका फर्ज़ पूरा हो गया है ?"

"यह ज़माना है बेटी।" रज़िया बोली, "यह दुनिया है। अभी क्या है ? अभी तो न जाने हम लोगों को क्या-क्या देखना पड़ेगा।" वह बोली, "उन्हें हमारी परेशानियों का सब पता है। हो सकता है कि महज़ इसलिए कि हम एक लाख की वापिसी का तक़ाज़ा न करें वह दामन बचा गई हों। मैं तुम लोगों को लेकर वहाँ भी न जाती। मगर करूं क्या। यहां तो सिर छुपाने की जगह भी छिन चुकी है। कल आखिरी दिन है। कल ही हम बम्बई के लिए रवाना होंगे और यह हवेली जहाँ मैं यह लम्बा घूंघट निकाल कर दुल्हन बनकर आई थी, हमेशा-हमेशा के लिए और की हो चुकी होगी। उनकी यादगार पर किसी और का कब्ज़ा होगा।"

और फिर यह कहते-कहते कोशिश के विपरीत आँसू उनकी आँखों से बरस पड़े। और अपना दिल थामकर रह गई। उन्हीं के साथ रुखसाना भी रो रही थी और इकबाल भी रो रहा था।



शदो बीबी रुखसाना की फूफी अपनी भाभी को गले लगाये हुए थी और ज़ारो कतार रो रही थी। वह रोते-रोते बोलीं, "कसम ले लीजिए भाभी जान जो मुझे यह सब बातें मालूम हुई हों। मैं तो ऐसी बीमार पड़ी कि मेरा तो इनसे पूछिए कि बचना मुश्किल हो गया। वह तो यूँ समझिए न जाने कैसे बच गई। जिन्दगी थी कि अल्लाह के घर से फिरी हूँ।" और वह अपने आंसू पोंछने लगी।

"भाई जान की जुदाई का इतना सदमा है कि बयान से बाहर है। इतना प्यार करने वाला भाई अब मैं कहां से लाऊँगी।" और फिर वह रोने लगी। वह हिचकियों से रो रही थी और रज़िया उल्टा उसे समझा रही थी और उसे दिलासा दे रही थी कि वह रोते-रोते बोली, "काश कि खुदा मेरे भाई जान की जगह मुझे दुनिया से उठा लेता। मैं कुर्बान हो जाती उनके उपर से।" और फिर वह एक बार और बैंन करके रोने लगी। और रज़िया के लिए यह समझना कठिन हो गया कि वह उसे चुप किस तरह कराए कि रुखसाना ने फूफी को तसल्ली दी।

"होगा फूफी जान। जाने दीजिए। अल्लाह की मरज़ी। और हम लोगों की किस्मत। अम्मी जान के मुकद्दर में बेवा होना और इकबाल और मेरी किस्मत में यतीमी लिखी थी सो किस्मत का लिखा पूरा होकर रहा।"

"भाई जान।" शदो बीबी ने बड़े ज़ोर से भाई जान का एक नारा मारा और वह रोते-रोते और सिसकियाँ भरते-भरते निढाल हो गई।

वह रो रही थी। बैंन कर रही थी और अपने मुंह पर तमाचे मार रही थी और अपने बाल नोच रही थी। और यह तीनों उसे समझा रहे थे।

अलताफ़ हुसैन शदो बीबी का पति कमरे से बाहर जा चुका था।

× × × ×

रात के खाने के बाद रज़िया ने शदो बीबी से कहा, "और तो कुछ हमारा किस्मत से बचा नहीं बहिन। कुछ गहने बाकी बचे हैं। कोई पांच छः हज़ार के होंगे। इन्हें तुम सम्भाल कर अपने पास रख लो। न जाने आगे जाकर कैसी पड़े। रुखसाना की शादी पर काम आ जायेंगे।" और यह कहते हुए रज़िया उठी। और उसने अपना बक्स खोला। उसमें से उसने गहने का बक्स निकाल शदो बीबी की तरफ

बढ़ाते हुए कहा, "इसे रख लो। गरीब रुखसाना को उसके बाप की निशानी के तौर पर दहेज में दे दूंगी।"

"आपने अच्छा किया कि यह गहने मुझे दे दिए। मैं उनसे कहकर कल ही इन्हें बैंक में रखवा दूंगी। आजकल का ज़माना बुरा है। गहने और कीमती चीज़ों को घर में रखना ही न चाहिए। मैंने अपने सारे गहने बैंक में जमा रखे हैं।"

"जहाँ चाहे रख दो बहिन।" रज़िया ने कहा, "मुझे तो अब रूखसाना की शादी ही में इनकी ज़रूरत पड़ेगी।"

"कुछ नकद रुपए भी हैं आपके पास ?" शदो बीबी ने प्रश्न किया।

"अब क्या रहा बहिन। पाई-पाई तक तो कर्ज़ में चली गई सिर्फ दो अढ़ाई हज़ार बचे हैं। जो मैंने किसी भले-बुरे वक्त के लिए किसी-न-किसी तरह बचा रखे हैं।"

"आप तो ऐसा कीजिए भाभी जान कि इन रुपयों को भी मुझे दे दीजिए। मैं बैंक में रखवाये देती हूँ। क्या पता कि कल किसी नौकर-चाकर की ही नीयत खराब हो जाए। ज़माना बड़ा बुरा है। आजकल तो किसी पर एतबार करना ही गुनाह है। मेरे नौकर भी हैं। और आपकी नौकरानी सलीमन भी आपके साथ है।"

"नहीं। नहीं।" रज़िया ने फौरन सलीमन की तरफ़ से सफ़ाई पेश की। "वह ऐसी बिल्कुल नहीं है। मेरे ही घर पर बड़ी हुई है और बचपन से हमारे साथ है। यह तो पैदा भी मेरे यहाँ हुई थी। माँ-बाप भी हमारी ही खिदमत करते हुए मरे हैं बेचारी के। और मैं तो इसे अपनी औलाद की तरह समझती हूँ। रुखसाना से सिर्फ दो ही साल तो बड़ी है। अगर अपना ज़माना साथ देता तो मैं इसकी शादी भी एक दो साल में धूम-धाम से करती। और अब तो खुदा ही जानता है कि कहाँ होगी और कैसी होगी। उस पर मुझे कभी शक नहीं गुज़रा।"

"फिर भी।" शदो बीबी ने बात बनाई। "आपको यहाँ रह कर रूपए पैसे की ज़रूरत भी क्या है। हिफ़ाज़त बहर हाल अच्छी

चीज़ है।"

"हाँ ! हाँ !" रज़िया बोली, "वह मैं कहां कहती हूँ।"

और उसने दो हज़ार निकाल कर शदो बीबी के हवाले कर दिए। उसने सिर्फ चार सौ और कुछ रुपए अपने पास रख लिए थे।

"साहिब आपको बुला रहे हैं।" नौकर ने आकर कहा और शदो बीबी बोली, "अच्छा आती हूँ।"

और फिर वह गहनों का बक्स और रुपए लेकर उठते हुए बोली, "अच्छा आप सो जाइए भाभी जान। सफर की थकान होगी। सुबह बातचीत होगी।"

और जब वह चली गई तो रुखसाना बोली।

"अभी फूफी की बातों में मुझे तो अपनाईत नज़र नहीं आई। और देखिए फ़ूफ़ा मियाँ ने तो हम लोगों से कोई खास बात भी नहीं की। ऐसा लग रहा है जैसे कि वह हमारे आने से बेज़ार हों।"

"बिना सहारे का एक खानदान और पहाड़ का टूटा हुआ पत्थर दोनों एक जैसे होते हैं बेटी।" रज़िया बोली "और फिर हम सब पर बुरा वक्त तो आ ही गया है। ऐसी-ऐसी छोटी-छोटी बातों की तरफ तो हमें ध्यान भी न देना चाहिए बेटी। होगा, हमें किसी से हमदर्दी ही कब है। अपना वक्त है किसी-न-किसी तरह निकल ही जाएगा। खुदा करे मेरा इकबाल जल्दी से बड़ा हो जाए।"

"आप न घबराइए अम्मी।" इकबाल जो कि पलंग पर लेटा था, उठ कर बोला। "मैं जल्दी से बड़ा हो जाऊँगा और फिर खूब रुपए कमाऊँगा। और सब आपको लाकर दे दिया करूँगा।"

रज़िया ने उसे भींच कर अपने कलेजे से लगा लिया।

सुबह नाश्ता की मेज़ पर सभी एक साथ बैठे थे। रज़िया, शदो बीबी, अलताफ़, रुखसाना और इकबाल। रज़िया ने अलताफ़ की प्याली में दूध डालते हुए कहा, "क्यों मियाँ, तुम इतना चुप क्यों हो। क्या हम लोगों का आना कुछ अच्छा नहीं मालूम हुआ।"

और इस पर अलताफ़ एक बार ही हड़बड़ा कर बोला। "जी नहीं भाभी जान। ऐसी तो कोई बात नहीं।" वह अपनी प्याली में चम्मच

चलाते हुए बोला। "वह बात दरअसल यह है कि मेरा काम ही ऐसा है। जरूरत से ज्यादा काम होता है। पुलिस की नौकरी से खुदा बचाए। न दिन में चैन और न रात को आराम। दिमाग में तो जैसे खुश्की भर गई है।" उसने जबरदस्ती मुस्कराने की कोशिश की। "आप लोगों के आने से तो मुझे खुदा की कसम बेहद खुशी हुई है।"

"सलमा बेटी और सिराज कहाँ गए हैं।" रज़िया ने पूछा।

"जी भाभी जान।" शदो बीबी बोली, "वह अपनी दादी के साथ गर्मियों की छुट्टियाँ गुज़ारने के लिए चन्द दिनों को मैथारन गए हैं। मैथारन बम्बई का हिल स्टेशन है।"

"अच्छा।" रजिया जैसे कि खुश होकर बोली, "तुम्हारी सास भी आजकल यहीं हैं।"

"जी हाँ।" अलताफ़ बोला, "अम्माँ अब ज्यादातर मेरे साथ ही रहती हैं। गांव में अब है ही कौन। और उनका जी भी वहां नहीं लगता है।"

"बड़े लायक हो मियां। खुदा तुम्हें मां की खिदमत करने की और ज्यादा तौफ़ीक दे।"

और रज़िया का यह वाक्य अभी खत्म नहीं हुआ था कि शदो बीबी ने पूछा।

"अरे वह सरफ़राज मियां कहाँ हैं? क्या उन्होंने पढ़ना छोड़ कर नौकरी कर ली है कहीं।"

रजिया का मुँह फ़क हो गया। घबराकर बोली।

"क्या बताऊँ दुल्हन। एक गम हो तो कहूँ। अगर वही किसी ढंग का होता तो दुखियारी माँ को इस तरह दर-दर की ठोकरों की क्या जरूरत थी। गरीब बहिन और यह छोटा भाई उसका इस तरह उजाड़ और वीरान क्यों रहता।" फिर चुप हो गई और वही असमंजस में चुपके से बोली "यूँ समझ लो दुल्हन कि वह मर गया।"

"वह घर छोड़ कर न जाने कहां चला गया है मैया। उसका एक अरसे से कोई पता निशान नहीं है। न जाने मर गया कि जिन्दा है। उसके ढंग शुरू से ही अच्छे न थे। मैं तो उसे भूल भी चुकी हूँ। जिगर

का नासूर कमबख्त । अपनी तकदीर ही चक्कर में है।" और फिर वह मेज़ पर से उठ गई । उसके साथ ही रुखसाना उठ कर खड़ी हो गई और इकबाल भी उठ गया ।

वे अपने कमरे में आ गईं । इस वक्त सरफ़राज का ज़िक्र आ जाने से उनके दिल को बहुत दुःख हुआ था ।

अलताफ बहुत ज़्यादा झुँझलाया हुआ था । उसने बहुत बुरा सा मुंह बना कर अपनी बीबी से पूछा ।

"यह आखिर आपकी भाभी साहिबा, उसके बच्चे और यह उसकी नौकरानी सलीमन साहिबा हमारे सिर पर कब तक सवार रहेंगी।"

"कुछ समझ में नहीं आता।" शदो बीबी बेज़ार सा मुँह बनाकर बोली, "कुछ समझ में नहीं आता कि इस झमेले को दफ़ा कैसे करूँ।"

"भाई, साफ बात है," अलताफ बोला, "यह एक दो दिन की बात तो है नहीं। मैं तो यह ज़िन्दगी भर का ठेका अपने सिर लेने को किसी भी सूरत में तैयार नहीं हूँ । आप तो किसी सूरत से इन्हें दफा कीजिए।"

"खटमलों और मच्छरों से तंग आकर किसी ने घर छोड़ा है आज तक।"

"अभी तक तो मैं घाटे में हूँ नहीं। इन्हें आए हुए अभी दिन ही कितने हुए हैं। और भाभी के दो हज़ार नकद मेरे पास हैं । और गहने हैं कोई पाँच छः हज़ार के, मैं सारा हिसाब कर लूंगी।"

"और फिर सवाल यह है कि मैं इनकी बेटी का दाख़िला कालेज में ले दूं। और इनके बेटे इकबाल का नाम भी किसी अच्छे स्कूल में लिखा दूं। आखिर यह सब है क्या । मेरा तो नाक में दम आ गया है । अगर इकबाल पास हो गया है और रुखसाना का ऐन्ट्रैंस का नतीजा आ गया है तो मैं क्या करूँ । मेरे अपने ही खर्चे कौन से कम हैं जो यह बोझ उठा लूं सिर पर।" वह भन्ना कर बोला । "मुझसे यह सब कुछ नहीं होने का । कोई एक दो दिन या एक दो महीने की बात हो तो ठीक, मगर यहाँ तो ज़िन्दगी भर का ठेका है। आज यह माँग है कि लड़की की तालीम का खर्च पूरा करो। कल यह होगा कि अब

इसके लिए रिश्ता तलाश करके इसकी शादी कर दो। इकबाल को विलायत भेज दो।" उसने मुँह बिगाड़ा।

"अरे वाह ! जैसे कि मेरे पास कारून का खज़ाना आ गया है।"

"उनका तो हमें कुछ दिनों तक इन्तजार ही करना पड़ेगा। अभी आप कुछ न बोलिए। हम रुखसाना का नाम भी कालेज में लिखवा देंगे। इकबाल को भी कोशिश कराके सैंट ऐंडमस में दाखिला करा दीजिए। आखिर को मेरे भाई के बच्चे हैं। और आप यह क्यों भूल रहे हैं कि भाई जान का एक लाख का कर्ज़ मेरे ऊपर है। और एक लाख का कर्ज मैंने भाभी के सामने लिया था। अगर वह इसी को माँग ले तो," वह बोली, "मैं तो हर काम वक्त देखकर करूँगी कि वह खुद ही हमारा घर छोड़ने पर मजबूर हो जाएँगी। हमें यह बात अपने मुँह से कहनी न पड़ेगी। और यह सब काम ठीक हो जाएगा। साँप भी मर जाएगा और हमें अपनी लाठी भी न उठानी पड़ेगी।"

और फिर इस एक लाख का ख्याल करके अलताफ़ को जैसे साँप सूंघ गया और वह पैंतरा बदल कर बोला। "अच्छा। कोई बात नहीं। आदमी आदमी के पास आता है। मैंने ऐसा फ़ैसला करने में गलती की है। सचमुच हमें जल्दी से काम नहीं लेना चाहिए।"

"आप जल्दबाज़ी से काम न लीजिए ममानी जान", शदो बीबी का बेटा सिराज बोला, "मैं इकबाल का नाम किसी बहुत बड़े स्कूल में लिखवाऊँगा।"

"और मैंने तो रुखसाना का फार्म सोफ़िया गर्लस कालेज में भर कर भेज भी दिया है।" सलमा बोली। "वह वहीं मेरे साथ ही पढ़ेगी। सोफ़िया गर्लस कालेज बड़ा अच्छा कालेज है लड़कियों के लिए। और वहाँ परदे का भी पूरा इन्तज़ाम है।"

"जीती रहो बेटी" रज़िया कृतार्थ होकर बोली, "यह समझ कर हमारा साथ दे दो तुम लोग कि हम मजबूर हैं और बिना सहारा हैं। गए तो उसकी आँखें भर आईं। "मेरे यह दोनों बच्चे अगर लिख पढ़"

ज़िन्दगी भर तुम लोगों को दुआएँ देंगे।"

"आप कैसी बातें करती हैं ममानी जान।" सिराज और सलमा दोनों एक साथ बोले, "क्या इकबाल और रुखसाना हमारे भाई बहिन नहीं हैं?"

"खुदा तुम दोनों भाई बहिन को जिन्दा और खुश रखे," रज़िया बोली, "हम बे सहारा हैं। और सिवा खुदा के दुनियाँ में हमारा कोई सहारा नहीं।"

•

"तो फिर हम क्या करें," अलताफ़ की अम्माँ जान ज़किया उर्फ़ ज़ेमा बीबी की पेशानी पर जो शिकनों का जाल फैला हुआ था वह सिकुड़ गया। और वह बेज़ारी से बोली, "अगर इनका कोई ठौर-ठिकाना नहीं है तो हाथ में कशेशल लेकर दर-दर की भीख मांग लें। कोई मेरे बेटे ने ज़माने भर की परेशानियों और मुसीबतों का ठेका थोड़े ही ले रखा है।" उन्होंने वज़ू का लोटा एक तरफ पटका। "ना बाबा। मेरे बेटे से यह जन्म भर का बोझ नही उठने का। और मैं अपने बच्चे को इतना बड़ा बोझ उठाने न दूंगी" और फिर वह बजाए मिसर की नमाज पढ़ने के दनदनाती हुई सीधी रज़िया के कमरे में पहुँच गई और जाते ही वह उस पर बरसने लगी।

"क्यों जी मैं कहती हूँ कि आखिर तुम यह नवाबजादी कब से हो गई हो।"

"क्या हुआ अम्मी जान?" रज़िया जो इकबाल की किताबें मेज पर करीने से सजा रही थीं, एकदम घबरा कर बोली।

"तुम यह सारा सारा दिन जो अपने बच्चों के चोंचलों में लगी रहती हो। कभी यह भी ध्यान आया है तुम्हें इस निगोड़े घर का थोड़ा बहुत काम काज ही देख लिया करो। दिन रात बहू बिचारी चूल्हे में घुसी रहती है। तुम अब आखिर कोई मेहमान तो नहीं हो।"

"नहीं अम्मी जान" वह गिड़गिड़ाने लगी। "अभी-अभी तो मैं रसोई खाने से इस तरफ आई हूँ। गोश्त बघार कर, आटा गूंथ कर

मैं चपातियों के लिए सलीमन से कहा आई हूँ। आप कोई फिक्र न कीजिए सब काम हो जाएगा। और मैंने तो जब से कि मैं आई हूँ दुल्हन को बाबरचीखाने में झांकने तक नहीं दिया।"

"खूब", वह और ज्यादा झुँझलाकर बोली, "तो गोया तुम मेरी बहू पर निकम्मेपन का इल्ज़ाम लगा रही हो और मुझे झूठा बता रही हो। गज़ब खुदा का यह चलितर-बाज़ियाँ आख़िर तुमने सीखी कहाँ से ?"

"मैं माफ़ी मांगती हूँ अम्मी जान।" वह लज्जित होकर बोली। "अगर ग़लती से आपकी शान में मुझसे गुस्ताखी हो गई हो तो माफ़ फ़रमा दीजिए।"

"बस। बस।" वह बेज़ारी से बोली, "रहने दो अब। बड़ी आई वहाँ से गौ से उठा कर मौत में और मौत से उठाकर गौ में डूबोने के बाद भीगी बिल्ली बनने।"

रज़िया की आँखों में आँसू थे। वह चुपचाप जाकर बाबरचीखाने में घुस गई।

रुखसाना का सैकण्ड टैस्ट करीब था। और वह दिन रात मेहनत कर रही थी। और यही हाल इकबाल का भी था कि एक दिन रुखसाना ने रज़िया से कहा।

"अम्मी जान। मुझे एक ट्यूटर की बड़ी सख्त ज़रूरत है। अगर कोई ट्यूटर होता तो बड़ी आसानी हो जाती।"

"मगर बेटी", रज़िया बड़ी तकलीफ़ के साथ बोली।

"तेरी माँ के लिए तो यह बड़ा मुश्किल सवाल है बेटी। आजकल कोई पढ़ाने वाला एक घंटे के लिए भी पचास साठ से कम न लेगा। और यहाँ पचास साठ तो दरकिनार, स्कूल की फीस के भी लाले हैं। हर महीना दुल्हन बीबी जिस तरह तुम लोगों को फीस निकाल कर देती है वह मेरा ही जी जानता है। वह इस अन्दाज़ में फ़ीस देती है जैसे कि कुनैन की गोली खा रही हों। और मैं इस ढंग से वह रुपए लेती हूँ कि जैसे किसी की जेब काट रही हूँ। अब अगर यह नया सवाल रखूंगी तो वह शायद स्कूल की फ़ीस भी बन्द कर देगी।" वह

सोच में पड़ी हुई थी कि इकबाल बोला।

"मगर अम्मी जान," अब्बा हज़ूर ने फूफी जान को एक लाख रुपए भी तो दिए थे।"

"हां ! अम्मी जान," "रुखसाना बोली, "और फूफी जान ने यह वायदा किया था कि वह यह कर्ज़ बहुत जल्दी चुका देंगी।"

"तुम समझदार होकर ना-समझी की बात कर रही हो बेटी।" रज़िया ने बड़ी हसरत से कहा, "उन रुपयों को भूल जाओ। अगर हमने उस रुपए की बात की तो वह खड़े-खड़े अपने द्वार से निकाल बाहर कर देंगी। और हमसे एक इतना-सा सहारा भी छिन जाएगा। वह एक लाख अब कभी न देंगी। एक लाख क्या वह एक धेला भी न देंगी हमें। उल्टा इसका ज़िक्र करके हम नक्कू बन जायेंगे।" वह एक ठंडी साँस भर कर बोली।

"अब मुझे उनकी नियत का अंदाज़ा हो चुका है। यही एहसान क्या कम है उनका।"

●

"फिर "

"फिर क्या बेटी", अलताफ़ ने अपनी बेटी सलमा को बड़े प्यार से देखा। "तुम एक ट्यूटर की बात करती हो। मैं तुम्हारे लिए हज़ार ट्यूटर नौकर रख सकता हूँ।" वह मुस्कराया। "खुदा बम्बई गवर्नमैन्ट को सलामत रखे जिसने कि सूबा में बन्दी का कानून बनवाया है। और बम्बई के यह रेस-बुकी सलामत रहें। मैं तुम्हारी पढ़ाई पर हज़ारों रुपए हर महीने खर्च कर सकता हूँ और तुम सिर्फ़ एक ट्यूटर की बात कर रही हो।" वह मुस्कराया। "मैं आज ही टाईम्स में इश्तहार भिजवाता हूँ। ज़्यादा से ज़्यादा एक दो दिन के अन्दर तुम्हें काबिल से काबिल ट्यूटर मिल जाएगा। मैं उसे उसकी काबलियत देख कर दो सौ रुपया माहवार तक तनखाह आफर कर दूंगा।"

"मेरे डैडी।"

"सलमा मारे खुशी के अपने बाप की गर्दन में बाहें डाल कर

लिपट गई। आप कितने अच्छे हैं।"



"आप कितने अच्छे हैं अल्लाह पाक।" सुहेल ने टाईमज़ का ताज़ा अखबार अपने सीने से लगा लिया। और फिर वह मारे खुशी के ज़ोर से चीखा।

"अब्बा जान, यह देखिए अब्बा जान। यह पढ़िए कि इसमें क्या लिखा हुआ है।"

बनी अहमद का चेहरा उतर गया। और वह बड़े दुख भरे अन्दाज़ में बोला।

"बेटे। अगर मैं यही पढ़ सकता होता कि इसमें क्या लिखा हुआ है तो आज अपने खानदान की रोटी के लिए मैं ठेले पर फल रख कर बम्बई की सड़कों पर मारा-मारा क्यों फिरता।" उसने बड़े प्यार से अपने बेटे को देखा। "इसीलिए तो मैं तुम्हें पढ़ा रहा हूँ बेटे कि मेरी तरह तुम्हें ज़माने की ठोकरों का सामना न करना पड़े। और तुम मेरी तरह ज़माने की ठोकरें न खाकर बड़े आदमी बन जाओ। मैं इसी उम्मीद पर तो दिन भर और रात गये तक ठेला घसीटता हूँ कि एक दिन तुम मोटर पर बैठो और तुम्हें वह न देखना पड़े, जो कि मुझे देखना पड़ रहा है।"

"इसमें एक इश्तहार है अब्बा जान," सुहेल बोला। "एक साहिब को अपनी बेटी के लिए पढ़े-लिखे, समझदार और तजुर्बेकार ट्यूटर की जरूरत है। और तनख्वाह बहुत है। मैं अभी जाकर मिलता हूँ। मुझे खुदा की जात से उम्मीद है कि मुझे यह ट्यूशन जरूर मिल जाएगी। और फिर मेरी इंजीनीयरिंग की फीस का मसला हल हो जाएगा। और आपकी बहुत बड़ी उलझन और फिक्र कम हो जाएगी, अब्बा जान।"

"खुदा करे कि यह नौकरी तुम्हें मिल जाए।"

"और मैंने भी खुदा से मन्नत मान रखी है," सुहेल की माँ हाजरा बोली, "मैंने मन्नत मानी है कि अगर तुम्हारी फ़ीस का इंतज़ाम हो गया तो मैं ग़रीबों को नयाज़ बाटूंगी।"

"अल्लाह करे तुम्हें यह नौकरी मिल जाए," सुहेल की विधवा बहिन सईदा ने हाथ उठाकर दुआ की।

और सुहेल जल्दी-जल्दी मुँह हाथ धोकर कपड़े पहिन कर अपनी खोली से निकल कर भागा।

और एक घण्टे बाद······

पुलिस इंसपेक्टर अल्ताफ़ के बंगले के बाहर खड़े होकर उसने एक आदमी से पूछा। "इंसपेक्टर अल्ताफ़ साहिब का बंगला यहाँ है ?"

उस आदमी ने सुहेल को बड़े गौर से देखा। "क्यों ? कोई नया धन्धा शुरू करना है," और फिर वह बोला, "हाँ ! वह यहीं रहते हैं।"

फिर सुहेल ने बंगले के अन्दर कदम रखा। उसने माली से कहा। "मैं इंसपेक्टर साहिब से मिलना चाहता हूँ।"

"साहिब घर पर किसी से नहीं मिलता।" माली बोला, "मिलने को तुम माँगता हो तो चौकी पर जाओ।"

"मगर······"

कि इतने में इकबाल बाहर निकला। और उसने उससे कहा।

"देखो मियाँ साहबज़ादे। मुझे इंसपेक्टर साहिब से मिलना है।"

"आइए।"

और इकबाल ने सुहेल को ले जाकर बाहर वाले ड्राइंग रूम में बिठा दिया।

"मैं अभी अन्दर जाकर इत्तला करता हूँ।" और वह अन्दर चला गया।

●

इंसपेटर अल्ताफ़ के सामने सुहेल बड़े सम्मान पूर्वक बैठा था।

"क्या नाम है तुम्हारा ?"

"जी। मेरा नाम सुहेल है।"

"कहाँ के रहने वाले हो ?"

"जी, मैं ज़िला इलाहाबाद का रहने वाला हूँ।"

"तुम्हारी तालीम।"

"मैं एम० ए० कर चुका हूँ। इंजीनीयरिंग कर रहा हूँ।"

"इंजीनीयरिंग।"

"जी, आटोमुबाईल इंजीनीयरिंग।"

"हूँ," अल्ताफ़ ने उसे ध्यानपूर्वक देखा।

"तुम ट्यूशन ले सकोगे।"

"जी, हाजिर ही इसीलिए हुआ हूँ।"

"तजुरबा।"

"अगर मेरी टयूशन के पहले ही दिन तालिब इल्म अपने अन्दर ज़मीन आसमान का फ़र्क न महसूस करे तो मुझे जूते मार कर निकाल दीजिएगा।"

"अच्छा" अल्ताफ़ ने उसे ध्यान से देखा।

"यह दावा।"

"बेदलील नहीं है हजूर।"

"क्या तनख्वाह लोगे ?"

"कितने घण्टे पढ़ाना होगा।"

"समझ लो कि दो घण्टे।"

"जो आप मुनासिब समझिएगा, दे दीजिएगा।"

"देखो मैं तुम को सौ रुपया महीना दूंगा। और अगर तुम्हारा काम ठीक हुआ तो तनख्वाह और भी बढ़ सकती है।"

"फिर भी कितनी हजूर।"

"दो सौ तक।"

और यह सुनकर मारे खुशी के सुहेल का बुरा हाल हो गया। इतनी बड़ी तनख्वाह का उसे वहम व गुमान भी न था।

वह अपनी खुशी को दबाते हुए बोला, "मुझे मंजूर है।"

"मगर देखो। तुम्हें लड़कियों को पढ़ाना है। दो लड़कियाँ जो इन्टर में पड़ती हैं। ज़रा ख्याल रखना हाँ, वरना तुम जानते हो कि मैं कौन हूँ।"

"जी हाँ। जी हाँ।" सुहेल थूक निगलने लगा। "मैं बिल्कुल ख्याल रखूंगा साहिब। मुझे मालूम है।"

"अच्छा तो तुम आज शाम को पाँच बजे आओ। मैं घर में कह दूंगा।"

"जी बेहतर।"

और जब वह उठकर जाने लगा तो अल्ताफ ने कहा,

"ठहरो। तुम्हारे लिए चाय आती होगी।"

और वह दुबारा बैठ गया। अल्ताफ़ उठकर अन्दर आया। उसने आते ही सलमा से कहा, "मिठाई खिलाओ, सलमा।"

"क्या बात है डैडी।"

"एक बहुत ही लायक ट्यूटर मिल गया है। एम०ए० है और अब इंजीनीयरिंग कर रहा है।"

"वैरी गुड, डैडी," सलमा खुश होकर बोली।

"कब से पढ़ाने आयेंगे।"

"आज ही से। शाम के पाँच बजे आएगा।"

पास ही रुखसाना बैठी हुई थी। उसका दिल अन्दर ही अन्दर रोने लगा।

उसने सोचा। काश कि वह भी किसी ट्यूटर से पढ़ सकती। कितनी बड़ी आरज़ू है इसकी। और उसके दिल ने कहा, "मेरी ऐसी किस्मत कहाँ। अगर तू बदनसीब न होती तो तेरा बाप मर ही क्यों जाता।" कि इतने में सलमा बोली।

"हम दोनों साथ ट्यूशन लेंगे रुखसाना। बस मज़ा आ जाएगा।" और यह सुनकर रुखसाना का दिल मारे खुशी के उसके पहलू में नाचने लगा। और उसके दिल से सलमा के लिए हजारों दुआयें निकल गईं। उसे शुक्रिया के लिए मुनासिब शब्द न मिल रहे थे। सिर्फ़ वह दिल और अपनी आँखों से और अपने चेहरे के उतार चढ़ाव से सलमा का धन्यवाद करके रह गई।

"तुम दोनों पर्दे में बैठकर पढ़ना।" अल्ताफ़ ने सलाह दी। "बाहर का ड्राइंग रूम उसके लिए ठीक रहेगा। डाइनिंग टेबल वाले हिस्से में तुम दोनों बैठ जाना। और पर्दा खींच लेना। इस तरफ वह बैठ जाएगा। पर्दे के पास उसके लिए कुर्सी रखवा देना।"

"अच्छा हुआ कि यह बात आपने खुद ही तय कर दी।" शद्दो बीबी बोली, "मैं जवान लड़कियों की बेपर्दगी के सख्त खिलाफ हूँ। चाहे मास्टर ही क्यों न हो। अगर आप पर्दा तुड़वा कर पढ़ने के लिए कहते तो मैं कभी इजाज़त न देती।"

"मगर मैं ऐसा कहता क्यों।" अल्ताफ़ बोला, "मैं पागल हूँ क्या।"

और फिर अलताफ़ यह कहता हुआ बाहर चला गया कि उसे बाहर चाय भिजवा दे। मैं ड्यूटी पर जा रहा हूँ।

"असलामालेकुम।"

"तस्लीमात अर्ज़।"

पर्दे के पीछे से सलमा और रुखसाना ने बड़े प्यारे ढंग में हाथ उठाकर अपने मास्टर साहिब को सलाम किया। और उधर सुहेल पर्दे के पास ही रखी हुई कुर्सी पर से गड़बड़ा कर उठ गया।

"जीती रहिए। खुश रहिए।" वह गड़बड़ा कर बोला।

"आदाब अर्ज़। तस्लीमात अर्ज़।"

और उधर से सलमा की खो-खां खी-खी की हल्की सी आवाज़ सुनाई दी। रुखसाना ने सलमा को एक और ठोका दिया। उसने उसे नज़रों ही नज़रों में तमीज़ सीखने की सलाह दी। और फिर दोनों पर्दे के पास ही रखी हुई कुर्सियों पर मेज़ के सामने बैठ गईं।

सुहेल अभी तक पर्दे के उस तरफ अपनी जगह पर खड़ा हुआ था।

"तशरीफ रखिए मास्टर साहिब।" उधर से सलमा की आवाज़ सुनाई दी और सुहेल दुबारा कुर्सी पर बैठ गया।

"आप लोग किस-किस सबजैक्ट में कमज़ोर हैं?" सुहेल ने अपना गला साफ करते हुए सवाल किया।

जवाब में सलमा बोली। "मैं तो किसी सबजैक्ट में कमज़ोर नहीं हूँ।"

"मैं आपका नाम पूछ सकता हूँ?"

"जी! मेरा नाम सलमा है।"

"और।"

रुखसाना ने अपना गला साफ किया "जी, मेरा नाम रुखसाना है।"

"आपने अभी फ़रमाया है कि आप किसी सबजैक्ट में कमज़ोर नहीं हैं।"

"जी नहीं।" रुखसाना बोली, "यह मेरी बहिन सलमा ने अर्ज़ किया था।" वह बोली, "और लगभग मेरा जवाब भी यही है।"

"फिर ट्यूशन की क्या ज़रूरत है आप लोगों को।"

"दरअसल हमें एक राहबर की ज़रूरत है।" सलमा बोली। "जी हाँ मास्टर साहिब।" रुखसाना ने गिरह लगाई। "एक ऐसा राहबर जो हमारे दिमाग को और तेज़ कर सके।"

"अच्छा," सुहेल बोला। "आप अपना कोर्स तो दिखाइए मुझे ?" और सलमा ने अपने कोर्स की सारी किताबें पर्दे के पीछे से सुहेल की तरफ बढ़ा दीं।

सुहेल कुछ देर तक इन किताबों को उलट-पलट कर इधर-उधर से देखता रहा, फिर बोला।

"क्या आप दोनों फर्स्ट इयर में पढ़ती हैं।"

"जी हाँ।" सलमा बोली, "मेरी मामूजाद बहिन रुखसाना भी मेरे ही साथ पढ़ती है। हाँ, यह मुझसे ज्यादा होशियार है। इन्होंने इलाहाबाद से इंट्रैंस फर्स्ट डिवीज़न फर्स्ट क्लास में पास किया है। और मैं सिर्फ फ़र्स्ट क्लास ही हासिल कर सकी हूँ।"

"आप दोनों सोफ़िया गर्ल्स कालेज में पढ़ती हैं ?"

"जी हाँ।" रुखसाना बोली। "मैं इसी साल अपने वतन से आकर यहाँ दाखिल हुई हूँ। और यह शुरू ही से यहाँ है।"

"आप।"

"जी हाँ।" इन्सपेक्टर अलताफ़ साहिब मेरे फूफा हैं। और सलमा मेरी फूफीजाद बहिन है।"

और फिर इस संक्षिप्त परिचय के बाद सुहेल ने इन दोनों को पढ़ाना शुरू किया। उसने बड़ी मेहनत और बड़ी काबलियत से इन दोनों को पढ़ाया। और इतनी आसानी के साथ इन्हें बातें बताईं कि

हर मुश्किल काम इन्हें आसान नज़र आने लगा। और वह दोनों उसकी योग्यता की कायल हो गईं। वह बड़ी एकाग्रता से इन्हें पूरे दो घण्टे तक सिखलाता, पढ़ाता और समझाता रहा।

और फिर वह घड़ी देखकर उठा।

"अब मैं जा सकता हूँ ?"

"बहुत-बहुत शुक्रिया मास्टर साहिब।" दोनों की आवाज एक साथ सुनाई दी।

"आप दोनों मेरी कोचिंग से खुश हैं ना।"

"जी बिल्कुल," रुखसाना बोली।

"अच्छा तो अब इस खाकसार को इजाज़त दीजिए।"

"आप ज़रा ठहरिए।" सलमा डरते हुए बोली और उसके साथ ही रुखसाना भी उठी। "मैं आपके लिए चाय भिजवाती हूँ।"

"क्या ज़रूरत है इस तकल्लुफ़ की।"

"जी नहीं" सलमा बोली "इसकी ज़रूरत है।"

और वह दोनों उठकर अन्दर चली गईं। सुहेल वहाँ से हट आया और वह ड्राइंग रूम में आकर सोफे पर बैठ गया।

सलमा चुपके से बोली, "रुखसाना ज़रा देखें तो इस मास्टर को, इसकी सूरत कैसी है ?"

"ना बाबा" रुखसाना ने सिर हिलाते हुए कानों को हाथ लगाया।

"यह गुनाह है। किसी पराए आदमी को देखना बुरी बात है। हमें क्या लेना है उसकी सूरत शक्ल से।"

"तो हुआ क्या। एक ज़रा-सा पर्दा खिसका कर देख लेने में हर्ज ही कौन-सा है।" और यह कहते ही कहते सलमा ने पर्दा बीच से ज़रा खिसकाया और रुखसाना ने अपनी आँखें बन्द कर लीं। सुहेल गर्दन झुकाए बैठा था। और चाय बना रहा था। सलमा उसे देखकर वक से होकर रह गई। पर्दा उसकी उँगलियों से छूट गया। वह रुखसाना से बड़े घबराए अंदाज में बोली।

"क़सम खुदा की देखो तो रुखसाना बहिन। कितना खूबसूरत है यह मास्टर। अरी देख देख···" उसने रुखसाना को झंझोड़ा।

"मेरी तो आँखें चुंधिया गईं । मानो चाँद का टुकड़ा ।"

और अब उसके चेहरे पर हवाईयाँ उड़ रही थीं । वह कहीं बहुत दूर खोई हुई थी । उसका दिल उसके सीने में ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था ।

सलमा आज की रात पूरी नींद सो न सकी । रात भर उसकी आँखों के सामने मास्टर साहिब की तस्वीर फिरती रही । उसके दिल में सुहेल की मुहब्बत जड़ पकड़ चुकी थी । कोशिश के बावजूद वह अपने मस्तिष्क को मास्टर साहिब की तरफ से खाली न कर सकी ।

वह रात भर जब तक जागती रही मास्टर साहिब की तस्वीर में खोई रही । और जब वह सोई तो उसके स्वप्नों में भी सिवा मास्टर साहब के और कोई न था ।

सुबह जब वह सोकर उठी तो उसका चेहरा उतरा हुआ था । और उसका दिल मास्टर साहिब की मुहब्बत में उसके सीने में बेइख़्त्यार फड़क रहा था । उसकी मां ने उसकी इस हालत को देख कर उससे पूछा ।

"क्या बात है बेटी । यह तुम्हारे चेहरे पर हवाईयाँ कैसी उड़ रही हैं ?"

और अपनी माँ की इस पूछ-गूछ पर वह चोर ही बन कर बौखला गई । और बड़े बौखलाए हुए अन्दाज़ में वह बोली । "नहीं । नहीं । कुछ तो नहीं । क्या हुआ है मुझे । मैं अच्छी खासी तो हूँ । आप तो खामखाह के लिए ज़रा-ज़रा सी बात पर क्यों घबराने लगती हैं ।"

और फिर वह जल्दी से गुसलखाने में घुस गई । और गुसलखाने में जाकर उसने सोचा । सच ही तो पूछ रही थीं अम्मी जान । सचमुच कुछ हो ही तो गया है मुझे । वरना रात भर मुझे नींद क्यों न आई । मेरी हालत का अन्दाज़ा दूसरों को कैसे होने लगता । वह बुदबुदाई । "हाय अल्लाह अब क्या होगा ।"

११

सुहेल साईकली स्ट्रीट की एक पुरानी और घिसी-पिटी बिल्डिंग के

फ़र्स्ट फ़्लोर में अपने खानदान समेत एक कमरे में रहता था, और इस कमरे का किराया आठ रुपए साढ़े चौदह आने महीने था, और बिजली का बिल वगैरह पौने दो रुपए महीने का अलग आता था। फिर इस किराए के अलावा घर का खर्च था। सुहेल की विधवा बहिन थी, सईदा जो उससे उम्र में डेढ़ साल छोटी थी और उसके कई बच्चे थे। एक की उम्र साढ़े तीन साल की थी। और एक लड़की थी और उसका नाम था गज़ाला। दूसरा लड़का था और वह अभी छः महीने का था। और उसका नाम आश्फ़ था। और उसकी बहिन के यह दोनों बच्चे बड़े खूबसूरत थे। और उसकी बहिन भी बड़ी खूबसूरत थी। उसका पति बम्बई में एक प्राईमरी स्कूल में हैडमास्टर था और उसे एक सौ पांच रुपए महीने वेतन मिलता था। और वह बिल्कुल अकेला बेटा था। और सुहेल की बहिन सईदा अपने पति से बहुत प्यार करती थी। फिर शादी के पांच वर्ष बाद वह अचानक सिर्फ दो दिन बीमार रह कर मर गया। और सईदा गरीब विधवा हो गई। वह अब अपने माँ-बाप के पास रहती थी। और खर्च भी इसी खानदान के ऊपर था और खानदान के इन सारे लोगों का बोझ गरीब बनी अहमद, सुहेल के बाप, के सिर पर था जो मामूली उर्दू लिखा पढ़ा था। और जो ठेले पर फल बेचकर अपना गुज़ारा कर रहा था।

और इसी में से वह अपने बेटे को पढ़ा लिखा भी रहा था। उसने इसी तरह फल बेचकर सुहेल को एम० ए० तक पढ़ाया था। और अब वह उसे इंजीनीयरिंग करा रहा था।

आज सुहेल का महीना पूरा हो चुका था। और उसे इस बात का यकीन था कि उसे इंसपेक्टर साहिब के यहाँ से उसकी एक महीने की तनखाह जमा मिल जाएगी। मगर कितनी मिलेगी यह उसे नहीं मालूम था। बात तो सौ की तय हुई थी और यह कहा गया था कि अगर उसका पढ़ाने का तरीका पसन्द आया तो दो सौ तक तनखाह भी मिल सकती थी। मगर उसको दो सौ का यकीन नहीं था। सौ तो यक़ीनी थे। और दो सौ की केवल आशा थी।

सलमा घर के और मैम्बरों के साथ मेज़ पर बैठी हुई सुबह का

नाश्ता कर रही थी कि उसके डैडी ने उससे पूछा।

"तुम अपने मास्टर साहिब की ट्यूशन से मुतमईन तो हो?"

"मुतमईन।" वह बोली "अरे डैडी। मैं तो कहती हूँ इस साल मैं और रुखसाना बहन दो ही लड़कियाँ हैं जो अव्वल नम्बर आएंगी। मास्टर साहिब ने इस ढंग से हम लोगों को पढ़ाया है कि रुखसाना बहिन और मेरे सिवा पूरे कालिज भर में कोई और हमसे ज्यादा नम्बर ले ही नहीं सकता।"

"हूँ" अलताफ़ ने नैपकिन से मुँह साफ़ किया। और वह मेज़ पर से उठकर अपने कमरे में जाने ही वाला था कि शदो बीबी, उसकी बेगम, ने उसे रोका, "क्यों आज आपने नाश्ता नहीं किया ठीक से।"

"नहीं" वह जाते हुए बोला, "मैंने नाश्ता कर लिया है। आज ज़रा मुझे जल्दी जाना है।"

और फिर वह सलमा से बोला।

"तुम नाश्ता करके ज़रा मेरे कमरे में तो आना।"

और यह सुनकर सलमा का रंग एक बार ही फक हो गया कि वह बोला।

"आज मुझे तुम्हारे मास्टर साहिब की तनख्वाह देनी है।"

और वह शान्त हो गई जैसे कि उनके सिर से आई हुई मुसीबत टल गई हो।

●

"मैं कहती हूँ कि तुम आखिर नवाबज़ादी पैदा कब से हुई हो क्या जी।"

वह बुढ़िया रज़िया के कमरे में जाते ही उस पर बरस पड़ी और रज़िया उसे गुस्से में आग बबूला देखकर घबड़ाकर खड़ी हो गई।

"क्या हुआ अम्मी जान।"

"आए हैं" वह मटक कर बोली, "क्या पूछ रही हो कि क्या हुआ।"

"रहना हो तो ठीक तरीके से रहो। मेरे बेटे ने तुम लोगों की लाट साहिबी का ठेका नहीं ले रखा। अगर ऐसी ही नाक थी और ऐसा ही पहनने और पढ़ने का शौक मारा जाता था तो न आती इस घर में। किसी ऐसी जगह जाकर डेरा जमाती जहाँ अच्छा खाने को और अच्छा पहिनने को मिलता। और फिर क्या सारी ज़िन्दगी का हमने ठेका ले रखा है तुम्हारा कि चराते रहें। तुम्हारे बच्चों को पढ़ायें, लिखायें और उनके लिए मास्टर रख कर दें। कौन सी जायदाद लिखवा दी है तुमने मेरे बेटे के नाम कि हरदम रोब जमाना चाहती हो।"

रज़िया रोने लगी।

"आप तो बहुत ज़्यादा बातें कर रही हैं अम्मी जान।" वह रोकर बोली। "और मैं तो इतना अर्ज़ कर रही हूँ कि दिन रात खादमाओं की भांति मेरे सिवा और कौन काम करता है इस घर में। मैं करती हूँ और मेरी नौकरानी को दम लेने की भी फ़ुर्सत नहीं मिलती इस घर में और फिर बेचारी रुखसाना है जो काम करती है। और अब तो आपके घर की भामा तक हमसे नाक भों चढ़ाकर काम लेने लगी है। वह झिड़कियां देती है। और हम सुन लेते हैं। इसलिए कि यह हमारा बुरा वक्त है।"

फिर वह बड़ी संजीदगी से बोली।

"मगर इसके यह मानी नहीं अम्मी जान कि आप लोग हर वक्त हमारी बेइज्ज़ती पर उतारू रहें। आखिरकार हमारी भी इज्ज़त है। बुरा वक्त पड़ने के यह मानी नहीं कि हम गालियाँ खाने लगें, और बेइज्ज़त और ज़लील कर दिए जाएँ। और मैं यह आप से साफ़-साफ़ अर्ज़ किए देती हूँ कि मेहरबानी फ़रमा कर आइंदा से आप अपनी ज़ुबान को काबू में रखकर हमसे बात करना सीखिए। हम कोई गिरे हुए और नीच नहीं हैं कि आप हमसे छूटते ही गाली गुफ्तार शुरू कर दें।"

वह चिलमिला कर बोली।

"और हम आपके बेटे का कोई हराम का भी नहीं खा रहे हैं। लेकिन अभी हमें आपके बेटे से बहुत कुछ लेना है। उन्हें अभी मेरा

एक लाख देना है ।"

और यह सुन कर वृद्धा के तन बदन में आग लग गई और वह गुस्से के मारे काँपती हुई बोली ।

"कैसा एक लाख और किसका एक लाख, कब दिया है तुम्हारे शौहर ने उसे । बड़ा आया मेरे बेटे पर एहसान करने वाला । खुद तो......"

"अम्मी जान ।" रज़िया को अब सचमुच गुस्सा आ गया और वह तेज़ होकर बोली ।

"ख़बरदार जो आपने मेरे मरहूम शौहर की शान में अब एक लफ्ज़ भी निकाला । एक लाख उन्होंने दिया है । यह आप अपनी बहू से पूछिए और अगर वह भी आप ही की तरह ला-इलमी ज़ाहिर करें तो फिर मैं आपकी बहू और आपके बेटे के खत दिखा दूंगी जिसमें कि उन्होंने बार-बार इस एक लाख का ज़िक्र किया है और यह कसमें खाई कि वह एक लाख जमा चुकायेंगे वरना कयामत के दिन उनका मुँह सूअर का होगा ।"

जैंका बीबी उर्फ़ बुढ़िया भीगी बिल्ली की तरह दम साधे वहाँ से बाहर निकल गई । बाहर कमरे के सामने ही शदो खड़ी थी । वह भी जैंका के साथ ही साथ उनके पीछे-पीछे वहाँ से आ गई । जैंका ने पूछा ।

"क्या यह सच है कि उनके पास तुम लोगों के खत हैं ।" उसकी आवाज़ मरी हुई थी ।

"हां ! अम्मी जान !" शदो बोली, "भाई जान के पास इस एक लाख रुपए के सिलसिले में मेरे भी खत होंगे और उनके भी ।"

और यह सुनकर बुढ़िया के होश उड़ गए । और उसके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं । उसे और शदो दोनों को जैसे सांप सूंघ गया हो । बुढ़िया बोली ।

"अच्छा, तुम अलताफ़ से आज किसी बात की चर्चा न करना । मैं रज़िया का दिल मुट्ठी में लेकर वह खत उससे निकलवा लूंगी ।"

"तस्लीमात अर्ज़ है। मास्टर साहिब !" रुखसाना ने स्वभावानुसार मास्टर साहिब को सलाम किया।

"आदाब अर्ज" कर सलमा का दिल बड़े ज़ोर-ज़ोर से उसके पहलू में धड़कने लगा। और वह मारे घबराहट के अपना वाक्य भी पूरा न कर सकी। और धम से करके कुर्सी पर गिर पड़ी। और रुखसाना ने उसकी इस हालत को ध्यान से देखा।

"जीती रहिए ! खुश रहिए। आदाब ! तस्लीमात।"

उधर से मास्टर साहिब की आवाज़ सुनाई दी। और वह पहले के गिने चुने पाठ शुरू हो गए। मगर आज न तो मास्टर साहिब का दिल पढ़ाने में ठीक से लग रहा था और न सलमा का पढ़ने में। रुखसाना पहले की भांति पढ़ रही थी।

सुहेल तो सौ और दो सौ के चक्कर में फँसा हुआ था और सलमा इस उलझन में फँसी थी कि आखिर उसकी इस अनोखी और अनजानी मुहब्बत का अंजाम क्या होगा। वह अपनी मुहब्बत का मातम कर रही थी और सुहेल अपनी जमात का कि इतने में पूरे दो घन्टे हो गये। और सुहेल का दिल मारे बेचैनी के उसके पहलू में जोर-ज़ोर से धड़कने लगा। यह सोच रहा था कि अब उसके जाने का वक्त आ गया है और तनख्वाह का अब तक कोई ज़िक्र तक नहीं हुआ। उसकी व्यग्रता अपनी तनखाह और अपनी जमात के लिए थी और सलमा की व्यग्रता अपने दिल के लिए थी।

कि इतने में वह विवश होकर अपनी कुर्सी से उठा। वह बिल्कुल निराश हो चुका था कि भीतर से आवाज़ आई।

"यह लीजिए मास्टर साहिब ?"

और पर्दे के पीछे से एक लिफ़ाफ़ा उसकी तरफ बढ़ा और मारे खुशी के उसकी बाँहें खिल गईं।

उसने वह लिफ़ाफ़ा ले लिया। आवाज आई। "यह आपकी मेहनत का हकीर नज़राना है।"

"शुक्रिया।"

और वह जाने के लिए बड़ी बेताबी के साथ मुड़ा। मगर एक आवाज़ ने उसके कदम रोक दिए।

"वह चाय।"

"शुक्रिया।" वह लज्जित होकर बोला। "आज ज़रा मुझे जल्दी है।" और फिर वह उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना ड्राइंग रूम से बाहर निकल गया। उसे इस बात की बेचैनी थी। यह चिन्ता थी उसके दिल में कि आखिर उसे मिला क्या है? उसका मुकरर्र किया हुआ या उसके साथ किया हुआ वायदा जो कि उसकी इस वक्त की सबसे बड़ी जमात का कारण है।

इसके दिल में लिफाफे को अन्दर से झांक कर देखने की असीम अभिलाषा थी, उत्सुकता थी और उसने बाहर निकलते ही निकलते, जैसे ही उसने बंगले के बाहर कदम रखा, वह लिफाफा खोल डाला।

उसकी दो उँगलियों के बीच सौ-सौ के दो नोट मुस्करा रहे थे। मारे खुशी के उसका कलेजा मुँह को आ गया और उसी जगह खड़े-खड़े उन नोटों को अलग किया।

कागज़ का एक छोटा-सा टुकड़ा नोटों के बीच तह किया हुआ रखा था। वह बड़ी बेचैनी से इस परचे को पढ़ने लगा। उसने सोचा शायद यह लिखा हो कहीं कि बस अब आने की ज़रूरत नहीं। तुम्हारी कोचिंग पूरी हो चुकी।

वह बड़ी बेताबी से पढ़ने लगा। लिखा था—

"कल जो देखी है इक झलक तेरी,
दिल की दुनियाँ में मच गया है शोर।
सोचती हूँ यह क्या हुआ है मुझे,
नींद क्यों रात भर नहीं आती।"

—सलमी।

कागज़ के छोटे से टुकड़े पर यह पढ़ कर उसका सिर आप ही आप घूमने लगा। और उसे अभी से तारे दिखाई देने लगे। उसने सोचा कि यह उसकी पहली और आखिरी तनख्वाह है। और अब इसके बाद इस

दर से और कोई उम्मीद न रखनी चाहिए ।

और फिर अभी-अभी यह दो सौ के नोट देख कर उसे जितनी खुशी हुई थी, वह उसकी सारी खुशी खाक में मिल गई । और अभी से वह अपनी दो सौ रुपये महीना की आमदनी का मातम करने लगा ।

वह मन ही मन बड़बड़ाया ।

उसने वह पर्चा फाड़ डाला । उसकी चिंदी चिंदी कर डाली उसने । और उसने इन चिंदियों को पास ही बहते हुए गढ़े में फेंक दिया ।

और अब यह मरी हुई चाल के साथ बस स्टैंड की तरफ बढ़ रहा था ।

●

"तुमने इकबाल को मारा है, सराज ?"

"हाँ ।"

"क्यों," रज़िया ने सवाल किया । "उसका कसूर क्या था ?"

"वह बहुत बदतमीज़ हो गया है ।"

"इसलिए कि उसने तुम्हारा पाँव नहीं दबाया ।" रज़िया बड़े दर्द के साथ बोली । "क्या इसकी यही बदतमीज़ी थी कि उसने लिखना छोड़ कर तुम्हारे पाँव क्यों नहीं दबाए थे ।" वह ठहरे हुए अन्दाज़ में बोली ।

"यह भी किसी माँ के जिगर का टुकड़ा है, सराज और वह भी किसी शरीफ का बच्चा है । तुम यह क्यों भूल जाते हो कि वह तुम्हारा मामूजाद भाई है । वह तुम्हारे मामू का बेटा है जिसके दर पर कभी हाथी झूमते थे और फिर तुमने उसकी कापी फाड़ डाली आखिर तुम लोगों के यह सितम हम लोग कब तक सहते रहेंगे ?" उसकी आँखों में दुबारा आंसू आ गये ।

"आखिर जुल्म की भी कोई हद होती है ।" और फिर वह तेज़ होकर बोली; "खबरदार सराज जो तुमने आज से इकबाल को हाथ

भी लगाया तो। मुझसे बुरा कोई न होगा। हम लोग अभी इतने गये गुज़रे नहीं हो गए कि जूते और लात खाने के आदी हो गए हों।"

"क्या बात है ?" शदो बीबी ने आकर पूछा, "यह आखिर शोर क्यों मच रहा है। बाहर इनके दोस्त बैठे हैं।"

"यह तुम अपने इन लाडले साहिब से पूछो। यह उम्र और इस पर यह तमीज़। बालिश्त भर के लड़के इकबाल पर अपनी बहादुरी का रोब जमाते हैं। उसने जरा सा पाँव नहीं दबाया इनका तो इन्होंने उसे पीटा और उसकी कापी फाड़ कर फैंक दी।"

"क्यों सराज ?" शदो बीबी ने सराज को घूरा। "यह क्या बद-तमीज़ी है तुम्हारी।"

और सराज गुस्से से रज़िया की तरफ देखकर मुंह बनाते हुए बोला। "इन मुसीबतों को अपने घर में रख ही क्यों छोड़ा है।"

"अब वह लोग तुम्हें मुसीबत नज़र आ रहे हैं बदतमीज़ कहीं के, जिन्होंने हमेशा तुम्हारी मुसीबतों में तुम्हारा साथ दिया है। जिन्होंने हमेशा तुम्हारी मुसीबतों का इलाज ढूंढा है।" रज़िया झल्लाकर बोली।

"जाने दीजिए, भाभी जान। बस बहुत हो चुका।" शदो बीबी माथे पर शिकनें डाल कर बोली।

"मालूम है कि तुमने हमारे ऊपर बहुत एहसान किए हैं। आज तक हम तुम्हारे ही एहसानों के सहारे पर तो जी रहे हैं।"

"मैं बात बढ़ाना नहीं चाहती, बहिन।" रज़िया बोली। "मगर तुम अपने इस लाडले को समझा दो। अगर इसने आज से इकबाल के साथ कोई ज्यादती की तो मुझसे बुरा फिर कोई न होगा। हाँ, कहे देती हूँ।" और फिर यह मामला रफा-दफा हो रया। रज़िया यह कहकर दुबारा रसोई घर में आ गई। और शदो ने सराज को डाँटा।

"बेशरम कहीं के। लुगाड़ा मामी जी से ज़ुबान लड़ाते शर्म नहीं आती। मालूम है कि हम इनके कितने के देनदार हैं। अगर अभी यह दावा कर दें तो हमें तारे दिखाई दे जायें। जब तुम्हारे डैडी पर रिश्वत का मुकदमा चल रहा था उस वक्त मैं भाई जान से एक लाख लेकर आई थी। और वह रुपया अब तक हमने अदा नहीं किया है।" वह

दबी ज़ुबान से कह रही थी। "और इसलिए हम दबे हैं। एक लाख का मामला है। दस बीस की रकम तो नहीं कि हाथ पर रखकर घर से बाहर कर दें।"

"ज़रा अकल से काम लिया करो। तुम माशाअल्ला अब जवान हो। बच्चे नहीं हो दूध पीते।"

सुहेल सलमा और रुखसाना को पढ़ा रहा था।

"मास्टर साहिब," सलमा बोली, "ज़रा इस शेर के मतलब तो समझा दीजिए। शेर है।

"इश्क पर ज़ोर नहीं है यह वह आतिश ग़ालिब,
कि लगाए न लगे और बुझाए न बने।"

सलमा ने शेर पढ़ा और रुखसाना ने दाँतों में उंगली दबाई। उसने रहस्यमय ढंग से सलमा को घूरा और उधर पर्दे के उस तरफ सुहेल के माथे पर पसीना आ गया। और उसे ऐसा मालूम हुआ कि इंस्पेक्टर अलताफ़ साहिब उसे ज़लील करके और जूते मार कर अपने बँगले से निकाल रहे हों। वह हकलाते हुए बोला।

"इस शेर का मतलब तो बहुत साफ है। मुश्किल कौन सी है इसमें।"

"शायद इस शेर के मतलब आप खुद नहीं समझते।" सलमा बोली, "जब ही आप मुझे टाल रहे हैं।"

वह बोली, "अच्छा इस शेर के क्या मायने हुए।" उसने दूसरा शेर पढ़ा,

"कहूँ क्या दिल की क्या हालत है हज़ूर यार में ग़ालिब।
कि बेताबी से हर इक तार बिस्तर तार बिस्तर है।
हम हैं मुश्ताक और वह बेज़ार,
या इलाही यह माजरा क्या है।"

सुहेल सन्नाटे में आ गया। और वह बड़े घबराए अन्दाज़ में बोला। "आज आप बिचारे ग़ालिब के पीछे हाथ धोकर क्यों पड़ गई हैं।

उन्हें चैन से कब्र में आराम फरमाने दीजिए, और आप तो इंग्लिश पोइटरी की तरफ़ ध्यान दीजिए। इम्तिहान करीब है।"

"इम्तहान तो यूँ समझिए कि मेरा शुरू हो गया है और इस इम्तहान···।"

घबराकर सुहैल ने उसकी बात काटी। और वह अपना गला साफ करते हुए यूँ ही बोल पड़ा।

"इम्तहान तो मेरा भी शुरू होने वाला है। मेरा मतलब है कि···" और वह अपना गला साफ करने लगा। और उधर न जाने कैसे हुआ कि एक बार ही टीन के छप्पर पर से एक मोटा ताज़ा बिल्ला ज़ोर से कूदा और वह बारीक छड़ पर से नीचे गिरा धड़ाम से। और उधर वह दुबारा परदे समेत दोनों तरफ से निकल गया। और परदे के साथ ही धड़ाम से नीचे आ रहा। बाहर के दोनों तरफ की लकड़ी के होल टूट गए थे।

और अब सुहेल और इन लड़कियों के बीच कोई चीज़ रुकावट न डाल रही थी। उन दोनों का फासला कुछ भी नहीं था। वह सलमा और रुखसाना के बिल्कुल सामने बैठा था। उसकी नज़रें रुखसाना पर पड़ीं। आँखें एक क्षरण के लिए चार हुईं। दोनों की। और घबराकर रुखसाना ने अपने दोनों हाथों से अपना चेहरा ढाँप लिया। और सुहेल इस सौन्दर्य की प्रतिमा को ताकते का ताकता रह गया। उसके होश व हवाश पर इश्क की बिजली गिर चुकी थी। और कयूस्पा का नन्हा सा तीर अपना काम कर चुका था। उसने अपना एक ही तीर दोनों के दिलों में चुभो दिया था।

और यह सब कुछ एक ही क्षरण में हुआ। रुखसाना, "हाय अल्लाह" कहकर धक से होकर रह गई और वह अपने दोनों हाथों से अपना सिर ढांप कर उसी जगह कुर्सी के बाज़ू पर औंधी हो गई। सलमा सुहेल को और उसकी हालत को बड़ी बेचैनी से तक रही थी।

सुहेल की नज़रें रुखसाना के ऊपर जमी हुई थीं और उसे अपने तन बदन का होश नहीं था कि वह एक बार ही पागलों की तरह गड़बड़ा कर उठा। भागा और ड्राइंग रूम में रखे हुए सोफे से टकरा

कर दिवान पर औंधे मुँह गिर गया था।

और उधर रुखसाना घबराकर अन्दर की तरफ भाग गई।

वह भागकर कमरे में औंधे मुँह गिर पड़ी थी। और सलमा बड़े धीरे-धीरे वहाँ से चल कर उसके पास आ चुकी थी। उसने रुखसाना को कन्धों से पकड़ कर उठाया। वह उसे बड़ी अजीब-अजीब नज़रों से देख रही थी।

सुहेल अपने घर में था। और गुमसुम और खोया-खोया अपने कमरे के छज्जे के पास बहुत देर से खड़ा था। और उसकी मां हाज़िरा और उसकी विधवा बहिन सईदा बहुत देर से उसकी हालत को बहुत ध्यान से देख रही थीं। आखिर उसकी बहिन सईदा उसके पास आई। और उसने बड़ी आहिस्ता से उसके कन्धों पर अपना दायां हाथ रखा। और वह एक बार ही चौंक पड़ा। और उसने अपनी खोई-खोई नज़रों से अपनी बहिन सईदा की तरफ़ देखा।

"क्या बात है भैया ?" उसने मुस्कराने की कोशिश की।

"आप कितनी देर से यहाँ खड़े हैं। आखिर क्या सोच रहे हैं। अम्मा आपको बुला रही हैं। वह आपकी इस हालत से कितनी देर से परेशान हैं।"

वह चुपचाप सईदा के साथ आ गया। वह सीधा नल के पास गया और हाथ मुंह धोने लगा। जब वह हाथ मुँह धो चुका तो उसकी मां हाज़िरा ने उससे बड़े प्यार से पूछा।

"आज तुम इतने उदास और खोये-खोये से क्यों हो।" वह इसके बालों में अपनी अंगुलियाँ फेरते हुए बोली। उसके माथे पर हाथ रखा और फिर घबराकर बोली, "अरे ! सच तो है। तुम्हें तो बुखार है सुहेल।"

"बुखार नहीं है मां।" वह व्यथित होकर बोला "यूं ही बदन गर्म हो गया होगा।"

"अरे वाह !" वह बोली, "यूं ही बदन गर्म हो गया होगा अच्छा

खासा बुखार तो चढ़ा हुआ है, और कहता है कि यूं ही बदन गर्म हो गया होगा।" वह घबराकर खड़ी हो गई। सईदा बेटी, ज़रा जल्दी से अदरक की चाय तो बना लो, शाबाश और देखो वह लक्ष्मी की मां अगर तुम्हें दो चार पत्ते तुलसी के दे दे तो ले आओ। खुद न तोड़ना।"

"तुम खामखाह की उलझन कर रही हो माँ।" सुहेल जैसे कि उलझते हुए बोला। 'मुझे कुछ नहीं हुआ सिर्फ़ थकान से बदन गर्म हो गया होगा।"

"अरे नहीं बेटे!" वह बोखलाई जा रही थी।" खुदा न करे कि ···और वह खुद ही कोने में जाकर स्टोव जलाने लगी। सुहेल कमरे के एक तरफ दिवार से लगे हुए बिस्तर पर लेटा हुआ था। सईदा की मासूम बच्ची गजाला आई और बिना किसी के कहे सुने वह आकर अपने मामू का सिर दबाने लगी।

सुहेल ने चौंक कर उसे देखा। वह अपनी आँखें बन्द किए लेटा था।

"आप लेटे हैं मामू मियाँ। मैं आपका सिर दबा देती हूँ, अच्छा हो जाएगा।"

और सुहेल ने गजाला को उठा कर अपने पेट पर बिठा लिया। वह उससे बोला, "तुम कितनी अच्छी बेटी हो।"

"मैं सचमुच अच्छी हूँ मामू मियां?"

"हां! हां" वह बोला "तुम तो सबसे अच्छी हो।"

"मगर अम्मी तो कहती हैं कि मैं बहुत बुरी हूँ।"

"वह बहुत बुरी हैं। जो मेरी गज़ाला को बुरा कहती है। मेरी गज़ाला को बुरा कहे वह खुद बुरा है।"

"तो फिर आप यही बात हमाली अम्मी से कह दीजिए।"

"क्या?"

"यही कि मैं अच्छी बेटी हूँ।"

"हां! हां! क्यों नहीं मैं अभी तुम्हारी अम्मी से कहता हूँ।"

और फिर उसने सईदा से कहा।

"देखो भाई सईदा आज से तुम मेरी इतनी अच्छी गुड़िया गज़ाला को कभी बुरा न कहना; वह तो बड़ी अच्छी बेटी है।"

और इस पर गज़ाला अपने मामू के पेट पर उछलने लगी और तालियाँ बजाने लगी। वह सुहेल से लिपट गई।

"आप कितने अच्छे मामू मियाँ हैं मेले।"

उसने सुहेल को भींच लिया। और वह उसी जगह सुहेल के पेट पर लेटे-लेटे अपने नन्हें हाथों से उसकी पेशानी दबाने लगी।

●

रुखसाना अपने बिस्तर पर लेटी हुई थी, और इकबाल उस के सिरहाने बैठा हुआ उसका सिर दबा रहा था।

"मैं कहती हूँ कि आखिर यह एकाकी शाम से तुम्हें क्या हो गया है।" रज़िया बहुत ज्यादा परेशान होते हुए बोली।

रज़िया यह सब कुछ कहती ही रही और रुखसाना सोचती रही कि मैं आपको क्या बताऊँ कि मुझे क्या हुआ है। मुझे तो वह हुआ है जो मेरे वहम मेरे गुमान में भी नहीं था। कभी जिसके बारे में मेरे दिल व दिमाग़ ने सोचा भी न था। मुझे वह हो गया है। एक ऐसी मुसीबत आ पड़ी है मेरे ऊपर। एक ऐसी अनहोनी बात हुई है मेरे साथ जो न तो किसी से कह सकती हूँ, और न किसी को बता सकती हूँ। अजीब बात है।

वह एक बार ही झुंझला कर उठ बैठी और दिल ही दिल में बुदबुदाने लगी।

"या अल्लाह यह बैठे बिठाए किस किस्म का रोग लग गया है मुझे। दिल में रह-रह कर हूक उठती है। और एक ऐसी तकलीफ होती है जिसे मैं लफ़्ज़ों में नहीं बता सकती। बार-बार रह रहकर कोई मेरे कलेजे में चुटकियाँ लेता है और मैं दोनों हाथों से अपना कलेजा मसोस-मसोस कर रह जाती हूँ।"



सुहेल का दिल आज सारा दिन अपने कालेज में नहीं लगा। बार-बार उसके मस्तिष्क के पर्दे पर रुखसाना की तस्वीर उभरती थी और यह उसे किसी-न किसी तरह कोशिश करके दबा देता था।

वह कोशिश करता कि वह कल की घटना को भूल जाए। मगर कल की दुर्घटना इतनी महत्वपूर्ण और जान लेवा थी कि वह उसे भुलाने की कोशिश के विपरीत नहीं भुला सका था।

वह सोच रहा था। वह आज ट्यूशन पर जाए या न जाए। अब उसे दो सौ रुपए की चिंता नहीं थी। बल्कि अब उसे चिंता इस बात की थी कि कहीं वह किसी बड़ी आपत्ति की मूल जड़ न बन जाए। कहीं ऐसा न हो कि उसकी मुहब्बत एक मासूम और बेज़ुबान लड़की को बदनाम कर दे और वह रुसवा हो जाए।

वह बहुत शरीफ़ था और वह यह नहीं चाहता था कि सिर्फ उसकी वजह से किसी मासूम लड़की पर तोहमत लगे। वह अपने खानदान वालों की नज़रों में ज़लील व ख्वार हो जाए।

यह ख्याल आते ही वह सोच में पड़ गया। वह कुछ सोचने लगा। और फिर वह एक बार ही मुस्कराया।

"मगर वह तो तुम से पहले ही मेरे प्यार के बन्धनों में जकड़ चुकी है। उसी ने तो मुझ में गालिब के जाँ मानी ईशार के मतलब पूछे थे और उसी ने तो मुझे यह पर्चा लिख कर दिया था।"

"कल जो देखी है इक झलक तेरी,
दिल की दुनियाँ में मच गया है शोर।
सोचती हूँ यह क्या हुआ है मुझे,
नींद क्यों रात भर नहीं आती।"

"मगर।"

वह कुछ सोच में पड़ गया।

"यह क्या मालूम कि जिसे कि मेरे दिल ने पसन्द किया है और जिसके लिए कि मैं दिवाना हो गया हूँ वह वही है जिसने मुझे यह

कितबा लिख कर दिया था और जो कि गालिब के जाँ मानी एशार के मुझ से मतलब पूछ रही थी।"

और फिर वह बहुत ज़्यादा उलझ कर रह गया। "क्या पता कि वह लड़की सलमा न हो रुखसाना हो।" और फिर उसने अपने दिल से पूछा।

"वह लड़की कौन है ? रुखसाना या सलमा ?" और उसके इस सवाल का दिल कोई उत्तर न दे सका और वह और ज़्यादा उलझ कर रह गया। "अगर वह लड़की सलमा न हुई तो फिर ?"

और इस फिर के आगे वह और ज़्यादा बौखला गया। उसने सोचा।

"फिर तो और भी ज़्यादा उलझन बढ़ जाएगी। मैं उसे चाहूँगा जो कि मुझे नहीं चाहती और जो मुझे चाहती है उसमें मुझे कोई दिलचस्पी न होगी। फिर लाज़मी तौर पर मैं अपनी मुहब्बत के बीच एक दुश्मन बना लूंगा। सलमा तो है इंस्पेक्टर साहिब की लाडली बेटी जो मेरे खिलाफ हो जाएगी। और औरत जब कि वह मुहब्बत में ठुकरा दी जाती है वह ज़ख्मी नागिन बन जाती है। वह खूंखार शेरनी का रूप धारण कर लेती है। वह बदले की भावना में सब कुछ कर डालती है जो कि इन्सान सोच भी नहीं सकता।"

वह और ज़्यादा चिन्तातुर हो गया और उसकी उलझन और ज़्यादा बढ़ गई। फिर वह यह फैसला करने लगा कि वह ट्यूशन पर जाए या न जाए कि उसके दिल ने उसे मशवरा दिया।

"हाँ, जाने में क्या हर्ज है। सचाई भी तो तभी मालूम हो सकती है कि वह सलमा है कि रुखसाना।" बस वह ट्यूशन पर जाने के लिए तैयार हो गया।

जैसे-जैसे शाम हो रही थी और मास्टर साहिब के आने का वक्त करीब आता जा रहा था वैसे-वैसे रुखसाना के पहलू में दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था। आज मास्टर साहिब के आने का वक्त

उसके लिए निशात-आगी भी था। और जनून भरा भी। वह मास्टर साहिब के आने की प्रतीक्षा भी कर रही थी और वह उनके आने से डर भी रही थी।

बड़ी कश्मकश की परिस्थिति थी उसके लिए। वह अपना यह समय बड़े शशोपंज में गुज़ार रही थी। गोया गोयम मुश्किल व गोना गोयम वाला मामला था उसके लिए।

और अभी वह शान्ति का सांस लेकर बैठी ही थी कि सलीमन ने आकर उससे कहा।

"मास्टर साहिब आये हैं।"

एकदम उसका दिल उछल कर उसके कण्ठ में फँस गया और फिर वह फड़फड़ा कर रह गई। उसकी रगों में खून की गर्दश तेज़ हो गई और उसका दिल भाएँ भाएँ करने लगा जैसे कि रेल की सीटी उसके कानों में समा गई हो।

सलीमन इत्तला देकर चली गई। वह इसी सोच में पड़ गई कि उसे पढ़ने के लिए जाना चाहिए या नहीं जाना चाहिए। फिर वह सोचने लगी कि वह क्यों न जाये। उसके इस अमल से तो सारे घर को उस पर शक हो जायेगा और फिर वह ट्यूशन न लेने की वजह क्या बतायेगी।

इसलिए वह किताबें और कापियाँ समेट कर चलने के लिए तैयार हो गई। जब वह अपने कमरे से बाहर निकली तो उसका एक-एक कदम मन-मन भर का हो गया था। जैसे कि किसी ने उसके पाँव में चक्कियाँ बांध दी हों।

वह जैसे ही अपने कमरे से निकल कर बरांडे में आई तो उसने सलमा को अपनी इन्तज़ार करते पाया। वह भी किताबें लिए खड़ी थी। वह उसे देखते ही बड़े रहस्यपूर्ण ढंग से बोली, "आइए।"

और उसका दिल धक से होकर रह गया। इतनी-सी देर में उसके चेहरे पर कई रंग आये और चले गये। वह सलमा के साथ ड्राइंग रूम में आ गई।

"तसलीम।"

"आदाब अर्ज़।"

उन दोनों की आवाज़ें इस तरफ से सुनाई दीं और पर्दे के इस तरफ सुहेल की हालत दयनीय हो गई। वह गड़बड़ा कर उठ खड़ा हुआ और कोशिश के बावजूद एक लफ़्ज़ भी उसके मुँह से न निकल सका। और वह ज़्यादा बौखला कर थूक निगलने लगा।

"मैंने कहा कि हज़ूर मास्टर साहिब तशरीफ रखिए।" उसकी आवाज़ में व्यंग था। "यह आज अचानक क्या हो गया है आपको कि आप हमारे सलाम का जवाब भी भूल गए ?"

सुहेल घबरा कर कुर्सी पर बैठ गया। इस ढंग से जैसे कि वह स्वयं न बैठा हो बल्कि उसे सलमा ने जूते मार कर कुर्सी पर बिठाया हो। वह इस समय सलमा के इस बातचीत के ढंग पर और ज्यादा परेशान हो गया था।

वह सोचने लगा यह वह नहीं है, जिसे कि उसके दिल ने और उसकी आंखों ने पसन्द किया है। यह तो सलमा है जिसने कि उसे वह किता लिख कर दिया था और जो कि उस दिन उससे गालिब के दोसानी शेर के मतलब पूछ रही थी। लिहाज़ा वह और ज्यादा बौखला गया और सोचने लगा यह तो और भी मुश्किल आन पड़ी।

सलमा उसे पसन्द करती है और वह सलमा को पसन्द न करके रुखसाना को पसन्द करता है। पसन्द और नापसन्द का यह ट्राईऐंगिल जरूर नई-नई उलझनों को जन्म देगा। यह मामला इतना टेढ़ा हो जायेगा और इतना गम्भीर हो जाएगा कि बात बहुत आगे तक बढ़कर खतरनाक सूरत धारण कर लेगी। इस खींचातानी में दिलों के परखचे उड़ जायेंगे और मुहब्बत घायल परिन्दे की तरह फड़फड़ाने लगेगी।

वह यह बात किस तरह मालूम करे, इस सोच में पड़कर वह परेशान हो गया। वह यह बात जानने के लिए बेचैन था कि उधर से सलमा की आवाज़ सुनाई दी। "मास्टर साहब !" और वह गड़बड़ा कर बोला।

"जी !" उसकी विचार शृंखला टूट गई थी।

"आज आप बहुत परेशान मालूम हो रहे हैं। आखिर क्या बात

है ?"

"जी कुछ नहीं ।"

"कोई बात तो ज़रूर है", सलमा ने नाक सिकोड़ी ।

"कोई वजह तो ज़रूर है", सलमा की ग्रावाज़ में व्यंग था ।

"इससे पहले तो यह हालत ग्रापकी कभी नहीं थी ।"

"इन्सान की एक जैसी हालत कभी नहीं रहती ।" उसके मुंह से निकला । "ग्रौर मैं भी तो ग्राखिर इन्सान ही हूँ ।"

"क्या मैं ग्रापकी उलझन जान सकती हूँ ?" सलमा बोली, "शायद मैं इसका हल पेश कर सकूं ।"

"मेरी उलझन का इलाज ग्रापके पास नहीं है ।"

"फिर किसके पास है ?"

"ग्राप हिस्टरी में कमज़ोर हैं ।" सुहेल बोला, "तारीख पढ़िए ग्राप ग्रौर मेरी उलझनों को जाने दीजिए ।"

"मगर मैं तो इस वक्त मोमन को पढ़ना चाहती हूँ ।"

"ग्रच्छा" वह बोला, "ग्रौर ग्राप ।"

वह रुखसाना से सम्बोधित हो रहा था ।

"ग्राप क्या पढ़ना चाहती हैं ?"

"मैं मौजूदा दौर के ग्रदीबों के बारे में कुछ ग्रौर जानना चाहती हूँ । मुझे एक निबन्ध लिखना है ।" रुखसाना की कपकपाई हुई ग्रावाज़ सुनाई दी ।

"बेहतर" सुहेल ने रुखसाना की ग्रावाज़ की कपकपाहट को ग्रनुभव करते हुए उससे बहुत कुछ ग्रनुमान लगाने की चेष्टा की ।

"एक दिन मैं उर्दू साहित्य के ग्रमर उपन्यास "लरज़ते ग्राँसू" के विषय में ग्रापसे बातें कर रह था ।" सुहेल बोला ।

"उस उपन्यास की हीरोइन तसनीम के बारे में ग्रापकी क्या राय है ?" "मेरा मतलब इसके प्रेम करने के ढंग से है ?"

सुहेल ने इस पर्दे में ग्रपने दिल की बात मालूम करनी चाही । ग्रौर रुखसाना ने शरमाते हुए कहा ।

"तसनीम का प्रेम पूर्व की उन शरीफ ग्रौर शरमीली लड़कियों का

उल्लेख है जो कि अपनी ज़ुबान से प्रेम का प्रदर्शन करना पाप समझती हैं। इस आईने में आप पूर्व की और विशेष रूप से शरीफ़ मुसलिम घरानों की हर लड़की की खामोश मुहब्बत का तमाशा देख सकते हैं।"

"और तुम्हारी मुहब्बत का तमाशा" सलमा ने जलकर कहा और रुखसाना इस पर बौखला गई और बड़ी घबराहट की दशा में उसके मुंह से निकल गया।

"और मेरी मुहब्बत का तमाशा भी।"

यह सुनकर सुहेल का चेहरा एकदम खिल उठा। रुखसाना ने घबराकर अपना मुँह बंद कर लिया।

सलमा बोली। "ओह, तुम तो लरज़ते आँसू की तसनीम का रोल अदा कर रही हो।" उसने रहस्यमय ढंग से रुखसाना को देखा।

"और इस कहानी में जावेद कौन है? और शहनाज?"

"आप तो बेकार बात बढ़ा रही हैं सलमा बहिन। वह तो मैं नावल की बात कर रही हूँ।"

अब सुहेल के लिए हर बात साफ थी। वह मारे खुशी के दिवाना हुआ जा रहा था। उसने सलमा को संबोधित किया।

"आप जावेद और तसनीम की फिक्र छोड़कर मोमन की फिक्र कीजिये। आपको मोमन पढ़ा कर मैं रुखसाना को उसके निबंध के लिए मैटर देना चाहता हूँ।"

"मगर मैं तो आप से न पढ़ूँगी।" सलमा बिगड़ गई। "आप तो रुखसाना को पढ़ाइये।"

यह कहकर वह मारे गुस्से के उन्नाई हुई वहां से बड़ी तेज़ी से उठी और ड्राइंग रूम से बाहर चली गई। रुखसाना का मुँह फक हो गया और सुहेल के हाथों के तोते उड़ गए।

"सलमा बहिन। सलमा बहिन।"

कहती हुई रुखसाना सलमा के पीछे भागी और सुहेल ने कमाल साहस से काम लेते हुए लपक कर उसका हाथ पकड़ लिया।

"खुदा के लिए" वह बड़ी घबराहट में बोला, "सिर्फ इतना बताती जाइए कि मैंने आपके बारे में गलत तो नहीं समझा शायद इसके बाद

मैं यहाँ पढ़ाने न आ सकूं।"

रुखसाना का सारा शरीर कांप गया। उसका सारा शरीर पसीने में डूब गया। वह मारे शर्म के भूमि में गड़ी जा रही थी। सुहेल ने घबराये हुए अंदाज़ में पूछा।

"आप मुझ से प्रेम करती हैं ना।"

रुखसाना को सुहेल की घबराहट और उसकी बेचैनी पर दया आ गई। उसकी गर्दन अपने आप स्वीकृति सूचक हिल गई और एक छलावे की भाँति वह अपना हाथ छुड़ाकर सुहेल की नज़रों से ग़ायब हो गई। यह सब कुछ सैकिंडों में हुआ।

सुहेल बड़े शान्त स्वभाव से इस बँगले से बाहर निकल रहा था।

●

सलमा ने अपने दिल में प्रण कर लिया था कि वह रुखसाना और सुहेल को उसकी लगन का मज़ा बड़ी अच्छी तरह चखायेगी।

इसलिये उसने सबसे पहला काम यह किया कि उसने यह फ़ैसला कर लिया कि अब सुहेल और रुखसाना एक दूसरे की आहट भी न पा सकेंगे। वह इन्हें एक दूसरे की आवाज़ के लिए तरसाना चाहती थी। उसने तय कर लिया कि अब रुखसाना सुहेल से न पढ़ेगी। वह उसे इतना तंग करेगी और उसके दिल व जिगर में इतने नशतर चुभोएगी कि वह चीख पड़े, इसलिए उसने अपनी मां से कहा।

"रुखसाना अब मास्टर साहिब से नहीं पढ़ेगी अम्मी।"

"क्यों ?"

"इसकी वजह बताकर मैं अपने ख़ानदान को बदनाम करना नहीं चाहती।"

"क्या मतलब।" उसकी माँ चीक पड़ी। और सलमा ने चबा-चबा कर कहना शुरू किया।

"वह मास्टर साहिब से पढ़ते-पढ़ते उनकी मुहब्बत की आग में सुलगने लगी है।"

"हाय !"

"जी" वह बोली, "और इसीलिए मैंने यह फ़ैसला किया है कि अब वह मास्टर साहिब से नहीं पढ़ेगी।"

"अच्छा" शदो बीबी बोली, "अच्छा मैं इस कमीनी लड़की का अभी ख़बर लेती हूँ।"

"आप इस मामले में बिल्कुल न बोलिए अम्मी" सलमा बोली। "ख़बर लेने की ज़रूरत नहीं। इससे ख़ामख़ाह के लिए वह मास्टर भी बिदक जाएगा और फिर मेरी पढ़ाई भी खराब हो जायेगी। आप तो बोलिए ही मत। मैं ख़ुद सब कुछ ठीक कर लूँगी। इतना क़ाबिल और समझदार मास्टर मुझे दूसरा नहीं मिल सकता।"

"मग़र रुखसाना की यह मज़ाल, इतनी जुर्रत इस कमीनी लड़की में। क्या इसके अम्मा अब्बा ने भी यही तालीम दी है इसे।"

"मैं कहती हूँ आप तो बस चुप रहिए अम्मी जान। तमाशा देखती जाइए। आपको बोलने या बात करने की ज़रूरत नहीं।"

"क्यों बोलूँ जी। मैं तो इसको इसी वक्त चोटी से पकड़ कर घर से निकालती हूँ।"

"अम्मी आपको मेरी कसम।"

बेटी की इस कसम पर शदो बीबी चुप हो गई।

●

रुखसाना बेहद उदास और खोई-खोई अपने कमरे में बैठी थी। ज्यों-ज्यों मास्टर साहिब के आने का वक्त निकट आता जाता था उसके दिल की धड़कन तेज हो जाती थी और वह यह सोच रही थी कि आज कैसी गुज़रती है। उसका दिल सलमा से डर रहा था। वह ख़ूब अच्छी तरह समझ चुकी थी कि सलमा अब बिना गुल खिलाए हरगिज़ नहीं रहेगी। वह सलमा के दिल की जलन से अच्छी तरह परिचित थी। इतने में सलमा उसके कमरे में स्वयं ही आ गई और आते ही बोली।

"देखो जी। मास्टर साहिब से पढ़ने की ज़रूरत तुम्हें बिल्कुल नहीं। अब तुम उनसे न पढ़ोगी।"

यह सुनकर रुखसाना को जैसे कि काठ मार गया हो, सलमा ने

उसके दिल की हालत का अनुमान लगाते हुए बड़ी निर्दयता से काम लेते हुए कहा।

"यह शरीफ़ों का घर है। यहां इश्क मुहब्बत की दुकान तुम न लगा सकोगी।"

यह कहकर वह चली गई और रुखसाना पर जैसे कि मानों बर्फ पड़ गई। उसके दिल पर यह पहला चर्का लगा कर सलमा के दिल को एक खास प्रकार की शान्ति मिल गई। उसे हद से ज्यादा प्रसन्नता हुई।

मारे खुशी के उसकी बाछें खिली जा रही थीं। वह इधर अपने जले दिल के फफ़ोले फोड़कर खुश थी और उधर सुहेल असमंजस में था। वह सोच रहा था कि ट्यूशन पर जाए या न जाए।

वह बहुत देर तक सोचता रहा। बड़ी देर तक इसी उधेड़ बुन में लगा रहा कि उसके दिल ने उससे कहा।

"आख़िर ट्यूशन पर न जाने की वजह क्या है? कोई निकाला तो वह वहाँ से गया नहीं है, फिर इस प्रकार की चिंता करने से क्या लाभ?"

और फिर प्रेमिका के सामयिक विचार से वह प्रफुल्लित हो उठा, और उसने यह निर्णय कर लिया कि वह ट्यूशन पर ज़रूर जाएगा, फिर जो होगा वह देख लिया जाएगा।

वह ट्यूशन पर जाने को तैयार हो गया।

नौकर ने आकर सूचना दी कि मास्टर साहिब तशरीफ ले आये हैं। यह सुनकर सलमा के चेहरे पर बदले का रंग उभर आया। वह अपना निचला होंठ दबाकर मुस्कराई। उसने नौकर लड़के से कहा।

"रुखसाना से जाकर कह आओ कि मास्टर साहिब तो आ गए हैं मगर तुम्हारे आने की ज़रूरत नहीं है।"

वास्तव में वह रुखसाना को मास्टर के आगमन की सूचना भिजवा कर उसे तड़पाना चाहती थी और उसका यह निर्णय पूरा हो गया। जिस समय नौकर ने सलमा का यह कहा हुआ वाक्य उसके सामने आकर दुहराया तो वह मुर्झा कर रह गई और उसका दिल उसके

पहलू में बेकरारी की हालत में तड़प उठा। उसे अपनी बेबसी पर स्वयं तरस आ गया और आँसू उसकी पलकों तक आकर वापिस चले गये।

उसने आँख उठाकर मेज़ पर रखी हुई घड़ी को ध्यान से देखा जैसे कि वह विनती कर रही हो कि मैं यह दो घंटे किस तरह काटूँगी। वह कल्पना में मास्टर साहिब को देख रही थी और अपनी उस जगह को देख रही थी जहाँ कि वह पहुँच कर बड़े अदब से झुक कर मास्टर साहिब को सलाम किया करती थी।

न चाहते हुए भी उसके मुँह से अकस्मात निकल गया। "तस्लीमात अर्ज़।"

"आदाब अर्ज़।"

सलमा ने पर्दे के पीछे से बड़े व्यंगात्मक ढंग से मास्टर साहिब को सलाम किया और अभी वह दूसरी आवाज़ की प्रतीक्षा ही कर रहा था कि सलमा बोली।

"अब इसके आगे आयत है मास्टर साहिब। मतलब यह कि अब आपसे सिर्फ़ मैं पढ़ूँगी।"

वह कुर्सी पर बैठ गई। वह मुस्करा रही थी और उधर सुहेल चुप था कि वह बोली।

"मतलब यह हज़ूर कि आपको इसका बिलकुल मलाल न होना चाहिए। आपकी तनख्वाह में मेहनत की कमी का असर बिलकुल न पड़ेगा। आपको वही तनख्वाह मिलेगी जो अब तक मिलती आई है।"

और सलमा के इस व्यंग और छिछोरपन पर सुहेल बिलबिला कर रह गया और कोशिश के विपरीत उसकी ज़ुबान से निकल गया।

"क्या इंसान के लिए दुनिया में दौलत ही सब कुछ है।"

और फिर वह सँभल कर बोला।

"मेरा मतलब है कि आपको इस प्रकार की झूठी-मूठी बात मुझसे न करनी चाहिए थी।"

"आप तो अभी से रो दिए," सलमा ने सुहेल के दिल में बड़े जोर से चुटकी ली और वह झुँझला कर बोला।

"आप कोर्स की बातें कीजिए। हां, क्या पढ़ना है आप किताब निकालिए।"

सलमा उसके दिल पर नश्तर चुभो कर मुस्करा रही थी। वह बोली। "गालिब के इस शेर का मतलब तो ज़रा समझाइए।"

"ज़ख्म सिलवाने से मुझ पर चारा जोई काहे तान।
गैर समझा है कि लजत् ज़ख्म सो ज़न में नहीं।"

"मेरा ख्याल है हजूर कि आप दिवाने गालिब पर तो दया कीजिए," सुहेल जलकर बोला।

"आप तो और दूसरे विषयों पर ज़्यादा ध्यान दीजिए और फिर उर्दू शायरी तो आपका विषय नहीं है।"

"देखिए मास्टर साहिब !" सलमा बोली, "आपको इस बहस की क्या ज़रूरत है कि मेरा विषय क्या है और क्या नहीं है। आप तो वही पढ़ाइए जो कि मैं पढ़ना चाहती हूँ।"

और फिर वह फ़ौरन ही बोल पड़ी।

"आप हिस्टरी निकालिए" सुहेल ने उसकी बात के जवाब में न उलझकर कहा।

"आप बेकार बातों में वक्त ज़ाया कर रही हैं।"

और फिर उसने फ़ौरन ही सवाल किया।

"लुई चतुर्थ के बारे में आपकी क्या राय है ?"

"और रुखसाना जो पढ़ने नहीं आई उसके बारे में आपका क्या ख्याल है।"

"देखिए" वह निर्णयात्मक ढंग से बोला।

"मैं कल से आपको कभी भी पढ़ाने न आऊँगा।"

"कहीं ऐसा गज़ब न कीजिएगा।" वह एकदम बोली।

"मेरा सारा प्रोग्राम अपसैट होकर रह जाएगा।"

"आपका प्रोग्राम !" सुहेल ने प्रश्न किया। "क्या है आपका प्रोग्राम।"

और वह फ़ौरन संभल गई।

"इस साल पूरे कालेज में अव्वल आने का प्रोग्राम और क्या ?"

"फिर बिस्मिल्लाह शुरू कीजिए।"

और फिर वह गंभीरता के साथ पढ़ने लगी। वह पढ़ रही थी और वह सोच रहा था कि आखिर रुखसाना पढ़ने के लिए क्यों नहीं आई। आखिर में उससे न रहा गया और वह पूछ ही बैठा।

"क्या रुखसाना की तबीयत खराब है ?"

"नहीं तो।"

"फिर।"

"उसने आपसे न पढ़ने का फैसला कर लिया है।"

"आखिर क्यों ?"

"वह कह रही कि आपकी आदतें उसे बिलकुल पसन्द नहीं हैं और फिर वह घर वालों से आपकी शिकायत करने जा रही थी कि मैंने समझा बुझाकर उसे रोक दिया।"

यह सुनकर सुहेल सन्नाटे में आ गया। उसका सिर चकरा गया और करीब था कि रुखसाना के बारे में कोई गलत राय स्थापित करे कि इतने में सलीमन चाय लेकर आ गई और वह बोली।

"वाह बीबी, आपने स्वयं ही तो उन्हें पढने से रोका है और अब आप यह फ़रमा रही हैं कि वह पढ़ना नहीं चाहती। उसकी राय मास्टर साहिब की तरफ से खराब है।"

यह सुनकर सुहेल की जान में जान आ गई। और सलमा ने सलीमन को डांटा।

"क्या बात है बेटी।" रज़िया ने रसोई घर से अपने कमरे में आते हुए रुखसाना को देखकर कहा। "तुम पढ़ने नहीं गईं और यह तुमने चाय भी नहीं पी। तबीयत तो ठीक है ना ?"

"हाँ ठीक है।" वह बुझे दिल के साथ बोली, "हुक्म मिला है कि आज से मास्टर साहिब से नहीं पढ़ सकती। सलमा बहिन ने यह नादिरशाही हुक्म चलाया है मेरे ऊपर।"

"अच्छा।" वह घुट सी गई।

"फिर।"

"फिर क्या।" रुखसाना बोली, "हुक्म हाकिम मरगे मफा। नहीं गई पढ़ने।"

और फिर वह बोली।

"आप इस मामले में कोई बात न कीजिएगा। हम कोई फ़ीस थोड़ा ही देते थे। यह तो उन लोगों के रहम करम की बात थी। जब तक उनका जी चाहा उन्होंने पढ़वाया।"

इतने में इकबाल आ गया और वह जलकर बोला।

"इनके बाप को भी पढ़वाना पड़ेगा। वह होती कौन है हुक्म चलाने वाली।"

"अमीर बाप की लाडली बेटी है वह" रुखसाना बोली। "तुम चुप रहो इकबाल, बात बढ़ाने की ज़रूरत नहीं है।"

"मगर बाजी।"

"तुम्हें मेरी कसम इकबाल" उसने इकबाल की खुशामद की।

"तुम न बोलना भैया।"

उसकी आंखों में आंसू थे और वह अपने होंठ काट रही थी।

इधर सुहेल अपने होंठ काट रहा था। वह बड़बड़ाया।

"इस लोंडिया ने क्या मुझे अपना गुलाम समझ रखा है। मैं उसे अब हरगिज़ पढ़ाने न जाऊँगा।"

"बुद्धू।"

उसके दिल ने उसको इस फ़ैसले पर रोका।

"फिर तुम मेरे दुःखों का इलाज कैसे कर सकोगे। अगर तुमने इस घर का आना जाना बंद कर दिया तो फिर रुखसाना की कोई खैर खबर तक तुम्हें न मिल सकेगी और फिर तुम उससे हमेशा हमेशा के लिए दूर हो जाओगे। कोई ऐसी राह निकालो कि सांप भी मरे और लाठी उठाने की भी आवश्यकता न पड़े। अकल से काम लो और अपने लिए रास्ता निकालो।"

"क्या करूँ मैं।" वह जैसे कि उलझकर बोला।

"तुम सलमा को इस गलत फ़हमी में रखो कि तुम उसे चाहने

लगे हो। तुम उसके साथ झूठी मूठी मुहब्बत का नाटक रचो। इस तरह तुम रुखसाना के निकट रह सकोगे और तुम उसे एक न एक दिन प्राप्त कर ही लोगे।"

"अच्छा" वह शंकित हृदय से बड़बड़ाया, "चलता हूँ, देखता हूँ कि क्या होता है। मैं सलमा को पढ़ाने जाता हूँ।" फिर उसका कलेजा मसोसने लगा। "मगर रुखसाना की मुहब्बत उसका प्यार जो मुझे चैन नहीं लेने देता" वह बड़ी व्यग्रता से बड़बड़ाया, "न जाने हमारी मुहब्बत का अन्त क्या होगा।"

●

रुखसाना करवट बदलते हुए बड़बड़ाई।

"इस नई मुसीबत का परिणाम तो मुझे बड़ा भयानक नज़र आता है।" वह बिना पानी के मछली की भांति तड़प कर बड़बड़ाई।

"मास्टर साहिब की मुहब्बत तो मुझे किसी को मुँह दिखाने के योग्य भी न रखेगी। अपनी दुखी माँ के लिए मैं और भी जीता जागता शोक बनती जा रही हूँ।"

उसने अपने ऊपर लानत की। उसे अपने अस्तित्व पर बड़ा क्रोध आ रहा था।

"काश कि मैं मर जाऊँ। झगड़ा साफ हो जाए मेरी ज़िदगी का। मेरी माँ को मेरे गमों और मेरी चिन्ता से मुक्ति मिल जाए।"

"दिल ! दिल !" वह घृणा से मुँह बनाकर बोली, "खुदा समझे इस नामुराद को। यह आपत्ति इसी की लाई हुई है। जी चाहता है कि पहलू से निकाल बाहर फेंक दूं इस नामुराद को। कुत्ते और बिल्ली के आगे डाल दूं इस कम्बख्त को।" वह रुआँसी हो गई।

वह तड़प रही थी और बेचैन थी और सलमा बड़े मज़े में अपने कमरे में रेडियो प्रोग्राम से अपना दिल बहला रही थी और सुरैया बड़ी व्यथा की दशा में चीख रही थी।

"रहिए अब ऐसी जगह जहां कोई न हो।
हम सुख कोई न हो और हम ज़ुबां कोई न हो।"

"बेदरो दीवार सा एक घर बनाना चाहिए,
कोई हमसाया न हो, और पासबां कोई न हो।"
"पड़िए गर बीमार तो कोई न हो तीमारदार।
और गर मर जाइए तो नोह खाँ कोई न हो।"

सलमा खुश थी और रुखसाना दुःखी। वह अपने दुःख को कलेजे से लगाए हुए थी और निढाल होती जा रही थी। उसके होठों पर आहें थीं और उसकी आँखों में आँसू थे। और उसके होंठों पर मुस्कराहट थी। एक ऐसी मुस्कराहट जो किसी कीं बेचैनी के साए में परवान चढ़ती हो। उसने रेडियो की सुई किसी और स्टेशन पर जाकर रोक दी। कोई गा रहा था।

"मुहब्बत में एक ऐसा वक्त भी आता है इन्सान पर,
सितारों की चमक से चोट लगती है रँगे जाँ पर,"

उसने सुई और आगे बढ़ा दी। सुधा चटखारे ले लेकर गा रही थी।

"दर्दे दिल हो दर, दर्द, दुनिया है ही बज मज़ा
दर्दे दिल—हो—"

रुखसाना ने जाकर अपना मुँह ही चादर से ढाँप लिया। वह बड़बड़ाई।

"मुरदार। तुझे देता होगा यह दर्दे दिल बड़ा मज़ा। यहाँ तो जान पर बन गई है।"

●

जेका बीबी, अलताफ़ की माता हालांकि कब्र में पैर लटकाए बैठी थी; मगर परलोक की चिन्ता की जगह उसे संसारी ग़मों की अधिक चिन्ता थी और वह दिन रात इसी उधेड़ बुन में लगी रहती थी कि किसी तरह यह तीन आदमी इस घर से निकलें और उसके सर से बोझ टले। अब वह रज़िया, रुखसाना और इक़बाल की सूरत से भी बेज़ार थी।

वह अपनी बहू शदो बीबी से भी बेज़ार थी "तुम ऐसा करो

दुल्हन कि इन तीनों खुदाई ख्वारों को लेकर अल्ताफ़ के दोस्त की बेटी की शादी में चली जाओ। मैं घर ही पर रहूँगी। मैं उनके सारे संदूक उलट कर आज वह सारे खत निकाल लूँगी जो एक लाख के सिलसिले में उनके पास सबूत बने पड़े हैं।"

"हाँ ! अम्मी जान" शदो यकबारगी चहक कर बोली, "यह काम आज आप निपटा ही दीजिए। एक बहुत बड़ा कांटा निकल जाएगा।"

और फिर वह खुशी में फूले न समाने वाले ढंग से रज़िया के घर में आई। रज़िया अपने कमरे में नहीं थी। वह स्वाभावानुसार रसोई घर में दासी का काम कर रही थी। इकबाल और रुखसाना अपने कमरे में थे। आज उनकी छुट्टी थी। इकबाल स्टडी कर रहा था और रुखसाना बड़े उलझे हुए ढंग में अपने बालों में कंघा कर रही थी।

"भाभी जान कहां हैं ?" उसने कमरे में जाते ही सवाल किया। इस पर इकबाल बड़े तीखे स्वर में बोला।

"आप तो जानती ही हैं फूफी जान कि वह इस वक्त हमेशा रसोई घर में होती हैं।"

"हां, हां" वह इकबाल की इस चोट को समझ कर बगलें झांकते हुए बोली।

"अच्छा तुम लोग तैयार हो जाओ। हम सब शादी में चल रहे हैं।" और इस पर इकबाल ने अपनी फूफी को बड़ी हैरत से देखा और रुखसाना का कंघा भी उसके बालों में फंसकर रुक गया। और वह यह कहकर रसोई घर की तरफ़ लपकी।

रसोई घर में रज़िया चिकन सूप तैयार कर रही थी। उसने जाते ही रज़िया से बड़े अपनत्व से कहा।

"अरे ! यह आप हर समय रसोई घर में अपनी जान क्यों मारा करती हैं। क्या इस घर की नौकरानियां मर गई हैं।" और वह भी शदो बीबी के इस अचानक परिवर्तन को देखकर भौंचका होकर बोली।

"क्यों री नमक हराम, काम-चोर, मुरदार आखिर तू क्या करती

है। भाभी जान को तूने इस घर में क्या समझ रखा है।"

वह इस पर बुरी तरह बरसने लगी। रज़िया और इनकी नौकरानी सलीमन दोनों ही यह देखकर हैरान रह गईं।

और फिर वह दोनों को अपने साथ ही लेकर वहाँ से लौटी।

"आप शादी में चलने की तैयारी कीजिए। हम लोग ठीक अढ़ाई बजे यहाँ से रवाना हो जाएंगे।"

"आप जाइए अम्मी" रुखसाना बुझे हुए दिल से बोली। "मैं शादी वादी में नहीं जाऊँगी।"

"मगर" रज़िया बोली। "वह बुरा मानेगी बेटी। तैयार हो जाओ। चलना ज़रूरी है।"

"कोई ज़बरदस्ती है क्या ?"

"यही समझ लो बेटी। इनका भला बुरा हर हुक्म मानने के सिवा हमें और चारा ही क्या है।"

फिर रुखसाना भी बुझे दिल से तैयार हो गई और यह पूरा काफ़िला सलीमन समेत शादी पर रवाना हो गया।

जैसे ही यह लोग शादी में शरीक होने के लिए बंगले से निकले और इनकी कार आगे जाकर सड़क के एक तरफ़ मुड़ गई। जेक़ा बुढ़िया ने बड़ी ही बेचैनी की हालत में रज़िया के कमरे में कदम रखा।

और वह जल्दी-जल्दी इनके सारे सन्दूक उलटे डाल रही थीं।

उसने पूरे कमरे में चीज़ों का ढेर लगा दिया और अब वह तीन खत अपने कलेजे में धर कर मुस्करा रही थी।

उसने इन तीनों लिफ़ाफों को अपने एक बड़े से घेरे वाले गरारे में उड़स लिया और अब वह इन सारी चीज़ों को इसी ढंग में सन्दूकों में जमा रही थी। चालाक बुढ़िया थी और फिर एक पुलिस इंसपेक्टर की मां थी। वह कोई ऐसा निशान छोड़ना नहीं चाहती थी कि वह इन लोगों को संदेह में रखे।

उसका माथा पसीने से डूबा हुआ था। वह एक बहुत बड़े और महत्वपूर्ण काम से निवटी थी।

❁

सुहेल आज न जाने क्यों बेहद उदास था और शोकाकुल था। वह चुपचाप अपने कमरे में मुँह लपेटे पड़ा था कि उसकी माँ हाज़िरा बड़े दुखे हुए दिल के साथ उसके पास आईं। वह अपना प्यार भरा हाथ उसके सिर पर रख कर बोली।

"क्या बात है बेटे।" उसकी आवाज़ में ममता की मिठास घुली हुई थी।

"मैं देख रही हूँ कि तुम आजकल बहुत उदास रहते हो। क्या दुःख है मेरे लाल को ?"

और माँ की इस मुहब्बत और प्यार पर उसका दिल भर आया। वह बड़ा प्रभावित होकर बोला। "कोई बात नहीं अम्मी।" वह उठ कर बैठ गया।

"क्यों ?"

"यही कि तुम्हें कोई पसन्द आ गई।"

"छोड़िए भी अम्मी" वह कुछ उलझ कर बोला।

"क्या बेकार बातें आप ले बैठी हैं।"

"कौन है वह ? मुझे बताओ सुहेल। अगर मैं उसे तुम्हारी दुल्हन न बना दूं तो फिर कहना।"

अपनी माँ के मुँह से यह सुनकर सुहेल के चेहरे का रंग सुर्ख हो गया और उसका दिल बड़े ज़ोर से धड़कने लगा। शर्म से उसकी गर्दन झुक गई।

"क्यों पकड़ लिया न आखिर चोर" हाज़िरा मुस्कराई और उसने सुहेल के गाल पर एक चपत लगाकर कहा।

"मां से चन्दराने चला था।"

वह इससे बड़े प्यार से पूछ रही थी।

"क्या किसी बहुत बड़े घराने की लड़की है वह।" सुहेल कोई

उत्तर न देकर कमरे से भागा।

"कहाँ भाग रहे हो।"

"नहीं अम्मी। मेरे दोस्त नीचे खड़े मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

और धड़-धड़ करके वह सीढ़ियां उतरने लगा। हाज़िरा और सईदा दोनों मिलकर देख रहीं थीं। हाज़िरा बड़े गर्व से बोली। "कितना नेक और शरमीला है मेरा बेटा। अल्लाह ऐसा नेक और लायक बेटा हर एक को दे।"

गर्व और खुशी से उसका चेहरा खिला जा रहा था।

बनी अहमद सुहेल का बाप आज रात काफी देर के बाद जब फल बेचकर वापिस लौटा तो उसकी पत्नी हाजिरा को उस पर बड़ा तरस आया और वह कुढ़ कर रह गई।

और फिर वह चूल्हे के पास जाकर बैठ गया।

"आज क्या पकाया है।" वह पेट सहलाते हुए बोला।

"आज तो बड़े ज़ोर की भूख लग रही है।"

और हाजिरा उसके आगे रोटी की डलिया बढ़ाकर हंडिया का ढक्कन खोलते हुए बोली। "कुछ खास तो नहीं। उड़दी का सालन है और अरहर की दाल।"

"अरे वाह, वाह" वह रोटी तोड़ते हुए बोला।

"बस फिर तो मज़ा आ जाएगा। उड़दी के सालन के लिए न जाने क्यों आज मेरा बार-बार जी चाह रहा था।"

और फिर वह जल्दी-जल्दी चार छः लुक्मे खाकर लुक्मा चबाते हुए बोला।

"सुहेल आज कुछ-कुछ परेशान और खोया सा दिखाई पड़ता है।"

उसने अपनी पत्नी की तरफ देख कर सवाल किया।

"मेरा ख्याल है कि वह किसी से मुहब्बत करने लगा है।"

और यह सुनकर बनी अहमद बैठे-बैठे इतनी ज़ोर से उछला कि

हाज़िरा घबरा गई। "हाऐं।"

उसके मुँह से निकला और वह हका-बका हाज़िरा का मुँह तकने लगा। हाज़िरा बोली।

"तो इसमें ताजुब और अचम्भे की बात ही क्या है। वह बड़ी शान्ति से बोली, "यह तो उम्र ही ऐसी होती है।"

"क्या मतलब।" बनी अहमद जैसे बोखला गया।

"यानी यह कि गोया उसे मुहब्बत करनी ही चाहिए थी।"

"मुहब्बत करने या न करने से थोड़ी होती है। वह तो बस हो जाया करती है।"

"अच्छा," बनी अहमद मुस्कराया।

"मगर मुझे तो किसी उम्र में किसी से मुहब्बत नहीं हुई।"

"अब रहने भी दीजिए" हाज़िरा धीरे से बोली।

"सईदा बरांडे में सो रही है। अन्दर सुहेल भी अभी-अभी किताब छोड़कर उठा है।"

"तो क्या हुआ।"

"लो और सुनो। कह रहे हैं कि तो क्या हुआ।"

"अच्छा। अच्छा।" वह खाने की तरफ फिर आकृष्ट हुआ।

"मगर यह बात तुम्हें कैसे मालूम हुई ?"

"माँ बच्चे का हर दुःख दर्द समझ सकती है।"

"तो गोया बाप बुद्धू ही होता है।"

"बाप चाहे बुद्धू हो या न हो। मगर उसे इन बातों की तरफ़ ध्यान देने की फुर्सत ही कहाँ मिलती है।"

"मतलब यह कि साहिबज़ादे का पढ़ना लिखना गया।"

बनी अहमद पीढ़े पर से उठते हुए बोला। हाज़िरा उसे खाने पर से इस तरह उठता देखकर बड़े दुःखी दिल से बोली।

"खाना पसन्द नहीं आया शायद।"

और वह नल पर हाथ धोते हुए बोला।

"नहीं, पसंद क्यों नहीं आया ?"

"फिर आप इतनी जल्दी उठ कैसे गए ?"

"पेट भर गया।"

और अब वह हाथ मुँह साफ़ कर रहा था। हाज़िरा बर्तन समेटते हुए बोली। "आपने खाया ही क्या है जो पेट भर गया।"

"पेट भर गया।" वह ज़मीन पर बिछे हुए बिस्तर पर बैठ गया।

"मगर यह तो तुमने कोई अच्छी खबर नहीं सुनाई।"

"इसमें बुराई की बात कौन सी है।" वह बर्तन समेट कर उठते हुए बोली।

"अरे वाह" बनी अहमद बोला।

"अब पढ़ने में इसका दिल क्या लगेगा खाक़।"

"इतना मूर्ख नहीं है" हाज़िरा पानदान से पान बनाते हुए बोली। "अभी तक तो वह पढ़ ही रहा है।"

"मगर वह है कौन ?"

"खुदा मालूम।"

"पूछा होता।"

"मुझे तो ख्याल हो रहा है वह जहां ट्यूशन करने लगा है वहीं।" अचानक बनी अहमद ने बात काटी।

"मगर वह तो बहुत बड़ी जगह है।" वह बहुत ज़्यादा परेशान होते हुए बोला।

"इंसपेक्टर अल्ताफ़ को कौन नहीं जानता। यह तो बड़ा गलत कदम उठाया है सुहेल ने।" वह सोच में पड़ गया।

"अगर यह बात है तो बहुत बुरा हुआ। वह यह कब गवारा करेंगे कि उनकी बेटी इस घर की बहू बने। मुझे तो इसमें सिवा बुराई के भलाई का निशान तक नज़र नहीं आता।"

"मेरी तो यह समझो उसने कमर ही तोड़ दी। मेरे तो सारे स्वप्न अधूरे होकर रह जायेंगे। मैंने उसे अपनी हड्डियाँ तोड़कर मजनू बनने के लिए नहीं पढ़ाया। उसे फ़रयाद नहीं इंजीनीयर बनना है।"

और फिर बनी अहमद अपने बिस्तर पर लेट गया। उसने एक बीड़ी जलाई और उसके कश पर कश लेने लगा। उसकी सूरत से

मालूम हो रहा था कि वह किसी बहुत बड़ी सोच में डूबा हुआ है और सिर्फ़ इस विचार में कि इस मामले पर कोई बात न होने पाए। हाजिरा अपने बिस्तर पर करवट बदलकर लेट गई और उसने यूं प्रदर्शित किया कि जैसे उसे बहुत ज़ोर की नींद आ रही है।

वह करवट बदल कर लेट गई। वह लेटी रही और बनी अहमद बीड़ी फेंककर एक गहरी आह भरता हुआ चादर लपेटकर दूसरी तरफ़ करवट बदलकर सो गया।

●

रुखसाना बार-बार अपने बिस्तर पर करवटें बदल रही थी। और सारा घर सो गया था। वह अब तक नहीं सोई थी। आज उसके दिल में मुहब्बत की टीस कुछ ज़्यादा ही उठ रही थी।

वह बेचैन थी, व्यग्र थी कि एकदम वह अपने बिस्तर से उठी।

उसने बड़ी ही बेचारगी और निराशा भरे ढंग में इधर उधर देखा। उसकी मां निश्चिन्त सो रहो थी और उसका भाई इकबाल भी बड़ी गहरी नींद में सो रहा था।

उसने बड़े प्यार से इन दोनों की तरफ देखा और उसका दिल उसके लिए कुढ़ने लगा। वह सोच रही थी यह उसकी माँ है। दुखियारी माँ, जिसकी किस्मत ने एक ऐसा पलटा खाया है कि उसका सब कुछ उससे छिन गया। वह लखपती से भिखारिन बन गई। खुद चार-चार छः छः नौकरों से काम लेने वाली दूसरे की गुलामी करने पर विवश हो गई। वह स्वयं दो टके की लौंडी बनकर रह गई इस घर में। पहले जिसके दरवाज़े पर हाथी झूमते थे आज उसके दरवाजे पर हाथी झूमना तो एक तरफ, उसका कोई दरवाज़ा ही नहीं रहा था। न कोई ठौर रहा और न कोई ठिकाना।

उसे अपनी माँ की इस हालत पर बड़ी दया आई और फिर उसे अपने आप पर क्रोध आने लगा। वह बजाए इसके कि अपनी माँ को खुश रखे, उसके साथ सहानुभूति करे और वह उसके घावों पर मरहम लगाए वह स्वयं उसके लिए मुसीबतों का पहाड़ खड़ा कर रही है

ग्रौर वह ग्रपनी माँ के लिए जीता जागता जहन्नुम पैदा कर रही है। वह मां के घावों पर मरहम नहीं लगा रही बल्कि वह ग्रपनी माँ के घावों के लिए मिर्चें पीस रही है। वह उसके घावों के लिए तेज़ाब बना रही है। उसने सोचा जब मेरी इस नामुराद मुहब्बत का हाल एक दिन फूटेगा तो यह घर वाले मेरी मां का हाल क्या करेंगे। वह उसे किस-किस तरह सतायेंगे, ज़लील करेंगे, बदनाम करेंगे, उनके जिगर पर कचोके लगायेंगे ग्रौर उनके दिल में तानों के भाले उतारेंगे। यह पूरा घर उसे ग्रावारा, बदचलन, वेहया, बेग़ैरत ग्रौर नीच-कुल की बेटी की माँ कहकर ज़लील करेगा। हँसेंगे ग्रौर कहकहे लगायेंगे ग्रौर कहेंगे कि यह खुद बदचलन ग्रौर ग्रावारा रही होगी तब ही तो इसकी कोख से ऐसी बेशर्म ग्रौर ग्रावारा लड़की ने जन्म लिया है।

फिर यह लोग ज़लील करके ग्रौर गालियाँ देकर उसकी माँ को इस घर में से जूते मारकर बाहर निकाल देंगे ग्रौर फिर वह गरीब दर-दर की ठोकरें खाती फिरेगी। क्या सोचेगी कि वास्तव में उसने किस क़िस्म की ज़लील लड़की को जन्म दिया है।

वह यह सब सोचकर काँप गई। उसने सोचा इसका भाई इकबाल सारी जिन्दगी किसी को मुँह न दिखा सकेगा। लोग उसे ग्रावारा बहिन का भाई कहेंगे ग्रौर उसके पीछे तालियाँ बजायेंगे। उसकी तालीम ग्रधूरी रह जाएगी। ग्रौर एक ज़रा सा सहारा जो उसे मिला है वह भी उससे छूट जायगा ग्रौर फिर वह कहीं का न रहेगा। उसका भविष्य ग्रंधकारमय हो जायेगा ग्रौर फिर वह सारी ज़िंदगी ग्रपनी बहिन के नाम पर थूकेगा ग्रौर कै करेगा।

ग्रौर फिर रुख़साना एकदम तड़प गई। उसने बड़ी बेबसी से ग्रपने तड़पते ग्रौर मचलते दिल को संभाल लिया। वह ग्रपना कलेजा मसोस कर उसी जगह ग्रपने बिस्तर पर गिर पड़ी।

ग्रौर भिंची भिंची ग्रावाज़ में रोने लगी। वह विनती करने लगी।

"मेरे रब ! मेरे करीम। रहम कर मेरी हालत पर। माफ़ कर दे मेरे गुनाहों को ग्रौर मुझे इस दुःख से निजात दिला दे। यह ग्राखिर क्या हो गया मेरे दिल को। यह किस किस्म की बीमारी, यह किस

प्रकार की यातना तूने मुझे दी है कि मैं किसी से बता तक नहीं सकती।"

वह फिर कहने लगी।

"माबूद ! तुझे अपने रसूल का सदका, मुझे इस शर्मनाक कष्ट से छुटकारा दिला दे। मेरे दिल को मेरे काबू में कर दे जो मेरे से बाहर हुआ जा रहा है। इस ठंडी आग से मुझे क्या लेना जो मेरी आत्मा को जलाये डाल रही है।"

वह झुंझला गई। "इस आग में तो मेरे खानदान की इज्ज़त तक जल जाएगी मौला। छुटकारा दिला दे मुझे इस शर्मनाक मौत से।"

वह तकिए में मुंह छुपाकर और अपने होठों को खूब अच्छी तरह से मींचकर और अपने दोनों हाथों से खूब अच्छी तरह अपने मुंह को दबाकर चीखी।

वह एकदम बड़े ज़ोर से बिलबिलाई।

"खुदाया ! तू यह नामुराद मुहब्बत मेरे दिल से जुदा कर दे।"

और फिर वह स्वयं ही चौंक पड़ी। उसने अपना मुंह बड़े ज़ोर से अपने दोनों हाथों से दबाया और फिर उसने अपनी ज़ुबान अपने दांतों के बीच दबाई।

वह सारी जान से कांप रही थी। उसका सारा शरीर पसीने में भर गया था। उसकी अपनी आवाज़ गर्म-गर्म सीसे की तरह उसके कानों में दूर तक उड़ेलती चली जा रही थी। वह एकदम सन्नाटे में आ गई।

अभी वह इसी दशा में थी कि उसकी मां रज़िया की आंख खुल गई और वह घूर कर अपने बिस्तर से उठते हुए बोली।

"क्या हुआ ? क्या हुआ ? बेटी ? क्या बात है ?"

उसे ऐसा लगा जैसे कि किसी ने उसे फांसी के तख्ते पर ढकेल दिया हो।

उसके सारे शरीर में सन्नाटा समा गया और उसके सारे शरीर में सुइयां चुभने लगीं।

वह सोई हुई बनना चाह रही थी कि उसने आकर उसे झंझोड़

डाला।

"क्या हुआ बेटी ? क्या हुआ ?"

और वह जैसे कि नींद से चौंकते हुए बोली।

"हाँय। मां क्या हुआ ?"

वह उठ गई और अब वह अपनी हथेलियों से अपनी आंखें मल रही थी। रज़िया ने उसे एक बार और झंझोड़ा।

"रुख़साना।"

"क्या तुम बहुत देर से रो रही हो ?"

"यह आपकी हालत क्या हो रही है बाजी।" यह इकबाल का सवाल था और वह बहुत परेशान होकर बोली।

"कुछ तो नहीं। मैं तो अच्छी भली सो रही थी।"

उसने अपनी माँ से कहा, "आपने खामखाह जगा दिया।"

"मगर यह आँसू। यह तुम्हारे तमतमाए हुए गाल और बुरी हालत।"

"खुदा जाने।" वह अपने होठों पर ज़ुबान फेरते हुए बोली।

"शायद मैंने कोई डरावना स्वप्न देखा होगा।"

और फिर वह बात को खतम करने के ढंग से बोली।

"आप तो जाइए अम्मी और तुम भी सो जाओ इकबाल।"

यह कहकर वह जल्दी से औंधकर लेट गई जैसे कि उसे बड़े ज़ोर की नींद आ रही हो।

"अजब बात है।" रज़िया बड़बड़ाई। "न जाने इस लड़की को क्या होता जा रहा है।"

वह गरीब अपनी मां और अपने मासूम भाई की नींद उचाट हो जाने पर अपने आप को लानत भेज रही थी।



सुहेल के दिल ने तो उसे यह सलाह दी थी कि वह सलमा को फ्लर्ट करे। वह उसके साथ मुहब्बत का झूठा नाटक रचकर उसे बनाए और अपना उल्लू सीधा करने की कोशिश करे। उसकी चिट्ठियाँ प्राप्त

करने की कोशिश करे और यह तिगड़म सोचे कि वह सलमा को मूर्ख बनाकर रुख़साना को किस तरह प्राप्त कर सकता है, मगर उसकी अन्तरात्मा ने यह गवारा न किया।

दरअसल वह रुखसाना की पवित्र और सच्ची मुहब्बत में कुछ इस तरह फंसकर रह गया था कि सिवा रुख़साना और उसकी मुहब्बत के उसके दिल में आम आशिकी की तिगड़मबाज़ियाँ समाई नहीं जा रही थीं।

और वह बनी तिगड़मबाज़ियों और तदबीरों से खाली था कि एक दिन सलमा ने उसके दिल में बड़े ज़ोर की चुटकी ली। वह सलमा को पढ़ा रहा था और पढ़ाने में उसका दिल न लग रहा था। वह इस समय रुखसाना के ख्यालों में पूरी तरह खोया हुआ था कि सलमा ने उससे सवाल किया।

"आज तो जनाब कुछ ज़्यादा ही खोए हुए हैं?"

और वह न जाने किस प्रकार अपने पर संयम न रख सका और बोला।

"आपकी बहिन, मेरा मतलब है कि रुखसाना क्या अब मुझ से पढ़ने कभी न आएगी?"

और उसके मुँह से रुखसाना का नाम सुनकर सलमा की त्यौरियों पर बल पड़ गए, और वह चीख कर बोली।

"क्या बिना रुखसाना के आपको पढ़ाने में मज़ा नहीं आ रहा।"

वह चुप था कि वह फिर बोली।

"रुखसाना अब आपसे कभी नहीं पढ़ेगी।" उसने पैंतरा बदला।

"अब आपको उसकी उपस्थिति का भी पता न लगेगा। इसलिए कि उसकी जल्दी शादी होने वाली है।"

यह कहकर उसके अपने दिल को शान्ति मिल गई मगर सुहेल के दिल की हालत बदल गई। यह सुनकर उसे ऐसा मालूम हुआ कि जैसे किसी ने उसके दिल पर बड़े ज़ोर का घूँसा मारा हो।

सलमा ने पर्दे के पीछे से उसकी हालत को अच्छी तरह से देखा और मारे गुस्से के उसका मुँह लाल हो गया। उसके कान की लवें गर्म

हो गईं और उसका सांस ज़ोर-जोर से चलने लगा। उसका सीना धौंकनी बन गया और वह नथुने फड़का कर बोली।

"फरमाइए। मिजाज़ तो अच्छे हैं जनाब के।"

यह सब बातें सलमा ने केवल सुहेल को जलाने के लिए ही नहीं कहीं थीं बल्कि यह स्पष्ट था कि सिर्फ़ उसी की शरारत से यह हुआ था कि उसकी मां और बाप और उसकी दादी साहिबा इस पर चिन्तत थे कि रुखसाना की शादी जल्दी से जल्दी कहीं कर दी जाए।

दर असल उसने रुखसाना को अपने रास्ते से हटाने के लिए यह एक अच्छा तरीका सोचा था।

शदो बीबी, सलमा की मां, एक रिश्ते के लिए ज़िद किए हुए थी और रज़िया बिचारी होनहार लाडली बेटी रुखसाना की इस तबाही पर आठ-आठ आँसू बहा रही थी।

शदो बीबी मुँह बिगाड़ कर बोली।

"तो क्या तुम्हारी लाडली के लिए आसमान से कोई परा उतर कर आएगा, जो तुम नाक भौं चढ़ा रही हो।"

वह झुँझला कर डपटकर बोली।

"आखिर इस गफ़ार में कौन से कीड़े पड़े हैं जो तुम्हें उसके नाम से उकसाई आ रही है। भरा पूरा घर है। चार पैसे आखिर वह कमा ही लेता है। अगर वह लाट साहिब नहीं है तो तुम्हारी बेटी कौन सी रूपवती शहज़ादी है। कौन से सुरखाब के पर लगे हैं रुखसाना में जो तुम्हें गफ़ार बेचारा जच ही नहीं रहा। पहले अपनी बेटी की तरफ़ आँख उठा कर देखो। मुँह पर ठीकरे टूट रहे हैं। सूरत न शक्ल; भाड़ में से निकाल। फिर न गुण, न ढंग, न तालीम, न तरतीब; बोलती है तो मालूम होता है अल्लाह झूठ न बुलाए मुर्दा कफ़न फाड़ रहा है। न सीना आए न पिरोना। एक हंडिया तक तो गोश्त नहीं पका सकती और तुम इसके लिए रिश्ते इस तरह ढूंढ रही हो जैसी कि वह लाट साहिब की बच्ची है।"

वह बेज़ारी से बोली।

"वह तो दुवाएँ दो अपनी ननद को कि बेचारी मेरे कहने पर

उसकी शादी का बोझ उठाने को तैयार है। वरना इस ज़माने में कौन किसके लिए करता है। कोई बनो के अब्बा छप्पन करोड़ की चौथाई तो छोड़कर मरे नहीं है कि बिटिया के लिए लाट साहिब का बच्चा मिले। जैसी इसकी तक़दीर वैसा ही तो रिश्ता मिलेगा।"

"हूँ" जैको बीबी सलमा की दादी बुरा-सा मुँह बनाकर बोली।

"घर में नहीं खाने को और अम्मा गई भुनाने को। खुद तो मेरे बेटे के टुकड़ों पर पड़ी है और बेटी के लिए ख्वाब देख रही है नवाब वाजिद अलीशाह के पोते के।"

"मग़र" रज़िया बड़ी नम्रता से बोली।

"गफ़ार जाहिल आदमी है। ज़रा सोचिए तो सही रुखसाना उसके पास कैसे रह सकेगी और फिर रुखसाना से उम्र में भी कितना बड़ा है। यह उसी की तीसरी शादी है। उसकी सब से बड़ी बेटी के दो बच्चे हैं। वह रुखसाना से उम्र में दस वर्ष बड़े हैं और फिर गफ़ार के छः बच्चे और भी हैं। फिर मैंने सुना है कि इसका चाल चलन भी अच्छा नहीं है। आए दिन रंडी के चक्कर में रहता है। रेस, सट्टा, जुआ, शराब क्या कुछ नहीं करता वह। फिर उम्र में रुखसाना के बाप से भी बड़ा है।"

"ए···हैं।" जैको बुढ़िया सारी जान से थरक कर और नाक पर उँगली रखकर बोली।

"लो सुनो दूल्हा बाप की उम्र से बड़ा है। उसका चालचलन ठीक नहीं है। रेस, सट्टा, और जुआ खेलता है, शराब पीता है, जाहिल है।" वह मुँह बिगाड़ कर और नाक सिकोड़ कर बोली।

"और तुम्हारी लाडली क्या अभी तक दूध पीती बच्ची है। अगर शादी हो चुकी होती तो न जाने कितने बच्चे हो जाते। और फिर ज़ुबान खुलवाओ, तुम्हारी लाडली के चाल चलन कौन से दूध के धुले हैं। अगर रिश्तेदार का ख्याल न होता तो वह इस घर में रह भी नहीं सकती थी। हमें क्या कुछ नहीं मालूम। तुम्हारी तरह हमारी आंखों पर पर्दे तो पड़े नहीं हैं कि कुछ नज़र ही न आए। ज़ुबान अगर खुलवाती हो तो।"

"खैर होगा अम्मी जान।" शदो बीबी ने अपनी सास की बात काट दी। "इन बातों को छोड़िये। क्या फ़ायदा ?"

और फिर वह रोबदार स्वर में रज़िया से बोली।

"कान खोलकर सुन लो कि रुखसाना अब एक घड़ी भी कुंवारी नहीं रह सकती। उसका रिश्ता गफ़ार से ही होगा।"

"इसलिए कि वह गफ़ार से वायदा कर चुके हैं और उनकी ज़ुबान भी कोई चीज़ है। मैं सलमा के डैडी की बात अकार्थ थोड़ा ही जाने दूंगी।"

"मगर" जैसे कि रज़िया का दिल फट गया और वह घिघया कर बोली। "खुदा के लिए मेरी बेटी पर इतना बड़ा ज़ुल्म तो न कीजिए आप लोग। गफ़ार जैसे गुण्डे का और इसका कोई जोड़ नहीं है। वह शराबी, कबाबी, लफंगा, जुवारी और—"

"बस, बस।" शद्दो बीबी गरजी।

"खबरदार जो तुमने इनके दोस्त के बारे में गालियां बकीं। मुझसे बुरा कोई न होगा।"

वह निर्णयात्मक स्वर में बोली।

"यह रिश्ता तो तुम तय समझो।"

●

इंस्पेक्टर अल्ताफ़ अपने इलाके के सबसे बड़े सट्टेबाज़ और देशी शराब के थोक व्यापारी गफार भाई से हफ्ते की रकम वसूल करके अपनी जेब में डालते हुए बोला।

"यह रिश्ता सोलह आने तय ही समझो भाई।"

गफार भाई ने मारे खुशी के अपनी बत्तीसी जिसमें कि जगह-जगह तार फंसे हुए थे इस ढंग से बाहर निकाली कि उसकी तोंद पर पान का उगाल गिर पड़ा और वह लगभग कहकहा लगाते हुए बोला, "जवानी की कसम यार अल्ताफ मियाँ। जी चाहता है कि तुम्हारा मुँह चूम लूँ। मेरी बहन रुखसाना की बेहद तारीफ करती है। अपन साला जो ज़िन्दगी भर तुम्हारी गुलामी करेगा और रुखसाना भी याद करेगी

कि उसे कैसा गबरू जवान मिला है यार ।" उसने अपनी खिज़ाब में रंगी हुई बड़ी-बड़ी मूँछों पर ताव दिया ।

"निहाल न कर दूं तो फिर कहना ।"

"मगर अपना वायदा याद है न" अल्ताफ़ ने गफ़्फ़ार भाई को उसका वादा याद दिलाया ।

"यार तुम जानते हो इंस्पेक्टर साहिब, अपन लोग बात का एकदम धनी हैं । जब हम जबान पर हज़ारों का लेन देन नहीं भूलता यार तो इतनी बड़ी बात कैसे भूलेगा ।" उसने अपनी शान बताई ।

"यार क्या बताए हम साला । आज ही का किस्सा ले लो ना एक अपन का ग्राहक होता साला रमज़ू । वह कल पांच सौ की डबल खेला । मैनडी से चौंका । हर पूरे भाव में खाया होता । साली अपन मैनडी धड़ाक से गिरी । पूरे चार हज़ार चौंके पर फिरते होते । हम मैनडी बाहर नहीं निकाला होता । जब मैनडी गिरी साली तो अपन चौंका और होशियारी यह की कि पूरे तीन हज़ार निकाल दिए । पाँच सौ हम रख लिया । सुबह साला चौंका भी टपक पड़ा ।" वह मुस्कराया ।

"अपन का तो कूंडा हो गया मगर हम पूरे छत्तीस हज़ार का बिल रमज़ू हरामी को दस बजे चुकाया । इकीन न गिरे तो रमज़ू से पूछ देखो ।"

"अच्छा ।"

"और नहीं तो क्या यार, हम लोग बात का धनी है । तुमको हम सौ रुपया हफ़्ते का भूठ दिया है । हारे तो तुमको भी कभी बोला कि सौ लाओ । हां जितने तो देने जो कि परला कर दिया ।"

"हाँ ! हाँ ! यह तो ठीक है ।" अल्ताफ़ मुस्कराया ।

"मगर तुम साला हमको परसों के दिन जो माल भेजा था वह एकदम बकवास निकल गया । हम दोनों ने बोतल गटर में डाल दिया ।

"खुदा रसूल की कसम अल्ताफ भाई ।" गफ़्फ़ार बोला ।

"तो फिर ।"

"आज एकदम फर्स्ट क्लास लो ना अगर एक पैग में भूमने न लगो तो मुंह पर थूक देना ।"

"ओके" अल्ताफ़ बोला।

"तो पेशगी पाँच हज़ार कब दे रहे हो ?"

"जब चाहो ले लो।" गफार मुस्कराया।

"मगर शादी अपन साला की कब होयेगी ?"

"पहले तुम पांच हज़ार दे दो। मैं तारीख दे दूंगा।" अल्ताफ़ बोला।

"मगर बाकी दस हज़ार दूल्हा बनने से पहले चुकाओगे तो बात बनेगी।"

"शाम तक पाँच हज़ार ले लो।"

"फिर तारीख भी जल्दी दे दूंगा।"

और यह सुनकर गफ़ार जैसे कि बात पकाते हुए बोला।

"यार शादी जल्दी कर दो। रुखसाना की जुदाई साली अब चैन नहीं लेने देती आपको।"

"समझ लो कि यह शादी हो गई।"

"सच।"

उसकी बहुत सी राल उसकी तोंद पर गिर पड़ी और बत्तीसी की नुमायश दुबारा शुरू हो गई। वह बड़ी जल्दी से अपनी मूंछों को ताव देने लगा।

●

सुहेल बेहद उदास और शोकाकुल अपने विचारों में न जाने कहाँ खोया हुआ बैठा था कि सलमा की आवाज़ सुनाई दी।

"मैंने कहा जनाब।"

और वह एकदम जैसे स्वप्न से चौंक पड़ा।

"ज़रा इस शेर के मतलब तो समझा दीजिए।"

"तुम मेरे सामने होते हो गोया।
जब कोई दूसरा नहीं होता।"

और वह एकदम बोल उठा।

"मगर मुझे मोमन का यह शेर अधिक पसंद है।"

"यास सौ-सौ तरह सताती है।
जब कोई दूसरा आसरा नहीं होता।"

और फिर वह अपने विचारों में खो गया। सलमा ने उसे पर्दा खिसका कर देखा और फिर उसने और खिसका दिया। अब वह बिल्कुल उसके सामने बैठी हुई थी। वह सामने थी और वह अपनी गर्दन झुकाए रुखसाना की कल्पनाओं में खोया हुआ था कि वह उसकी तरफ ध्यान से देखते हुए बोली।

"क्या रुख़साना के सिवा और कोई आपकी नज़रों में नहीं समा सकता।"

वह एकदम चौंक पड़ा। उसने गर्दन उठाई। सामने उसके बिल्कुल सामने सलमा बैठी हुई थी। बड़ी हसरत भरी नज़रों से उसे देख रही थी। वह एकदम बौखला कर खड़ा हो गया और वह बिफर गई।

"हम भी आपकी यादों के दीप
अपने दिल में जलाए बैठे हैं।"

उसने हाथ बढ़ाकर सुहेल का दामन थाम लिया।

"खुदा का रहम कीजिए अपनी इस कनीज़ पर" वह गिड़गिड़ाने लगी।

"आपकी मुहब्बत हमें रातों को सोने नहीं देती।"

वह एकदम सहम गया। उसकी ज़ुबान गूँगी हो गई। और सलमा भावा-वेश में उसके बाजुओं में गिर जाने वाली थी कि वह एकदम सँभल गया और उसने सलमा की पकड़ से अपने आपको आज़ाद करते हुए कहा।

"आप शर्म, हया, सभ्यता और शराफ़त के दामन को दागदार बना रही हैं।" वह बड़ी तकलीफ़ से बोला।

"आप एक मुस्लिम शरीफ़ घराने की आनबान पर बट्टा लगा रही हैं।"

वह दो एक कदम पीछे हट गया और सलमा उसकी तरफ़ एक लिफ़ाफ़ा फैंकते हुए यह कहकर भाग गई।

"खुदा के वास्ते इसे पढ़ लीजिएगा। इसमें मेरी नाकाम आरज़ुओं

का मरसिया है ।"

सलमा अन्दर चली गई । सुहेल फर्श पर पड़े हुए इस लिफ़ाफ़े को बड़े ध्यान से देखता रहा कि एक ज़रा सी आहट पाकर वह चौंक पड़ा । और वह बड़ी तेज़ी के साथ ड्राइंग रूम से बाहर निकल गया। लिफ़ाफ़ा उसी तरह फ़र्श पर पड़ा था । सुहेल के जाते ही इकबाल ड्राइंग रूम में आया और उसने वह लिफ़ाफ़ा लाकर अपनी जेब में रख लिया ।

अन्दर सलमा अपने कमरे में परास्त हृदय तड़प रही थी और उधर रुख़साना ने बड़ी बेकरारी के आलम में सलीमन से गैररूवाही तौर पर पूछा ।

"क्या मास्टर साहब चले गए ?"

गफ़ार भाई दारूवाला की बहिन साबरा बाई, अपने भाई के शगुन और तारीख के लिए अल्ताफ के बंगले पर आई। वह साथ में मिठाई, फल, अँगूठी और जोड़ा लेकर आई थी और गफ़ार भाई इंस-पेक्टर अल्ताफ़ के लिए पाँच हज़ार के नोट और दो दर्जन देसी शराब की बोतलें लेकर आया था ।

साबरा बाई तो अन्दर चली गई और गफ़ार भाई अपनी बत्तीसी निकाले हुए अल्ताफ़ के पास ड्राइंग रूम में बैठ गया और वह बोला ।

"हम तुम्हारे लिए यार अल्ताफ़ मियाँ देखो कैसा माल लाया है" उसने अपने आदमी की तरफ इशारा किया और उसने शराब की दो दर्जन बोतलें निकाल कर ढेर कर दी ।

अल्ताफ़ मुस्कराया ।

"आज तो तुमने कमाल कर दिया गफ़ार भाई ।"

"कमाल अपन क्या किया यार । कमाल तो साला तुम किया यार कि अपन साला का रिश्ता तुमने मंजूर कर लिया ।"

वह मूँछों पर ताव देने लगा ।

"तुम भी क्या याद करोगे यार कि गफ़ार का दिल कितना बड़ा है ।" और यह कहकर उसने अपनी वास्केट में हाथ डालकर सौ-सौ के नोटों की एक गड्डी निकाली ।

"यह लो" उसने वह गड्डी अल्ताफ़ के सामने मेज़ पर रख दी।

"उठो यार" वह बोला, "माँ का दूध समझ कर यारों का माल पी जाओ। यह तुम्हारा चैक है।"

"यह किस हिसाब में ?"

"पाँच हज़ार पहले दे चुका हूँ। यह पाँच हजार और पेशगी रख लो। बाकी पाँच हज़ार तारीख मिलने के दूसरे दिन दे दूँगा।" और यह कहकर उसने अपनी छाती पर हाथ मारा।

"तुम अपनी भतीजी की शादी गफ़ार से कर रहे हो। किसी ऐसे वैसे से नहीं। वायदे से पहले ही पाँच हजार और पेशगी दे रहा हूँ।"

और फिर चुपके से बोला।

"तुम्हारे इन पन्द्रह हज़ार रुपयों के लिए अपन साला ने महावीर के साथ पार्टनरशिप कर ली है। यार ज़रा इस बाजू का भी ध्यान रखना। अभी नया-नया धंधा चालू किया है।"

"तो क्या ?"

उसने इंसपेक्टर अल्ताफ़ की बात काटी।

"हाँ यार, हाथ की सफ़ाई कमाल की बात है। कोई हँसी ठट्ठा थोड़े ही है। मेहनत-ही-मेहनत है। अल्लाह रसूल ने मेहनत की कमाई हलाल बनाई है और आप तो हमेशा ही हलाल खाता है यार।"

इंसपेक्टर अल्ताफ़ ने मुस्सकराते हुए वह पाँच हज़ार के नोट उठा लिए। वह बोला।

"अच्छा भाई। अब फिक्र काहे की है। अब तो तुम हमारे दामाद हो ही गए।"

"रुख़साना बाई तो अब हमारी दुल्हन बन ही गई समझो।"

साबरा बाई मुस्कराई।

"बुलाओ रुख़साना को बहू की उँगली में अपने हाथ से वह अँगूठी डाल दूँ।"

और इस पर शदो बीबी ने सलीमन को हुकम सुनाया।

"रुख़साना से कहो कि यहाँ आए। उसकी ससुराल वाले आए हैं।"

"शरमाती है रुख़साना माँ" साबरा बाई बोली।

"मैं खुद ही उसके रूम में चली जाती हूँ।" वह उठी।

"तुम्हारे सहारे पर बैठी हूँ बहिन। गोश पाक की कसम रुखसाना माँ मेरे भाई की बन कर जिन्दगी भर राज न करे फिर कहना" और फिर वह सब की सब रज़िया के कमरे में आ गईं।

"कहाँ है अपन की बहूरानी" साबरा बाई कमरे में आते ही बोली। और रज़िया के कलेजे पर बड़े ज़ोर का घूंसा पड़ा।

वह चकरा कर रह गई। और रुख़साना को ऐसा मालूम हुआ जैसे कि यह लोग उसका जनाज़ा उठाने आ रहे हैं। वह सब गुमसुम और हैरान व परेशान थे कि शदो बीबी बोली।

"भाभी। मुबारक हो तुम्हारी बेटी का रिश्ता पक्का हो गया।" और इकबाल का मारे गुस्से के बुरा हाल हो गया। वह घूर-घूर कर अपनी फूफी को देख रहा था।

रज़िया की आवाज़ उसके गले में फँस कर रह गई। उसकी आँखों में आँसू आ गए। और उसने बड़ी बिचारगी और बेड़ी बेबसी की दशा में शदो बीबी की तरफ देखा।

शदो बीबी ने जो कि पहले से सब कुछ जानती थी और समझती थी, रज़िया की बेबसी पर कोई ध्यान न देते हुए झट से जाकर रुखसाना को दबोच लिया जो कि गठड़ी बनी बैठी अपनी किस्मत को रो रही थी। उसने रुखसाना की उँगली इस तरह खींची जैसे कि कसाई जानवर की रस्सी खींचता है।

"यह लो बहिन।" वह साबरा बाई से बोली।

"अपनी बहू की उँगली में अँगूठी डाल दो।"

वह रुखसाना की उँगली पूरी ताक़त से पकड़े हुए थी कि साबरा बाई अपने मोटापे को सँभालती हुई आगे बढ़ी और जैसे ही उसने अँगूठी रुखसाना की उँगली में डालनी चाही, रुखसाना ने अपनी पूरी शक्ति से अपनी उँगली फूफी की पकड़ से छुड़ा ली।

वह जारोकतार रो रही थी और उसका सारा शरीर कांप रहा था। वह पूरी तरह कांप रही थी और बड़ा ही हृदय विदारक दृश्य था।

"यह क्या बदतमीज़ी है" शदो बीबी ज़ोर से गरजी और साबरा बाई बोली। "शर्मा रही है। आख़िर यू० पी० वाली है ना।"

और फिर वह मुस्कराई।

"ग़फ़ार की बनकर रानी कहलाओगी माँ। ख़ाली सट्टे से मेरे भाई को रोज़ सौ सवा सौ की आमद है।"

फिर वह रज़िया से सम्बोधित होकर बोली।

"तुम तो यूँ समझो बाई कि रुखसाना माँ की किस्मत खुल गई है। मेरा भाई ग़फ़ार तुम्हारी बेटी को सोने के दागिनों (जेवरात) से पार देगा। कमख्वाब और अल्ताफ़ तो उसके घर रोज़ का ओढ़ना बिछौना है।"

"ऐसा रिश्ता तो रुखसाना को मिल भी नहीं सकता था।" शदो बीबी बोली।

"यह तो अल्लाह की मेहरबानी है कि···"

और अब बात इकबाल के बस के बाहर हो चुकी थी। वह दाँत पीसकर बोला।

"तो आप सलमी बहिन को इस बुड्ढे खूसट और जाहिल से ब्याह दीजिए ना। इतनी बड़ी मेहरबानी आप मेरी बहिन पर क्यों फरमा रही हैं।" वह एकदम भड़क उठा।

"मुझे गफ़ार जैसे आवारा, बदचलन और गुण्डे से अपनी वहिन की शादी नहीं करनी।"

"क्या बकता है कमीने।" शदो बीबी ने झुंझला कर इकबाल के मुंह पर एक तमाचा मारा।

"इतनी-सी जान और गज़ भर जुबान। खबरदार जो ज़ुबान चलाई हो।" और इस पर रज़िया आग बबूला हो गई।

"खबरदार शदो अगर तुमने अब मेरे बच्चे पर हाथ उठाया तो मुझसे बुरा कोई न होगा। बरदाश्त की भी कोई हद होती है। जो कुछ इकबाल ने कहा है वह ठीक है। मुझे यह रिश्ता हरगिज़ पसन्द नहीं। अगर ऐसा ही है तो तुम सलमा की शादी ग़फार से क्यों नहीं कर देतीं।"

फिर बात बहुत ज़्यादा बढ़ गई और यह बात ज़नानखाने से निकल कर बाहर मर्दाने में चली गई। अल्ताफ़ के हाथों के तोते उड़ गए। वह बड़ी दयनीय दशा में गफ़ार की तरफ देख कर बोला।

"तुम फिक्र न करो यार। मैं कह चुका हूँ कि तुम्हारी शादी मेरी भतीजी से होगी। रुखसाना तुम्हारे सिवा किसी की हो ही नहीं सकती। तुम तो बस एक दिन की मुहलत दो मुझे और तारीख वारीख गई जहन्नुम में। आज से चौथे दिन बारात लेकर आ जाना।" वह निर्णयात्मक ढंग से बोला।

"तुम अपनी बहिन को लेकर इस वक्त जाओ। शाम को मुझ से चौकी पर आकर मिलना। मैं सब तय कर दूंगा।"

"अच्छा, तो मैं चलता हूँ।"

"हाँ तुम जाओ। शाम को ठीक सात बजे चौकी पर आना" और फिर गफ़ार अपनी बहिन को लेकर अलताफ़ के बंगले से चला गया और रुखसाना खुदा के हज़ूर में सिजदे में गिर पड़ी।

"खुदाया ! तू रहीम व करीम है। अपने हबीब पाक के सदके मुझ बेकस पर तरस खा। रहम फरमा मेरे ऊपर। शत्रु मुझे जीवित ही मृत्यु के मुँह में झोंक रहा है। तू मुझे इस नीच मौत से छुटकारा दिला दे।"

वह जारोकतार सिजदे में पड़ी थी। और रो रही थी।

"खुदा या। मैं बेहद मजबूर हूँ। मेरा दुनियाँ में सिवा तेरे सहारे के और कोई सहारा नहीं हैं। मेरी माँ मजबूर है और मेरा भाई अभी बहुत छोटा है। अपनी इस तुच्छ और पापिन बन्दी पर दया कर और मुझे दुश्मनों के पंजे से छुटकारा दिला दे। यह लोग मुझे एक जानवर के हवाले करना चाहते हैं। तू मेरे कुंवारेपन की लाज रख ले मौला। और मुझे इस नीच और गुंडे इन्सान के चंगुल में न फँसने दे। नहीं तो मैं आत्म-हत्या कर लूंगी मेरे अल्लाह।"

वह एक कराह के साथ बुदबुदाई।

"और खुदकुशी हराम है। तू मुझे इस हराम मौत से बचा ले मेरे परवरदिगार।"

रोते-रोते उसकी हिचकियाँ बँध गईं। और उसका मसला उसके आँसूओं से तर हो गया। भगवान ने उसकी प्रार्थना सुन ली।

सुहेल तिलमिला कर उठा।

"माँ" वह अपनी मां से कह रहा था।

"आप अभी इंसपेक्टर अलताफ़ के यहाँ जाइए।"

और उसकी माँ एकदम बोल उठी।

"उसकी बेटी से तेरा रिश्ता माँगने।"

"नहीं माँ।" वह बोली "गोली मारिए उनकी बेटी सलमा को।" वह नज़रें इधर-उधर चुराते हुए बोला।

"आप तो जाकर रुखसाना के लिए बात कीजिए।"

"रुखसाना।"

"हाँ, हाँ।" वह बोला।

"रुखसाना। इकबाल की बहिन। सलमा की मामूजाद बहिन। स्वर्गीय रईस मियाँ की बेटी।" वह सब कुछ एक सांस में कह गया। "मैं उसी से शादी करना चाहता हूँ। अगर रुखसाना मुझे न मिल सकी मां तो समझ लो कि तुम अपने बेटे की ज़िन्दगी से हाथ धो लोगी। मुझे माफ करना मां। मैं यह बताने के लिए मजबूर हूँ कि रुखसाना के बिना में ज़िन्दा नहीं रह सकता। वह लोग उसकी शादी तय कर रहे हैं। अगर वह किसी और की हो गई तो एक नहीं बल्कि दो मौतें घटेंगी। वह मर जायगी और उसी के साथ ही साथ मैं भी मर जाऊँगा।" और यह कह कर उसने अपनी माँ की गोद में अपना मुँह छुपा लिया। उसकी माँ उसके सिर को बड़े ज़ोर से भींच कर बोली।

"यह बात तो तूने मुझसे पहले क्यों नहीं कही, मेरे बेटे" और वह दृढ़ संकल्प से बोली।

"अगर मैं तुम दोनों की खुशी के लिए ज़मीन आसमान एक न कर दूं तो फिर कहना। एक माँ की ममता अपने बच्चे की ज़िन्दगी और उसकी खुशी के लिए क्या कुछ नहीं कर सकती। मैं तेरी खुशी के लिए

उनके तलुओं में अपनी आँखें मल डालूँगी। मैं उनके दर पर धरना देकर बैठ जाऊँगी। मैं रो-रोकर उनके कदमों को अपने आँसूओं से धो डालूँगी। मैं उनके कदमों से लिपट जाऊँगी और उस वक्त तक उनके कदम न छोड़ूँगी जब तक कि वह हाँ न कर दें। मैं तेरी खुशी के लिए अपना सब कुछ लुटा दूँगी। तेरी ज़िन्दगी के लिए आकाश तक झंझोड़ डालूँगी।"

सुहेल एकबारगी अपनी मां के कदमों में लौटने लगा।

"तुम वहाँ से हाँ लेकर लौटना अगर तुम वहां से हाँ नहीं लेकर लौटोगी माँ, तो यूँ समझ लेना फिर तुम मेरा जनाज़ा अपने कन्धों पर लेकर लौट रही हो। मेरी मौत और मेरी ज़िन्दगी वहां की नहीं और हां के साथ लिपटी हुई है।"

हाज़िरा सुहेल की मां अपनी जगह से एक संकल्प करके उठी।

●

"कौन हो तुम ?"

"मैं भी आपकी तरह एक इन्सान हूँ।"

"तुम किस से मिलने आई हो ?"

"मैं रुखसाना की माँ से मिलना चाहती हूँ।"

"रुखसाना की माँ।"

"जी।"

"तुम्हें उनसे क्या काम है ?"

"यह बात तो मैं उन्हीं को बताऊँगी।"

"आओ मेरे साथ।"

और वह उसे लेकर रज़िया के कमरे में गई।

"यह तुम से मिलना चाहती हैं।"

और यह सुन कर रज़िया अपनी जगह से उठ कर खड़ी हो गई।

"आइए। आइए। तशरीफ लाइए। फ़रमाइये। मैं आपके लिए क्या कर सकती हूँ।"

उसने बड़े आदर से पलंग पर बिठाया। हाज़िरा ने अपना बुर्का उतारा।

"फरमाइए।"

"आप रुखसाना की माता हैं।"

"जी।"

"मैं अपने बेटे का रिश्ता लेकर आई हूँ।"

इस पर शदो के कान खड़े हो गए और सलमा भी उसे ध्यान से देखने लगी।

"आपका बेटा।" रज़िया हैरान होकर बोली।

"कौन है आपका बेटा ?"

"सुहेल।"

और इस पर सबके सब हैरान हो गए। हाज़िरा बोली।

"सुहेल मेरा बेटा है जो आपके यहां ट्यूशन देने आता है।" सलमा की त्यौरियों पर बल पड़ गए और रुखसाना का दिल मारे खुशी के उसके पहलू में ज़ोर ज़ोर से धड़कने लगा।

इस जगह पर सब मौजूद थीं सलमा, रुखसाना, शदो बीबी, इकबाल और ज़ैका भी।

रुखसाना ने शर्मा कर अपनी गर्दन नीचे झुका ली और शदो एक बार ही जैसे कि चीख पड़ी।

"क्यों ?" हाज़िरा चौंक कर बोली।

"क्या ऐब है मेरे बेटे में।"

"यह ऐब कम है कि उसने जिसमें खाया उसी में छेद किया है। वह यहाँ लड़कियों को पढ़ाने आता है या उनसे रिश्ते मांगने।"

"मैं रिश्तों की नहीं बल्कि सिर्फ रिश्ते की बात करने आई हूँ। मैं रुखसाना बेटी के लिए अपने बेटे का त्याग लेकर आई हूँ।"

"इसलिए कि आपका बेटा रुखसाना से इश्क करता है ?"

सलमा कमाल निर्लज्जता से मुँह बिगाड़ कर बोली।

"आप तशरीफ ले जाइए। वरना हो सकता है कि आपकी शान में बट्टा न लग जाए।"

"कुंवारी लड़कियों जैसे गुण ढंग सीखो बेटी।" हाज़रा नम्रता से बोली।

"तुम्हें इस प्रकार की बातें शोभा नहीं देतीं।" वह बोली।

"मैं तुमसे नहीं बल्कि तुम्हारे बड़ों से बातें करने आई हूँ।" और यह सुनकर शदो बीबी एकदम भड़क उठी।

"देखो जी। तुम दो टके की औरत, एक तो बिना इजाज़त तुम हमारे बँगले में घुस आईं और अब मेरी बेटी से बदज़ुबानी कर रही हो। खबरदार अब अगर ज्यादा बकवास की तुम ने तो, मैं नौकरों से जूते लगवाकर तुम्हें बंगले से बाहर फिकवा दूँगी।" वह आपे से बाहर हो गई और इस पर रज़िया बोली।

"वह मुझसे बातें करने आई हैं और तुम्हें इस तरह……।"

"बकवास बन्द करो जी।" ज़ेका बुढ़िया मारे गुस्से के हांपने लगी।

"और यह घर क्या तुम्हारे बाप का है। इस ज़लील औरत के साथ ही साथ मैं तुम्हें भी जूते मार कर बाहर निकलवा दूंगी। जानती नहीं हो कि मेरा बेटा पोलिस में काम करता है ?"

"अम्मी जान !" रज़िया उतरे हुए चेहरे के साथ बोली। "कुछ तो ख्याल कीजिए।"

"बहुत ख्याल किया है तुम्हारा !" शदो बीबी चीखने लगी।

"अगर ख्याल न करती तो अब तक तुम न जाने कहां धक्के खाती फिरतीं और तुम्हारी आवारा बिटिया कब का कोठा आबाद कर चुकी होती।"

"फूफी माँ !" इकबाल दाँत पीसकर बोला।

"ज़ुबान पर लगाम लगाइए। वरना……।"

और वह रोने लगा। रज़िया ने महक कर उसका मुंह बन्द कर दिया।

"हो ! हो ! अरे ! मरे !"

और सारा घर आपे से बाहर हो गया। हर तरफ से उन सब पर गालियाँ, कोसने और तानों की बौछार शुरू हो गई और हाज़िरा सिट-पिटा कर रह गई।

उसे ज़ेका ने मार कर और नौकरों से घिसट कर बँगले से बाहर फेंकवा दिया। पूरा बँगला हंगामों में डूब गया। फिर अल्ताफ़ जो कि कहीं बाहर गया हुआ था आ गया। और अब मुसीबत के मारों पर आफ़त आ गई।

"क्या हंगामा है ?" अल्ताफ़ आते ही बिगड़ कर बोला।

"रुखसाना के आशिक की मां अपने बेटे का रिश्ता लेकर आई थी।" शदो बोली।

"क्या मतलब ?"

"मतलब अब इसी से पूछो।" ज़ेका बोली।

"जूते मार कर इन कंजरों को घर से बाहर न निकालोगे तो एक दिन हम सब किसी को मुँह दिखाने के लायक भी न रहेंगे समझे।" वह बोली।

"यह अपने मास्टर से इश्क करती थी।"

"और इसीलिए तो मैंने इसका पढ़ना बन्द कर दिया था।" यह सलमा थी।

"शर्म और लिहाज़ के मारे मैंने यह बात किसी को नहीं बताई थी।"

"जब ही गफ़ार के रिश्ते में कीड़े नज़र आ रहे हैं।" अल्ताफ़ ने आँखें निकालीं।

"ज़िन्दा खोद कर दफ़न कर दूंगा।" वह ज़ोर से गर्जा।

"बोल" वह रुखसाना से सम्बोधित हुआ।

"क्या सज़ा है तेरी, कमीनी, आवारा, बदचलन" और वह ज़ोर से गर्जा। "तू मास्टर से इश्क करती है ?"

उसने रुखसाना के गाल पर ऐसे ज़ोर से तमाचा मारा और इस पर रज़िया तिलमिला गई और इकबाल अपनी बहिन पर यह ज़ुल्म होते देख कर आपे से बाहर हो गया।

"बस फूफा मियाँ" वह गुस्से के मारे नाच गया।

"अगर आपने अब ज़्यादती की तो आपके हक में अच्छा न होगा।" और यह सुन कर अल्ताफ़ इकबाल की तरफ झपटा। इकबाल एक दो

क़दम पीछे हट गया।

"अगर आपने ज़्यादती की तो आपके हक़ में अच्छा न होगा। आप हमें अपने घर से निकाल दीजिए मगर इस मार-पीट का हक़ आपको हरगिज़ नहीं है।" वह बिखर गया।

"मैं आपका सारा भंडा फोड़ दूंगा। आपकी एक-एक रिश्वत अगर मैं आपके अफसरों के सामने न गिनवा दूँ तो फिर कहिएगा," और इकबाल के मुँह से यह सुनकर अल्ताफ़ चौंक पड़ा। उसने अकलमन्दी से काम लेकर सोचा, घर का भेदी किसी भी समय लंका ढा सकता है। इसलिए वह खून का घूंट पीकर रह गया और कुछ सोच कर पैंतरा बदलते हुए बोला।

"मैं यह सब कुछ तुम लोगों की भलाई के लिए कह रहा हूँ।"

"आप अपनी भलाई अपने पास रखिए।" इकबाल अब बराबर जवाब दे रहा था।

"मैं अभी छोटा हूँ तो क्या हुआ। मगर आप या कोई मेरे जीते जी माँ या मेरी बहिन पर हाथ नहीं उठा सकता। ज़ुल्म नहीं कर सकता। मैंने अब तक बुज़ुर्गी का ख्याल करके आपकी हर बात सहन की है, मगर अब।"

"क्या रुख़साना कसम उठा कर कह सकती है कि वह मास्टर साहिब से मुहब्बत नहीं करती।"

शदो इकबाल की बात काट कर बोली, और उसने महक कर कुरान रुखसाना के हाथ में दे दिया।

"इसकी कसम खाकर कहो कि तुम मास्टर से मुहब्बत नहीं करतीं।" और रुखसाना कुरान पाक अपने हाथ में रखा देखकर सारी जान से काँप गई। सब लोग उसे ध्यान से देख रहे थे।

"खा ले बेटी कसम।" रजिया बोली।

"साँच को आँच क्या ?"

"हां। हाँ। खाओ कसम।" सलमा बोली।

और रुखसाना सोचने लगी कि वह झूठी कसम किस तरह खा ले। वह मास्टर से मुहब्बत करती थी। झूठी कसम और वह भी कुरान

पाक की। कुरान शरीफ हाथ में लेकर उसके होश उड़ गये। उसकी दशा बड़ी शोचनीय थी। एक ओर इन सबके सामने बदनामी का ख्याल; अपनी माँ और छोटे भाई से लज्जित होना। यह बदनामी कि वह मास्टर से प्रेम करती है और दूसरी तरफ कुरान पाक की झूठी कसम कि वह मास्टर से प्रेम नहीं करती।

और इधर इन सबके चेहरों पर विजयात्मक मुस्कान थी। वह सब प्रश्नसूचक दृष्टि से इकबाल और रज़िया को तक रहे थे। इंस्पेक्टर अल्ताफ़ गुर्राया।

"तो यह खेल खेला जा रहा था मेरे टुकड़ों पर।"

"मैं तो हमेशा से जानती थी कि यह लड़की आवारा है।" शदो इन सबकी तरफ घृणा से देखकर बोली।

"दीदा तो देखो इस कमीनी लड़की का।" ज़ैका बोली।

"जी चाहता है कि कच्चा चबा जाऊँ इस नामुराद को।"

"मैंने तो इसीलिए इसका पढ़ना बन्द कर दिया था मास्टर साहिब से।" यह सलमा थी।

"ओहो।" इकबाल बोला।

"यह आप बोल रही हैं, बाजी।" वह व्यंगात्मक ढंग से मुस्कराया।

"और मैं कहता हूँ कि मास्टर से आप भी मुहब्बत करती हैं। मैंने खुद देखा है।"

इस पर सलमा झुँझला गई और बोली।

"बकवास करते हो तुम। झूठे।"

"अच्छा तो लीजिए कसम।"

उसने लपककर वही कुरान शरीफ सलमा के हाथ पर रख दिया।

"खाइए कसम कि मैं झूँठ बोल रहा हूँ।"

और अब सलमा की बारी थी। पूरा घर उसे देख रहा था। पहले तो एक क्षण के लिए झिझकी फिर कसम खा गई।

"इकबाल बकवास कर रहा है। यह झूठा इल्ज़ाम लगा रहा है मुझ पर।" फिर उसने कुरान पाक ताक पर रख दिया और उसके घर वालों का चेहरा मारे खुशी के खिल उठा। अल्ताफ़ ने आँखें निकालीं।

"अब क्या सज़ा दें तुझको लौंडे ।"

"सज़ा तो इन्हें खुदा की तरफ से मिलेगी ।" इकबाल बड़ी शान्ति से बोला ।

"इन्होंने कुरान पाक उठाकर झूठ बोला है और यह कुरान की मार भूल गई हैं ।"

और फिर उसने लपककर अपने सन्दूक से एक लिफाफ़ा निकाला । लिफाफ़ा देखकर सलमा का चेहरा पीला पड़ गया और वह कमरे से बाहर भाग गई ।

इकबाल ने अलताफ़ की तरफ़ वह लिफाफ़ा बढ़ाया । "बाजी तो झूठी सौगंध खाकर और लिफाफ़ा देखकर भाग गई मगर ज़रा यह खत पढ़ लीजिए ।"

सलमा की लिखाई अलताफ़ की आँखों के सामने नाच रही थी और वह बड़े ध्यान से पढ़ रहा था ।

"बेनयाज़ी हद से गुज़री बन्दे परवर कब तलक हम कहेंगे हाले दिल ।" आप फ़रमायेंगे क्या अब तो आपकी यह कनीज़ आपकी मुहब्बत में इस तरह दिवानी हो चुकी है कि इसकी रातों की नींद भी उड़ चुकी है । खुदा रहम कीजिए मेरी हालत पर । आप सिर्फ एक बार मेरी मुहब्बत का करार कर लीजिए । मैं आपको हासिल करने के लिए सारे जहान को ठुकरा दूंगी······आपकी मुहब्बत के सामने मेरी नज़रों में दुनियाँ की हर चीज़ हेच है । मैं आपकी खातिर खानदानी गौरव, इज्ज़त और मां बाप सबको छोड़ने पर तैयार हूँ । सिर्फ़ आप मेरे हो जाइए । मैं समझूंगी कि मुझे कारुन की दौलत मिल गई ।

हम आपके लिए बिन पानी के मछली बराबर हैं । और आप हमारी तरफ़ आंख उठा कर नहीं देखते । आखिर क्यों ? मुझ में आपको कोई कशिश नज़र नहीं आती ।

खुदाया एक बार तो मुझे आँख उठाकर देख लीजिए । अगर आपने अब भी मेरी मुहब्बत को ठुकराया तो मुझसे बुरा कोई न होगा ।

मैं वह सब कुछ कर गुज़रुंगी जिसकी कल्पना से भी आप थर्रा उठेंगे। मैं आपको हर तरह बदनाम कर डालूंगी और फिर आप किसी को मुंह दिखाने के लायक भी न रहेंगे।

प्यारे ख़ुदा के लिए हम पर तरस खाओ वरना फिर गालिब की तरह हम भी खुदा से प्रार्थना करेंगे।

"यार रब न वह समझे हैं न समझेंगे मेरी बात"

दे और दिल उनको जो न दे मुझको जुबाँ।"

और तुम्हारी और सिर्फ तुम्हारी सलमा।

अलताफ़ खत पढ़ता जा रहा था और उसके चेहरे का रंग बदलता जा रहा था। सारा घर उस बदले रंग को बड़े ध्यान से देख रहा था।

इकबाल के चेहरे पर विजयात्मक मुस्कराहट थी और रज़िया का चेहरा शांतमय था और रुखसाना के दिल को एक हद तक करार आ गया था। मगर वह अभी तक इसी तरह सिर झुकाए हुए बैठी थी कि एकबारगी खत खत्म करके अल्ताफ़ बड़े खिसियाए हुए ढंग से बोला।

"यह खत तुम्हारे पास कैसे आ गया ?"

"यह खत एक दिन बाजी मास्टर साहिब की तरफ़ बढ़ा रही थीं कि वह खत लिए बिना ड्राइंग रूम से बाहर घबरा कर चले गए। मेरी आहट पाकर बाजी अन्दर भाग गई और लिफाफ़ा मैंने फर्श पर से उठा लिया।"

"हूँ।"

वह बड़े खिसियानेपन के साथ बोला।

"तो गोया ट्यूशन की जगह यह दोनों मूर्ख लड़कियाँ मास्टर से इश्क कर रही थीं।"

"क्या है ?" शदो बीबी बोली।

"तुम्हारा सिर ?"

उसने बेज़ारी से कहा। और वह इकबाल की तरफ़ आकृष्ट हुआ।

"तुम लोग इसी वक्त मेरे घर से निकल जाओ।"

"मैं इन आसतीन के सांपों को अब एक पल के लिए भी यहां न रहने दूँगी।" शदो बीबी घृणा से इन तीनों की तरफ़ देखकर बोली।

"तुम लोग अपना बोरिया बिस्तर उठाओ।"

"मैं खुद भी अब यहाँ एक सैकिण्ड रहना नहीं चाहती।" रजिया बोली।

"बस बहुत रह लिए।"

"मैंने तो आप से पहले ही कहा था अम्मी," इकबाल बोला "लानत दीजिए इन सब पर।"

"निकल जाओ इसी समय तुम लोग। कोढ़ जमाने भर के।" जेक़ा बड़बड़ाई।

"बदनसीबों ने अच्छी भली ज़िंदगियाँ बरबाद कर दीं।" अलताफ़ ने अपने होंठ काटे।

"मैं समझूँगा इस मास्टर के बच्चे से।"

और वह बेजारी से मुंह बिगाड़ता हुआ एक झंझोड़े हुए कुत्ते की तरह दुम दबा कर वहां से चला गया।

उनके जाने के बाद रज़िया ने दबी ज़ुबान से शदो बीबी से कहा।

"मैंने आपके पास कुछ अमानत रखवाई थी।"

"अमानत।"

"वह ज़ेवरात।"

और शदो बात काट कर बड़ी घृणा से मुँह बिगाड़ कर बोली।

"और तुम लोगों ने इतने दिनों तक मेरी छाती पर मूंग जो दली हैं।" वह झुंझला कर बोली।

"एक छदाम और पाई भी तुमको न मिलेगी। नमक हराम तकाज़ा करते शर्म नहीं आती तुम्हें।"

और यह सुनकर रजिया का मुँह फक हो गया। वह बड़े यास के आलम में बोली।

"मगर इस वक्त मैं बिल्कुल ही बेपारा मददगार हूँ और वह गहने

मेरे स्वर्गीय पति की अन्तिम याद…"

"बको मत।" शदो गला फाड़ कर चिल्लाई।

"कह जो दिया कि तुम्हें कुछ न मिलेगा।"

वह बड़बड़ाती हुई चली गई।

"जाने किस कंजरनी से मेरे भाई ने शादी कर ली थी।"

रज़िया सिर पकड़ कर बैठ गई। और इकबाल ने अपनी मां को तसल्ली दी। "छोड़िए भी अम्मी। क्या अल्लाह पर आपको बिल्कुल भरोसा नहीं।"

उसने रज़िया को सहारा देकर उठाया।

"अल्लाह पर भरोसा रखिए अम्मी। इस घर का अब हमें पानी तक हराम है," वह बोला।

"मैं जो ज़िन्दा हूँ। क्या मैं बेटा नहीं हूँ आपका।"

"मेरे बेटे।"

रज़िया ने इकबाल को बड़ी ज़ोर से खींच लिया और रोते-रोते उसकी हिचकियाँ बंध गईं।

रज़िया और रुखसाना ने मिल जुल कर अपना जो कुछ भी थोड़ा बहुत सामान था, वह बाँध लिया था। अब वह इकबाल के आने की प्रतीक्षा कर रही थी जोकि टैक्सी लेने गया था।

इतने में अल्ताफ़ आ गया और वह आते ही अपनी पत्नी से बोला, "वह आपकी भाभी जान तशरीफ़ ले गईं कि नहीं।"

वह गुस्से के मारे भन्नाया जा रहा था।

"मैं इस घर में अब इस खानदान को एक सैकिण्ड के लिए भी ठहराना गवारा नहीं कर सकता।"

"जा तो रही हैं।"

"जा तो रहीं हैं।" वह कुर्सी पर से उठकर खड़ा हो गया।

"इनसे कहो कि वह दफा हों यहाँ से। वरना मैं जूते मार कर सबको निकाल दूंगा।"

और फिर वह भन्नाया हुआ खुद ही रज़िया के कमरे की तरफ़ आया और रज़िया और रुखसाना बहुत ही उदास और गमगीन बैठी

हुईं थीं कि वह एकदम आते ही गरजा।

"तुम लोग दफ़ा नहीं हुए अब तक। जल्दी निकलो तुम लोग मनहूस," और वह दोनों चौंक पड़ीं। उसने गुस्से के मारे पागल होकर उनका ट्रंक कमरे से बाहर फेंका।

"निकल जाओ। तुम लोग। रोग, पलेग, कमीने, सूअर।" वह मारे गुस्से के पागल हुआ जा रहा था।

और उसने एक ट्रंक और उठाकर फेंका कि इतने में इकबाल आ गया। और वह अपने फूफा की इस कमीनी हरकत पर भन्ना गया।

"यह क्या बक रहे हैं आप।" वह घृणा से मुँह बनाकर बोला।

"तेरा सिर, उल्लू का पट्ठा।"

उसने इकबाल को कानों से पकड़ कर उठा लिया और फिर उसने उसे दे मारा।

"अब ऐसा भी क्या?" रज़िया बिलबिला गई।

"जा ही तो रहे हैं हम लोग।"

और उसने लपक कर इकबाल को उठाया।

"छोड़िए अम्मी" वह बोला, "मुझे कुछ नहीं हुआ। यह लोग तो खिसियानी बिल्ली की तरह खंभा नोचेंगे ही।"

और यह कहकर वह उठकर खड़ा हो गया।

"आप लोग बाहर चलिए। मैं संदूक घसीट कर लाता हूँ।"

"तुम काहे को तकलीफ़ करोगे मियां" सलीमन बोली।

"मैं अभी मर नहीं गई हूँ।"

और फिर सलीमन ने संदूक उठाकर अपने सिर पर रख लिया।

"हमारा कहना सुना माफ़ करना" रज़िया शदो बीबी से कह रही थी और जवाब में शदो ने अपना मुँह दूसरी तरफ़ फेर लिया।

"आप भी कमाल करती हैं अम्मी" इकबाल चुपके से बोला।

"इन जैसे बेरहम कमीनों के मुँह लग रही हैं। जहन्नुम में डालिए।"

और वह अपनी मां और बहिन को लेकर बंगले से बाहर निकला।

सलीमन पहले ही खम्भे के पास खड़ी थी।

सारा सामान उसने टैक्सी में रख दिया था।

"इसमें चार आदमी बैठ सकेंगे।" रज़िया बोली।

"यह बड़ी टैक्सी है अम्मी" इकबाल बोला।

"आप बैठिए जल्दी।"

और वह अभी टैक्सी में बैठा ही था कि बंगले का बूढ़ा माली पास आकर खड़ा हो गया। वह बहुत उदास था।

"आप जा रहे हैं इकबाल मियाँ।"

"हाँ दादा" वह बोला।

"मुझे बड़ा अफसोस है मियाँ।"

"अफसोस काहे का।" वह बोला "आप तो बस हमारे हक में नेक दुआएँ कीजिए।"

और टैक्सी रवाना हो गई। वह अब खुली सड़क पर दौड़ रही थी।

"हम जायेंगे कहाँ ?"

रज़िया बड़ी उत्सुकता से बोली।

"अल्लाह की दुनियां बहुत बड़ी है अम्मी।" इकबाल बोला।

"मैंने अपने दोस्त की चकालो वाली चाल में इंतज़ाम कर लिया है।" उसने जेब से चाबी निकाली।

"यह देखिए मकान की चाबी है मेरे पास। वह बड़ी दृढ़ता से बोला "आप चिन्ता न कीजिए।"

●

'तुम चिन्ता न करो बेटे।" हाजिरा सुहेल से कह रही थी।

"मेरा दिल गवाही देता है कि रुख़साना तुम्हें जरूर मिलेगी।"

"मगर" उसने बात काटी।

"रुख़साना की मां रानी थी। मगर इन घर वालों ने तो जैसे कुछ होने ही न दिया। वह सबके सब गरीब रुख़साना की मां के पीछे पंजे झाड़कर पड़ गये।"

"मैं इसका बदला जरूर लूंगा।" सुहेल दाँत पीस कर बोला।

"इन लोगों ने अपने आपको समझ क्या रखा है। अगर मैंने आपकी बेइज्ज़ती का बदला न लिया तो मेरा नाम सुहेल नहीं।" वह रुँधे कंठ से बोला।

"हराम की दौलत ने आंखों पर पट्टियाँ बाँध दी हैं।"

"होगा" हाज़रा बोली।

"मेरी बेइज्ज़ती क्या ? मुझे तो उन लोगों पर तरस आ रहा है। न जाने इन लोगों का उन बेरहमों ने क्या हाल किया होगा।" वह आर्द्र नेत्रों से बोली।

"खुदा दुश्मनों को भी किसी और की दया पर न छोड़े।"

सुहेल ने कोई उत्तर न दिया। वह गुमसुम गहरे सोच में डूबा हुआ था। वह एक गहरी मगर चुप तरह की आह भरकर उठा और बड़े थके हुए अंदाज में बाहर चला गया।

●

रुखसाना के दिल से एक हूक उठी और वह अपना कलेजा मसोस कर रह गई। उसकी आँखों में आँसू उमड़े और उसने विवश होकर उमड़े हुए आंसुओं को अपने दिल में संजो लिया। उसके होठों पर आहें तड़पीं और उसने इन आहों को सीने में दबा दिया।

जबकि उसे इस बात का ज्ञान हो गया था कि उसकी मां और उसके छोटे भाई को यह बात मालूम हो गई है कि वह मास्टर साहिब से प्रेम करती है। वह इन से आंखें नहीं चार कर रही थी। वह अन्दर ही अन्दर मास्टर की मुहब्बत में जली जा रही थी और घुट रही थी मगर वह हर सूरत में अपने आपको संभालने की कोशिश कर रही थी। यही प्रयत्न करती थी कि उसकी दशा का किसी को भी ज्ञान न होने पाए।

वह अपनी मां और अपने छोटे भाई से शरमिन्दा थी। वह यह सोच रही थी कि इस इतनी बड़ी बुराई, बदनामी, घर से निकालने की सारी उत्तरदायी उसके ऊपर है। वह अपने आपको मुजरिम समझ रही

थी और वह समझ रही थी कि अपने इस थोड़े से कुनबे की तबाहियों की तमाम ज़िम्मेदारी उसके ऊपर है।

वह अपने आपको कोस रही थी और उसका जी बार-बार चाहता था कि वह अपनी मां और अपने भाई को अपनी यह मनहूस सूरत न दिखाकर खुदकशी करे। कहीं डूब मरे जाकर। या कहीं भाग जाए या किसी ऐसी जगह चली जाए वह जहाँ कि उसे जानने और पहिचानने वाला कोई न हो। वह अपनी जान पहिचान वालों को अपनी सूरत तक दिखाना नहीं चाहती थी।

हालांकि उसकी माँ ने उसकी इस मुहब्बत के बारे में उससे कोई बात नहीं की थी और न उसके भाई इकबाल ही ने उससे कुछ पूछा था मगर वह आप ही आप कटी जा रही थी। अपना प्रेम इन लोगों के सामने उसे ज़हर मालूम होने लगा था।

उसका जी बार-बार चाहता था कि ज़मीन फट जाए और उसमें वह समा जाए।



एक तरफ तो यह था कि उसकी अपनी यह हालत थी और दूसरी तरफ उसकी मां थी जो उसके लिए कुढ़ रही थी। वह हर कीमत पर उसकी खुशी खरीदने के लिए तैयार थी। उसने किसी और से अपने विचार प्रगट नहीं किए थे बल्कि दिल-ही-दिल में यह सोच रही थी कि किसी तरह वह अपनी बेटी की ज़िन्दगी में उन बहारों को ला दे जिसके लिए वह तरस और तड़प रही होगी।

उसे अपनी बेटी पर गुस्सा नहीं था बल्कि उसके साथ सहानुभूति थी, प्यार था और वह अपनी बेटी की इस बात पर मारे खुशी के फूली नहीं समा रही थी कि उसने कुरान पाक की पवित्रता को स्वीकार किया है। उसने परिस्थिति बिगड़ जानें पर भी झूठी कसम नहीं खाई।

उसने कुरान पाक का आदर किया और अब वह उसके इस आदर पर इनाम देने के लिए व्यग्र थी।

और यही हालत इकबाल की भी थी। उसे भी अपनी बड़ी बहिन

की यह बात बेहद पसन्द थी कि उसने झूठ पर सच को ऊँचा जाना और कुरान करीम की महानता को स्थिर रखा।

और फिर इकबाल तो खुद भी मास्टर साहिब को पसन्द करता था। उसे अपनी बहिन की इस पसन्द पर गर्व था। गुस्सा या लज्जा बिल्कुल नहीं थी। वह इस बात को सुलझाने में लगा हुआ था कि किस तरह वह अपनी बहिन की सबसे बड़ी इच्छा को पूरा करे। वह उस दिन के स्वप्न देख रहा था कि जब उसकी बहिन की शादी सुहेल के साथ हो जाएगी और वह मिसेज़ सुहेल कहलाएगी।

वह सोच रहा था कि किस तरह वह इस बात को आगे बढ़ाए। यह सोच रहा था और वही एक बात सोचते-सोचते रात के बारह बज गए और उसकी आंखें बोझल हो गईं और उसका दिमाग बोझल हो गया।

और फिर वह सो गया। नींद के काफले उसकी आंखों में उतर आए और वह ज़ोर-ज़ोर से खर्राटे लेने लगा। उसकी माँ ने बड़े प्यार से उसकी तरफ देखा और उठकर उसने अपने बच्चे के ऊपर चादर डाल दी।

वह सोच रही थी।

कितना बहादुर और साहसी उसका यह मासूम बेटा है। वह न होता तो उनकी मुसीबत न जाने कहाँ जाकर दम लेती और फिर उसका दुनियाँ में कोई न होता। यह आसमान और ज़मीन चक्की के पाटों की तरह उसे पीस कर रख देते। उसने बड़ी बेइख्त्यारी से अपने बेटे का माथा चूम लिया। उसके होंठ हिले।

"तू जीता रह मेरे मासूम सहारे।"

वह बुदबुदाई और फिर वह भी अपने ज़मीन पर लगे हुए बिस्तर पर जाकर लेट गई।

"शुक्र है मेरे अल्लाह।"

उसके होंठ हिले।

"तूने इकबाल जैसा बेटा देकर मुझे दुनियाँ में क्या कुछ नहीं दिया।"

मारे खुशी और उद्‌गारों के उसकी आँखों में आँसू आ गए और फिर वह बड़े शान्तिमय ढंग से करवट बदल कर सो गई। रुखसाना अभी तक जाग रही थी।

अल्ताफ़ हुसैन और उसकी पत्नी शदो बीबी में गर्मा-गर्मी हो रही थी। शदो बीबी लगभग रुआँसी होकर बोली।

"मगर अब किया भी तो क्या जाए। अगर तुम यह चाहते हो कि अपनी इकलौती बेटी की ज़िन्दगी से हाथ धो लो तो जो चाहो करो। और अगर तुम उसकी ज़िन्दगी चाहते हो तो यह करो जो कि वह चाहती है।"

"मगर," अल्ताफ़ झुँझला कर बोला।

"आखिर इस लौंडे में कौन से सुरखाव के पर लगे हुए हैं।"

"न लगे हों सुरखाव के पर।" शदो बोली।

"मगर मेरी बेटी तो उसी से शादी करेगी।"

और फिर वह मानो पति को समझाती हुई बोली।

"फिर उसमें बुराई भी क्या है। होनहार लड़का है। इसी साल इंजीनियर हो जाएगा और फिर जात रात भी बुरी नहीं है।"

"हाँ बेटे" अल्ताफ़ की बूढ़ी मां ज़ेका बीबी कमरे में आते हुए बोली।

"तुम तो उस अल्लाह का नाम लेकर हाँ कर ही दो। लड़का बिल्कुल बुरा नहीं है। बल्कि मैं तो कहती हूँ कि सैंकड़ों में एक और फिर जात रात भी अच्छी है। क्या हुआ अगर उसके माँ बाप गरीब हैं। वह खुद तो पढ़ लिख रहा है वह ज़रूर बड़ा आदमी बनेगा और फिर अपनी बेटी तो उससे ब्याह करना चाहती है।" वह बोली "वह तो कह रही थी कि अगर उसकी शादी सुहेल से न हो सकी तो वह अपनी जान दे देगी।"

"अजीब मुसीबत है।" अल्ताफ कुछ उलझ कर बोला।

"यह तो अच्छा ट्यूटर रखा हमने, एक नई उलझन मोल ले

ली है ।"

"उलझन काहे की बेटा ।" जेका बोली, "सच पूछो तो मुझे ना वह लड़का पसन्द है ।"

"और फिर अब पहले का ज़माना तो रहा नहीं कि लड़कियों को जहाँ चाहो झोंक दो । अब तो वह अपनी पसन्द का लड़का चाहती हैं ।"

"माँ बाप को इनकी पसन्द माननी ही पड़ती है ।"

"और फिर यह तो ठीक भी है । खुद अल्लाह रसूल का हुक्म है कि लड़की की मरज़ी ज़रूरी है । कोई तुम या हम बेटी की इच्छा पूरी करके गुनाह थोड़ा ही कर रहे हैं," जेका बोली ।

"तुम तो बस हाँ कर दो मियाँ । वरना हमारे इंकार पर बेटी की अल्लाह न करे कि जान पर बन जाएगी ।"

"अच्छा साहिब !" अल्ताफ़ जैसे कि अपनी हार मानते हुए बोला, "मैं सुहेल को बुलाकर बात करता हूँ ।" वह उठते हुए बोला ।

"कम्बख्त ने अब तो आना जाना भी बन्द कर दिया है ।"

और इन दोनों की तरफ अर्थपूर्ण दृष्टि डालते हुए बोला । "मगर क्या वह मान जाएगा ।"

"लो और सुनो ।" ज़ैको जोकि मारे खुशी के दीवानी हुई जा रही थी । बोल पड़ी ।

"बेटे की बातें । अरे पागल कौन ऐसा बदनसीब है जो अपनी बनती हुई तकदीर न बनने दे । वह तो सिर आँखों के बल पर इस रिश्ते को कबूल करेगा । उस निगोड़े के तो स्वप्न में भी यह बात न होगी ।"

"अगर वह मारे खुशी और कृतज्ञता के तुम्हें प्रणाम न करे तो कहना ।" शदो बोली ।

"यह तो फिर छप्पर फाड़कर देने वाली बात हो रही है ।"

"अच्छा" अल्ताफ़ बोला, "मुझे मंज़ूर है ।"

यह सुनना था कि सलमा जोकि कमरे के बाहर से इन बातों को बड़े ध्यान से कान लगाकर सुन रही थी मारे खुशी के दीवानी हो गई । वह पागलों की तरह वहाँ से भागी और अपने कमरे में जाकर मारे

खुशी के नाचने लगी और फिर वह धड़ाम करके अपने बैड पर गिर पड़ी। मारे खुशी और जोश के उसका कलेजा फटा जा रहा था। वह गुनगुनाने लगी।

झूम झूम कर नाचो आज गाओ खुशी के गीत
आज किसी की हार हुई है और किसी की जीत।

वह अपने बिस्तर पर से उठी और दीवानों की तरह अपने कमरे में नाचने लगी। वह बड़बड़ाई।

"मैं न कहती कि सुहेल मेरा है। हूँ।"

उसने नफरत से मुँह बिगाड़ा।

"रुखसाना बिचारी बड़ी आई थी मेरी रकीब बनकर।" वह बेसाख्ता बड़बड़ाई।

"देखो रुखसाना। मैंने दे दी न तुझे आखिर हार। आखिर जीत लिया न मैंने सुहेल को।"

उसने बड़े ज़ोर से कहकहा लगाया। वह पागलों की भाँति हँस रही थी।

●

रुख़साना के हाथ से ताँबे की प्लेट छूटकर नीचे गिर पड़ी और शोर से पूरा कमरा झुँझला उठा।

वह एकदम काँप गई। वह न जाने क्यों सारी जान से खड़ी काँप रही थी। उसका दिल बड़ी ज़ोर ज़ोर से धड़क रहा था। वह डरी सहमी लिपटी हुई खड़ी थी कि रज़िया आ गई और उसने उसकी इस हालत को ध्यान से देखा और फिर वह बड़े प्यार से बोली। "क्या हुआ बेटी ?"

वह जैसे स्वप्न से चौंक कर बोल पड़ी और अब वह फटी-फटी नज़रों से अपनी माँ को देख रही थी। उसकी ज़ुबान बंद थी कि रज़िया ने आगे बढ़कर उसे सहारा दिया।

"क्या हुआ बेटी ? आखिर बात क्या है ?"

उसने उसे झँझोड़ डाला। "होश में आओ।"

और अब उसके होश उसे वापिस मिल चुके थे। वह स्वयं ही अपनी हालत पर लजा गई और बड़ी नम्रता से बोली।

"कुछ नहीं अम्मी जान।"

वह जैसे कि क्षमा मांग रही थी।

"वह न जाने कैसे प्लेट मेरे हाथ से छूटकर नीचे गिर पड़ी।"

"तो क्या हुआ ?"

उसकी मां ने जैसे कि उसे तसल्ली दी।

वह उसे तसल्ली दे रही थी और समझा रही थी और वह अपने दिल को काबू में करने की कोशिश करके सोच रही थी कि मैं आपको क्योंकर वताऊँ कि मुझे क्या हुआ है। मेरे दिल पर किसी ने इस वक्त इतने ज़ोर का घूंसा मारा है कि मैं तड़प गई हूँ। किसी ने इतने ज़ोर से चुटकी ली है मेरे जिगर में कि मैं बता नहीं सकती। मुझे इस वक्त ऐसा लगा है कि किसी ने मेरा सब कुछ लूट लिया हो। जैसे कि किसी ने मेरी लहलहाती हुई खेती में आग लगा दी हो। जैसे कि किसी ने बीच मँझदार में मेरी किश्ती को दूर ले जाकर डुबो दिया हो। जैसे कि किसी ने मुझे दम मारने की आज्ञा दिए बिना मेरे कलेजे में अपना पूरा खंजर उतार दिया हो।

वह एकदम अपनी माँ से लिपट गई।

"अम्मी !"

वह पागलों की भाँति माँ से लिपट गई।

"अम्मी" वह हिचकियां लेते हुए बोली।

"आप तो दुआ कीजिए कि अल्लाह पाक मुझे मौत दे दें।"

"मरें तुम्हारे दुश्मन।"

●

हाज़रा ने बड़े ज़ोर से सुहेल को भींच लिया।

"मैं आज फिर जाती हूँ। इस दफा मैं देखती हूँ कि कौन आड़े आता है। मैं वायदा करती हूँ कि इस बार मैं तुम्हारी शादी की तारीख लेकर आऊँगी।"

"नहीं माँ" सुहेल बोला।

"आज मैं खुद जाता हूँ। पहले मुझ को जाने दो, फिर तुम जाना। आज मैं भी वहां कुछ फैसला ही करने जा रहा हूँ।"

और फिर इसी समय तैयार होकर वह प्रेमिका के दरवाज़े पर जाने के लिए बिल्डिंग से नीचे उतरा।

उसने जैसे ही अल्ताफ़ के बंगले में कदम रखा, उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा और वह अपने दिल की इस बेचैनी पर बेचैन हो गया। उसने अपने दिल को बड़ी मुश्किल से संभाला। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर उसके दिल में एक नामालूम डर और आशंका क्यों करवटें ले रही है।

वह ड्राइंग रूम के दरवाज़े पर आ गया और वह वहां इस वक्त आशा के विपरीत अल्ताफ़ को देखकर हैरान रह गया। वह उसी जगह खड़ा हुआ था कि अल्ताफ़ ने उसे देखते ही कहा।

"आओ! आओ! बड़ा अच्छा हुआ कि तुम खुद ही आ गए। आज तो मैं तुम्हें बुलवाने ही वाला था।"

और वह अल्ताफ़ के मुँह से यह वाक्य सुनकर बौखला गया और बड़ा परेशान हो गया। बड़े अदब से सलाम करके दूर रखी हुई एक कुर्सी पर बैठ गया।

"अरे इधर आओ भाई!" अल्ताफ़ बोला।

"वहाँ इतनी दूर आखिर तुम क्यों बैठ गए।" उसने सोफ़े की तरफ़ इशारा किया।

"यहाँ आकर बैठो।"

और वह चुपचाप वहाँ से उठा और सोफ़े पर आकर बैठ गया।

"तुम्हारा इम्तहान कब है?" अल्ताफ़ ने सवाल किया।

"एक महीना बाकी है।"

"हूँ!" वह कुछ क्षण जैसे कि सोचता रहा।

"उसके बाद। मेरा मतलब है कि फिर तुम क्या करोगे?"

"नौकरी करूँगा।" वह बड़ी सादगी से बोला।

"उसके बाद किसी जगह भी मुझे चार पांच सौ की जगह मिल

जाएगी।"

"सचमुच," अलताफ़ बोला "इंजीनीयरिंग में यही फ़ायदा है कि भविष्य की गारंटी मिल जाती है।"

"जी।"

वह कुछ देर फिर चुप रहा।

"मेरा ख्याल है तुम फिलहाल नौकरी की फिक्र छोड़ दो।"

"जी।"

"ओ हाँ" वह बोला "तुम इसके बाद अमरीका चले जाओ। वहां का कोर्स पूरा करने के बाद तुम्हें दो हज़ार से लेकर पांच छः हज़ार की नौकरी मिल सकती है।"

और सुहेल ने सोचा कि इंसपेक्टर साहिब मेरा मज़ाक उड़ा रहे हैं। इसलिए वह कुछ संकोच करके बोला।

"यह भी करूंगा। मगर फिलहाल मैं अमरीका नहीं जा सकता। इसलिए नौकरी मेरे लिए बहुत ज़रूरी है।"

"यह तो मुझे मालूम है कि तुम नहीं जा सकते। वरना ट्यूशन क्यों करते।" अल्ताफ़ मुस्कराया।

"और अगर मैं तुम्हें अमरीका भेज दूं तो" और यह सुनकर सुहेल का सिर चकराने लगा। उसकी खाक़ समझ में न आया कि यह इंस्पेक्टर साहिब इस दर्जा मेहरबान क्यों हो रहे हैं।

उसने सोचा यह भी मज़ाक उड़ाने का एक नया ढंग है कि अल्ताफ़ की आवाज़ फिर सुनाई दी।

"बोलो तुम्हें मंज़ूर है ?"

"जी।"

वह प्रश्नवाचक दृष्टि से उसे देखने लगा।

"मैं आपका मतलब नहीं समझा।"

"मतलब इसका कुछ इतना मुश्किल तो नहीं है।" वह इधर-उधर नज़रें चुराते हुए बोला।

"तुम नेक, शरीफ और होनहार लड़के हो और मैंने तुम्हें अपनी सलमा बेटी के लिये पसन्द कर लिया है।"

और यह सुनकर सुहेल का सिर चकरा गया कि अल्ताफ़ की आवाज़ फिर सुनाई दी। वह बड़े फैसला भरे स्वर में बोले, "तुम अपनी मां और बाप से जाकर यह कह दो कि वह तुम्हारा रिश्ता लेकर आयें।"

सुहेल ने अपने होश इकट्ठे किए।

"एक बार मेरी माँ आई थी……और……"अल्ताफ़ ने बात काटी।

"वह एक गलत लड़की के लिए रिश्ता लेकर आई थी" और यह सुनकर मारे गुस्से के सुहेल का बुरा हाल हो गया। मगर वह कमाल साहस से काम लेते हुए बड़े अदब से बोला।

"हो सकता है उन्हें वही रिश्ता पसंद हो।"

"उन्हें गोली मारो।" अल्ताफ़ झुँझला गया।

"तुम बताओ कि तुम्हें कौन-सा रिश्ता पसंद है।"

"नालायक और असभ्य औलाद अपने मां-बाप को गोली मारती है।" सुहेल के माथे पर शिकनें पड़ गईं।

"मुझे वही पसन्द है जो मेरी मां को पसन्द है।"

"क्या मतलब ?" अल्ताफ़ गुस्से में आगबबूला हो गया और खड़े होकर बोला।

"तो इसका मतलब यह हुआ कि तुम बदनसीब आदमी मेरी आफ़र को ठुकरा रहे हो ?"

"यही समझ लीजिए।"

"कमीना कहीं का" अल्ताफ़ इतनी ज़ोर से चीखा कि उसके गले की रगें फूल गईं।

"हरामज़ादे, निकल जाओ मेरे बँगले से। दूर हो जाओ मेरी नज़रों के सामने से, मरदूद। नहीं तो मैं तुम्हें गोली मार दूँगा।"

"उसके शोर की आवाज़ सुनकर शदो, जैको और सलमा ड्राइंग रूम के बराबर वाले कमरे में आकर खड़ी हो गईं। सुहेल अपनी जगह पर से उठा।

"तुम मेरी बात ठुकरा कर इस शहर में नहीं रह सकते" अल्ताफ़

गर्जा "मैं तुम्हें सारी ज़िन्दगी जेल में सड़वा डालूँगा।"

सुहेल ने अल्ताफ़ को ध्यान से देखा।

"इस गुस्से में भी मुझे आपका दामाद बनना मंजूर क्यों नहीं है।"

"बदतमीज़"

अल्ताफ़ ने मारे गुस्से के सुहेल के गाल पर एक तमाचा जड़ दिया। "तू मेरी भतीजी रुखसाना से इश्क करता है। कमीना कहीं का। ज़लील मैंने सिर्फ इसीलिए उसे और उसकी मां और उसके भाई को अपने यहाँ से जूते मार कर निकाल दिया है?"

"क्या?"

सुहेल के होश उड़ गए और वह अल्ताफ़ के तमाचे को भूल यह सोचने लगा कि वह लोग आखिर गए कहाँ होंगे कि अल्ताफ़ ने एक बार फिर कोशिश की।

"मैं तुम्हें अपनी बेटी देकर तुम्हारी इज़्ज़त बढ़ा रहा हूँ। एक बार फिर सोच लो। तुम्हारी जिन्दगी बन सकती है और......"

सुहेल ने अल्ताफ़ की बात इस बार बड़ी कटुता से काट दी। "मुझे आपकी बेटी से शादी नहीं करनी। समझ लीजिए कि मैं अपनी जिन्दगी बनाना नहीं चाहता।"

और यह सुनना था कि सलमा का रंग उतर गया और मारे रँज के उसकी आँखों में आँसू आ गए। वह अपने होंठ काटने लगी। उसने घृणा के साथ अपना मुँह बनाया और बड़ी तेजी के साथ आकर वह अपने बिस्तर पर औंधे गिर गई।

"गैट आऊट यू डरटी डौग।"

अल्ताफ़ ने सुहेल को पकड़कर झंझोड़ डाला। उसने उसके मुँह पर एक ज़ोर का घूँमा मारा और ठोकर मार कर उसने उसे ड्राइंग रूम से बाहर निकाल दिया।

●

रुखसाना मसले पर बठी वजीफ़ा पा रही थी। वह एकदम सारी

सान से कांप गई और आप ही आप उसकी आंखों में आंसू आ गए। वह बुदबुदाई।

"या अल्लाह ! तू इन्हें हर बला और हर आफत से सुरक्षित रख।"



सलमा अपने बिस्तर पर से तड़प कर उठी।

"खुदा करे कि कमीने के तन बदन में कीड़े पड़ें। माँगे भीख न मिले सूअर के बच्चे को।" वह दीवानों की तरह कमरे में टहलने लगी।

"कमबख़्त ने धृष्टता की हद कर दी। मुझे ठुकरा कर मेरे साथ ही साथ मेरे सारे खानदान की इज्ज़त मिट्टी में मिला दी।" उसने चिलबिला कर सुहेल को कोसा।

"खुदा करे कि उसकी सारी ज़िन्दगी अपनी मुहब्बत के मातम में गुज़रे।"



रुखसाना बड़ी शान्ति से मसले पर बैठी अपने दोनों हाथ उठाए कह रही थी।

"मुझे यकीन आ गया मेरे मौला।" वह बहुत खुश थी।

"तूने मेरे दिल की पुकार ज़रूर सुन ली है।" उसने अपने मुंह पर दोनों हाथ फेरे।

"मुझे यकीन है कि हमारी ज़िन्दगी मुहब्बत के मातम में कभी न गुज़रेगी।" और फिर वह एक अदृश्य प्रफुल्लता के साथ मसले से उठी। उसने मसला तह किया। "तेरा लाख लाख शुक्र अल्लाह।" मसला उसने अलमारी में रख दिया और फिर वह खुश-खुश वहाँ से गई और चूल्हे के पास जाकर अपनी माँ के काम में हाथ बटाने लगी।



सुहेल की समझ में नहीं आ रही थी कि वह इस भटके हुए खान-दान को कहाँ और किस जगह ढूंढे। बम्बई जैसी जगह में किसी को

तलाश करना कितना कठिन काम है। फिर भी वह अपने दिल की बेचैनियों के हाथों मजबूर इकबाल और उसके घर वालों को इधर-उधर तलाश करता रहता। यूंही फिज़ूल वह अपने दिल के हाथों मजबूर होकर इधर-उधर देखता रहा।

वह बम्बई जैसे बड़े शहर में उन्हें ढूंढ रहा था और पुलिस उसके घर दरवाज़ा खटखटा रही थी।

"क्या बात है ?" हाजिरा ने अपने दरवाज़े पर पुलिस देख कर बड़े घबड़ाए हुए स्वर में सवाल किया। वह दरवाजे की आड़ में खड़ी हुई थी।

"सुहेल है ?"

"क्या काम है ?"

"चोरों से पुलिस को क्या काम होता है ?" इंस्पेक्टर मुस्करा रहा था।

"उसने चोरी की है।" सिपाही बोला।

"घर पर है कि नहीं।"

"क्या बकते हो तुम लोग।" हाज़रा गुस्से के मारे लाल-पीली हो गई। "मेरा बेटा और चोर।"

"बोम मत मारो बाई" सिपाही कह रहा था, "वह चोर है कि साहूकार अभी मालूम हो जाएगा। उसने इंस्पेक्टर अल्ताफ़ की हीरे की अंगूठी चुराई है, हम तलाशी को आया है।"

"वह घर नहीं है।"

"तो हम उसकी राह देखेगा।"

इतने में सुहेल आ गया और वह अपने दरवाजे पर पुलिस वालों को देखकर हैरान हो गया।

"क्या बात है।" उसने पूछा।

"तुम सुहेल है ?" पुलिस के सिपाही ने सवाल किया।

"हाँ" वह हैरान था।

"इंस्पेक्टर अलताफ़ ने कम्पलेण्ट लिखवाया है। तुम उनकी हीरे की अंगूठी चुरा कर लाए हो।" इंस्पेक्टर बोला।

"आई एम सौरी, मिस्टर सुहेल, हम तलाशी लेगा।"

"आप तलाशी ले सकते हैं।"

"पहले तुम अपनी तलाशी दो।"

"ले लीजिए तलाशी।"

सुहेल अपने दोनों हाथ ऊपर करके खड़ा हो गया। उसके कमरे के सामने बिल्डिंग में रहने वालों की भीड़ जमा हो गई। सब हैरान थे। वह सुहेल को अच्छी तरह जानते थे। वह ऐसा आदमी नहीं था।

तलाशी ली गई और उसकी पतलून की जेब से इंस्पेक्टर अल्ताफ़ की सोने की अंगूठी जिसमें हीरा जड़ा हुआ था मिल गई।

"यह क्या है।" इंस्पेक्टर गरजा और सुहेल के चेहरे पर हवाईयाँ उड़ने लगीं। वह ज्यादा परेशान होकर बोला।

"मगर मैं सच कहता हूँ कि मैंने चोरी नहीं की।"

"फिर यह अंगूठी तुम्हारी जेब में कैसे आ गई।"

"यह मैं नहीं बता सकता।"

"आइए हमारे साथ।"

और वह लोग सुहेल को लेकर चले गए और उनके घर में कोहराम मच गया। पूरी बिल्डिंग हैरान थी।

बिल्डिंग के कई बुज़ुर्ग पुलिस स्टेशन तक सुहेल के साथ गए। उसकी ज़मानत हो गई और वह इन लोगों के साथ वापस आ गया।

उसके घर वाले हैरान थे। वह खुद हैरान और लज्जित था और पूरी बिल्डिंग वाले आपस में कानाफ़ूसियाँ कर रहे थे। आख़िर यह हुआ कैसे।

और इधर इंस्पेक्टर अल्ताफ़ शदो से कह रहा था।

"कम-से-कम तीन चार महीने की सज़ा होगी बदनसीब को। अपनी बेइज्ज़ती का बदला मैं इसी तरह उससे सारी ज़िन्दगी लेता रहूँगा।"

"मगर यह अँगूठी उसकी जेब में आई कैसे?" ज़ैका बोली।

"मैंने ही कम्बख़्त की जेब में वह अंगूठी डाल दी थी।" अल्ताफ़ ने

दांत पीसे।

"मैं तो किसी और के कत्ल के जुर्म में उसे फांसी के तख्ते पर पहुँचा कर दम लूंगा।"

और फिर दो एक पेशियों के बाद सुहेल को पचास रुपए जुर्माना और एक डेढ़ महीने की सज़ा का हुक्म सुना दिया गया। बनी अहमद ने बहुत कोशिश की, उसका बेकसूर बेटा बेदाग छूट जाए मगर कुछ न हुआ और सुहेल को सज़ा हो गई।

उसके घर में शोक छा गया और हाज़िरा ने अल्ताफ़ के घर वालों को मुंह भर-भर के कोसा।

"कोई बात नहीं।" सुहेल बोला।

"आप कोई चिन्ता न कीजिए। मैं कसम खुदा की बिल्कुल निर्दोष हूँ। अल्लाह पाक ज़रूर इंस्पेक्टर अल्ताफ़ को इस जुर्म की सख्त सज़ा देगा। वह सब उसी की शरारत है।"

"मगर तुम्हारा इम्तहान बेटे।" बनी अहमद रोने लगा। "उसका क्या होगा। मुझे यूं समझो कि साल भर की फाँसी हो गई। तुम्हारा पूरा साल ज़ाया हो गया।"

"अल्लाह पाक की मरज़ी।" सुहेल बोला "खुदा जो करता है ठीक करता है।"

और फिर वह सज़ा पूरी करने के लिए पुलिस की निगरानी में अदालत से बाहर चला गया और गरीब बनी अहमद और हाज़िरा अपना-अपना मुंह पीटते हुए वापस आ गए। इन दोनों के अरमानों पर ओस पड़ गई थी।

●

इकबाल बिचारा स्कूल में पढ़ता था। उसके बाद कशफ़ोर्ड मार्कीट में झल्ली लिए खड़ा रहता था और किसी-न-किसी तरह कोशिश करके डेढ़ दो रुपए रोज़ कमा लेता था। रज़िया और रुखसाना हाथ के सिले हुए कुर्ते दुकान के लिए तैयार करती थीं और किसी-न-किसी तरह कोई तीन साढ़े तीन रुपए रोज़ बना लेती थीं। इस तरह उनका खर्च पूरा

होता था। वह तीनों दिन रात मेहनत करते और अपने घर का खर्च पूरा कर लेते।

इकबाल को अपनी पढ़ाई और घर के खर्च के अतिरिक्त अपनी बहिन रुखसाना की भी चिन्ता थी और वह मास्टर साहिब क फिक्र में दिन रात लगा रहता था। उसने सुहेल को हर जगह तलाश किया मगर किसी भी जगह सुहेल का पता न मिला। वह चुपके-चुपके सुहेल को तलाश कर रहा था और इसी धुन में लगा रहता था कि किसी तरह भी मास्टर साहिब का पता उसे लग जाए तो वह अपनी बहिन की दिल की बीमारी का इलाज कर दे।

और रुखसाना थी कि दिन रात मेहनत करके और सुहेल की याद में तड़प-तड़प कर आधी हुई जा रही थी। उसकी मूक मुहब्बत उसे भीतर-ही-भीतर घुलाए जा रही थी और वह अपनी मुहब्बत की ठण्डी आग में दिन रात जल-जल कर बिमार हो गई थी।

वह मुँह से कुछ न कहती थी। किसी स्टेज पर भी पहुँच कर उसने अपने कुल की शान और शरीफ़ मुस्लिम घराने की आन को बट्टा नहीं लगने दिया था। मगर दिल की बेकरारी उसके बस में न थी। और वह अपनी इन्हीं बेकरारियों में घिरी हुई अपनी ज़िन्दगी के दिन पूरे कर रही थी।

उसे हर पल और हर क्षण सुहेल का ध्यान रहता। वह सोते-जागते किसी समय भी सुहेल को भूलने की चेष्टा के विपरीत भी न भूल सकती।

वह सोचती आखिर सुहेल उसे इतनी जल्दी भूल कैसे गया। क्या बात हुई कि उसने फिर लौट कर उसकी सुध न ली। कहाँ चला गया वह। किस दुनियाँ में खो गया वह। जाकर उसे भूल कर भी उसका ख्याल नहीं आया।

वह सुहेल की यादों को अपने कलेजे से लगाये रात गए तक जागती रहती और यह सोचती रहती कि इतनी जल्दी उसे सुहेल भूल कैसे गया। उसका जी चाहता था कि वह उसकी जोगन बन कर दुनियाँ का चपा-चपा छान मारे। वह बम्बई की हर गली और हर कूंचे में तलाश करती

फिरे। मगर वह ऐसा न कर सकती थी क्योंकि वह एक शरीफ मुस्लिम घराने की लड़की थी। जहाँ कि कुंवारियाँ घुट-घुट कर और तड़प-तड़प कर अपनी जान दे देती हैं मगर वह अपनी मुहब्बत का इश्तहार नहीं देती फिरती। वह मर जाती हैं मगर उफ़ तक नहीं करतीं। जहां कुँवारी लड़कियाँ मुहब्बत का नाम भी अपनी ज़ुबान पर नहीं लातीं वह इस परिवार की लड़की थी।

उसकी यही कठिनाइयाँ उसे घुन की तरह अन्दर-ही-अन्दर खोखला किए डाल रही थीं। और उसकी माँ उसकी इस हालत से बहुत ज़्यादा उदास और चिन्तित थी। उसकी समझ में बिल्कुल न आ रहा था कि वह अपनी बेटी के इस सबसे बड़े गम का इलाज कहाँ से लाये और किस तरह लाए। एक दिन उसने एकान्त में इकबाल से बात की।

"बेटे ! तुम तो अपनी बहिन के दुःख से अपरिचित नहीं हो। अब तो वह अपने गमों की ताब न लाकर मरने के करीब पहुँच गई है। मौत के मुंह पर आ खड़ी हो गई है वह अब तो। जिस तरह भी हो तुम सिर्फ़ उसकी ज़िन्दगी की खातिर सुहेल को ढूंढ़ निकालो।"

"अम्मी" इकबाल बड़े दुःख के साथ बोला।

"मैं बाजी के गम से अपरिचित नहीं हूँ और न ही इस तरफ से चैन से बैठा हूँ। आपके कहने से पहले ही मैं मास्टर साहिब को हर तरफ़ तलाश करता फिरता हूँ मगर मुझे कहीं नज़र नहीं आते। यह मेरी हिमाकत कहिए कि मैंने कभी उनसे यह नहीं पूछा कि वह कहाँ रहते हैं और न कभी ऐसा मौका आया कि वह खुद बताते।"

"फिर" रज़िया जैसे कि निराश हो गई और मानो चिन्ता के सागर में डूबती हुई बोली।

"अब क्या होगा ?"

"मेरा दिल कह रहा है अम्मी जो कुछ होगा सब ठीक हो जाएगा। मास्टर साहिब अब मिलने वाले हैं।"

"अल्लाह करे वह मिल जाएँ। नहीं तो मेरी बेटी मुफ्त में मर जायेगी।"

"ऐसा न कहिए अम्मी।" इकबाल तड़प कर बोला। "मरें बाजी के दुश्मन" और यह कह कर वह अपनी जगह से उठा।

"बस दो ही एक दिन में मास्टर साहिब को ढूँढ निकालूँगा।"

"अच्छा" रज़िया बोली।

"डाक्टर साहिब के यहाँ से पहले बहिन की दवा तो ला दो। रात उसकी तबीयत ज़्यादा खराब थी।"

"मैं वही लाने के लिए उठा हूँ।" वह बोला।

"आप दवा की शीशी ला दीजिए।"

●

आज का दिन इकबाल के लिए बड़ा ही मनहूस था। आज उसके स्कूल की छुट्टी थी और इसलिए वह आज सुबह-ही-सुबह कशफोर्ड मारकीट पहुँच गया था कि कुछ ज़्यादा कमा ले।

मगर आज सुबह से लेकर दोपहर तक उसे इतने पैसे भी न मिले थे कि वह दोपहर का खाना ही खाले। उसे एक धेला भी न मिला था। भुजिया खाने के लिए भी उसकी जेब में पैसे नहीं थे। उसकी जेब बिलकुल खाली थी। और उसे अपनी भूख से कहीं ज़्यादा इस बात की चिंता थी कि वह शाम को अपनी बहिन के लिए सेब, अनार और मौसमी कहाँ से लेकर जाएगा क्योंकि डाक्टर साहिब ने उसकी बहिन के लिए सेब, अनार और अंगूर बताए थे। उसके पास कशफोर्ड मारकीट से घर तक जाने के लिए भी पैसे नहीं थे।

वह बड़ा परेशान था कि अचानक उसे एक मेम साहिब मिल गई और वह उनके पीछे-पीछे हो लिया। मेम साहिब ने फल खरीदे कि उसका टोकरा भर गया। सेब, नाशपाती, अनार, अँगूर, मौसमी संतरा, केले और न जाने क्या-क्या, और वह सोच रहा था कि यह मेम साहिब इतने बहुत से फल खरीद रही है और वह अपनी बहिन के लिए जिसे कि फलों की सख्त ज़रूरत है अब तक कुछ नहीं खरीद सका।

वह टोकरा सिर पर रखे चल रहा था और सोचता जा रहा था

कि क्या कुदरत इतनी बेरहम और अन्यायी है कि उसके सिर पर फलों का अम्बार है। पूरा कशफोर्ड मारकीट फलों से पटा पड़ा है और उसकी बहिन जिसे ज़रूर डाक्टर ने फल खाने को कहा है, फल के लिए तरस रही है।

उसके शरीर में बड़े ज़ोर की झुरझुरी समा गई और वह गिरते गिरते बचा। अपनी कार के पास पहुँच कर, जबकि वह सारे फल गाड़ी में रख चुका, मेम साहिब ने उसकी तरफ एक चवन्नी बढ़ाई। और वह बोला।

"मेम साहिबा, यह तो बहुत कम है।"

"फिर।"

"कम-से-कम एक रुपया दे दीजिए, मेम साहिब।"

"ओह।" वह गुर्राई "रुपया"।

"जी मेम साहिब। पूरा एक घंटा मैं आपके साथ फिरा हूँ।"

"बको मत।"

यह कहकर उसने दो आने पैसे और दे दिए और उनकी तरफ़ कोई ध्यान दिए बिना कार में बैठकर चली गई। फिर शाम तक उसे डेढ़ रुपया और मिल गया। वह खुश हो गया। अब उसकी जेब में कुल मिलाकर एक रुपया चौदह आने हो गए थे। उसने खुदा का शुक्र अदा किया।

उसे बड़े ज़ोर की भूख लग रही थी। मगर वह अपनी भूख को दबा कर सीधा एक फल बेचने वाले के ठेले के पास आकर खड़ा हो गया। वह फल बेचने वाला बनी अहमद सुहेल का बाप था।

उसने सारे ज़रूरत के फल थोड़े-थोड़े लिए और जब हिसाब हुआ तो मालूम हुआ कि इन थोड़े से फलों के दाम भी सब मिला कर इतने हुए हैं कि जितने पैसे उसकी जेब में नहीं है। उसकी जेब में कुल दो आने कम दो रुपए थे और अढ़ाई रुपए चुकाने थे। वह बोला।

"देखिए बड़े साहिब। मेरी जेब में एक रुपया चौदह आने हैं। आप पौने दो रुपए ले लीजिए। दो आने अंधेरी से चकाला तक जाने के लिए मेरे पास छोड़ दीजिए। बाकी बारह आने मैं आपको कल दे

दूंगा। मैं रोज यहाँ मज़दूरी करने आता हूँ।"

"मगर मैं तो रोज़ यहाँ नहीं आता।" बनी अहमद बोला। "क्या पता कि कल मैं यहाँ न आऊँ।" उसने सलाह दी।

"तुम पौने दो रुपए के फल ले जाओ।"

और इकबाल बिनती करते हुए बोला।

"मैं बारह आने कल ज़रूर दे दूंगा बड़े साहिब। यही फल कम हैं। बारह आने के और कम कर दूंगा तो।"

कि इतने में एक नौजवान फल वाले के पास आकर खड़ा हो गया और उसे देखते ही इकबाल के हाथों से फलों की थैली छूट कर नीचे गिर पड़ी।

"मास्टर साहिब।"

उसके मुँह से निकला। और वह मारे खुशी के पागल हो गया।

"इकबाल।"

सुहेल ने आश्चर्य से देखा। और वह दोनों एक दूसरे से लिपट गए।

"आप कहाँ खो गए थे मास्टर साहिब।" इकबाल की आँखों में आंसू थे।

"मैंने आपको कहाँ-कहाँ तलाश किया।"

"और मैंने भी तुम लोगों को कितना ढूंढ़ा है।"

और फिर वह अपने बाप से बोला जो कि यह नज़ारा देख कर अपना ठेला लेकर भागने चला था।

"भागने की ज़रूरत नहीं अब्बा। यह इकबाल है इससे कोई पर्दा नहीं। यह इंस्पेक्टर अल्ताफ़ का भतीजा है।"

"हायें।"

बनी अहमद के मुंह से निकला। और उसने इकबाल को लिपटा लिया।

"मगर आप थे कहाँ?"

"फिर बताऊँगा।" सुहेल बोला, "तुम बताओ कि तुम कहाँ

हो ।"

"हम लोग चकाला में रहते हैं ।" इकबाल बोला "बहिन बहुत बिमार है । और मैं उन्हीं के लिए फल ले रहा था ।"

"हाये !"

सुहेल का मुँह फ़क हो गया ।

"क्या हुआ है उन्हें ।" उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था और फिर वह बोला ।

"अच्छा । तुम मुझे अपने घर ले चलो ।"

और फिर उसने जल्दी-जल्दी बहुत से फल थैली में भर लिए।

"मैं अभी चलता हूँ तुम्हारे साथ ।"

और फिर वह अपने अब्बा से बोला ।

"अब्बा, मैं इकबाल के साथ जा रहा हूँ । वहाँ से सीधा घर आ जाऊँगा ।" और फिर वह जाते हुए बोला ।

"अरे हाँ । अब्बा एक खुशखबरी है । मेरे इम्तहान की दरख्वास्त मंज़ूर हो गई है । अब मुझे अगले साल के लिए इन्तज़ार न करना पड़ेगा ।"

मारे खुशी के बनी अहमद का चेहरा दमक उठा । और उसने अल्लाह के हज़ूर में शुक्रिया के तौर पर अपने दोनों हाथ ऊपर उठा लिए ।

सुहेल इकबाल को लिए हुए टैक्सी स्टैण्ड की तरफ भाग रहा था ।

इकबाल दिवानों की तरह घर के अन्दर घुसा और जाते ही अपनी माँ से पागलों की तरह लिपट गया ।

"क्या बात है बेटे ।"

इकबाल ने फलों की पूरी थैली मां के ऊपर उतार दी ।

"अरे" वह हैरान रह गई ।

"इतने बहुत से फल ? इतने रुपए तुम्हें कहां से मिल गए ।" रुखसाना ने जो कि पास ही तकियों के सहारे बैठी थी अपनी मुस्कराती हुई आँखों से भाई को देखा ।

"भाई हो तो इकबाल जैसा हो।"

वह अपनी बेचैनी से अपनी बहिन से लिपट गया। उसने रुखसाना को झंझोड़ डाला।

"आप उठकर नाचिए बाजी। मारे खुशी के तालियाँ बजाइए और कहकहे लगाइए।"

"आखिर हुआ क्या।" रज़िया बोली "देखता नहीं है वह बेचारी कितनी कमज़ोर है और तू उसे झँझोड़ डाल रहा है।"

"मैं तो बाजी को उस वक्त तक झंझोड़ता रहूँगा जब तक यह मुझे मुँह मांगा इनाम न देंगी।"

"किस बात का इनाम इकबाल।" रुखसाना जो कि वास्तव में इकबाल के झंझोड़ने से निढाल हो गई थी, कमज़ोर आवाज़ से बोली।

"पहले बात तो बताओ बीरन।"

"अच्छा तो सुनो" वह मुस्कराया।

"मैंने मास्टर साहिब को ढूंढ निकाला है।"

रज़िया के मुँह से एकदम निकला।

"कहाँ है वह ?"

और रुखसाना के मुरझाए हुए चेहरे पर एक बार ही अंधेरा छा गया। उसकी आँखें चमकने लगीं। उसका दिल उसके पहलू में ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा और उसके सारे शरीर में खून की लहर तेज़ हो गई।

"मास्टर साहिब बाहर खड़े हैं।"

"सच।"

रज़िया मारे खुशी के पागल हो गई। और रुखसाना की आँखों में चमक पैदा हो चुकी थी। शर्म के मारे खुद ही उसकी आँखें झुक गईं।

"मैं अभी अन्दर बुलाता हूँ।" इकबाल मारे खुशी और जोश से उठकर खड़ा हो गया।

"आप लोग इसी कमरे में रहिएगा। मैं इन्हें बाहर वाले कमरे में जाकर बिठाता हूँ।"

और वह पागलों की तरह बाहर की तरफ भागा।

सरदार जोगिन्दर सिंह बम्बई के बहुत बड़े कारोबारी थे। वह गवर्नमेंट कानट्रैक्टर भी थे और बम्बई उपनगरों पर इनकी कई बिल्डिगें थीं। और कई चालें थी। उनकी एक दो नहीं बल्कि बीस पचीस टैक्सियाँ बम्बई में चलती थीं। इकबाल इन्हीं की चकाला वाली नई चाल में रहता था। इनका बेटा सतपाल सिंह इकबाल का बड़ा गहरा दोस्त था। दोनों क्लास-फैलो थे।

सरदार जोगिन्दर सिंह को इकबाल से बड़ी हमदर्दी थी। वह उसकी माता और उसकी बहिन का बहुत ध्यान रखते थे। सरदार जी के घर की औरतों का भी रज़िया के पास आना जाना था।

और वह इकबाल और उनके घर वालों की मदद भी करना चाहते थे। मगर यह लोग इतने ज़्यादा गौरवशाली थे कि वह सरदार साहिब से किसी किस्म की मदद लेना नहीं चाहते थे। वह हमेशा सरदार जी की आफ़र को किसी ढंग से टाल दिया करते थे।

इधर सुहेल का रिश्ता हाज़िरा लेकर आ चुकी थी और रज़िया ने बड़े चाव के साथ इस रिश्ते को कबूल लिया था। सुहेल और रुखसाना की शादी की बात पक्की हो चुकी थी। अब रज़िया को यह चिन्ता खाए जा रही थी कि वह अपनी बेटी की शादी के लिए रुपया कहाँ से लाए। जो कुछ था उसकी शादी के लिए, वह तो शदो पहले ही बिना डकार लिये हज़म कर चुकी थी और वह साफ-साफ कह चुकी थी कि वह न तो रुपए देगी और न गहने। आखिर को उसने उन्हें इतने दिनों तक खिलाया पिलाया है। वह उनकी शरण रही है। फिर भला रुपये और ज़ेवरों की वापसी का सवाल ही कहां पैदा होता है।

वह ज़बरदस्त थे और वह लोग मजबूर। विवशता ने ज़बरदस्ती के आगे हाथियार डाल दिये थे। रज़िया शुक्र करके और अल्लाह के भरोसे बिल्कुल ही खाली हाथ उस घर से निकल आई थी।

मगर अब उसे अपनी बेटी की चिन्ता खाए जा रही थी कि इकबाल

ने मां से कहा ।

"आप कोई चिन्ता न कीजिए अम्मी जान । बाजी की शादी का सब इन्तज़ाम हो जाएगा ।"

"मगर कैसे ?"

"फूफा मियां साहिब पर अपना एक लाख रुपया कर्ज़ है ।"

"मगर इसका सबूत क्या है हमारे पास । वह धेला भी न देंगे । वह लोग कब के मुकर चुके हैं इस कर्ज़ से ।"

"उनके बाप को भी देना पड़ेगा ।" इकबाल खड़ा हो गया ।

"मेरे पास खत मौजूद हैं ।"

"कहाँ बेटे ।" रज़िया बड़े दर्द के साथ बोली । "इन लोगों ने तो खत तक चुरा लिए हैं कमीनों ने । इसलिए अब वे खत मेरे बक्स से गायब हो चुके हैं । मैंने बहुत ढूंढ़े मगर एक खत भी न मिला ।"

"इन खतों से क्या होता है ।" इकबाल जोश से बोला ।

"मेरे पास फूफा मियाँ का स्टैम्प पेपर मौजूद है जो उन्होंने जाने किस जोश में अब्बा को लिख मारा था ।"

"स्टैम्प पेपर ?"

"हां, अमी ।" इकबाल बोला, "मैं अभी दिखाता हूँ ।"

और यह कहकर वह गया और अपने सन्दूक से दस रुपए का स्टैम्प पेपर निकाल लाया ।

"यह देखिए ।"

वह मारे खुशी के पागल हुआ जा रहा था ।

"यह है वह ड्राफ्ट जो फूफा मियाँ साहिब ने अब्बा मरहूम को लिख कर भेजा था ।"

और वह स्टैम्प पेपर देख कर रज़िया और रुखसाना की आँखों में खुशी के आँसू छलक आए ।

"मगर यह हुआ कैसे ?"

"खुदा मालूम" इकबाल बोला । "अभी एक ही हफ्ताह हुआ कि मुझे अब्बा मरहूम की पुरानी शेरवानी की जेब में पड़ा हुआ मिल गया था और मैंने उसे देख कर बड़ी सावधानी से रख लिया था ।

सोचा था कि आपको बाद में बताऊँगा। सो अब इसका वक्त आ गया है।"

"मगर क्या हम उन पर दावा करेंगे।" रज़िया ने सोच कर कहा।

"मगर हमारे पास तो दावा के लिए भी तो रुपये नहीं हैं।"

"वह हमारे मेहरबान सरदार जी जो हैं।" इक़बाल बोला।

"मैं आज ही यह स्टैम्प पेपर दिखा कर बात करता हूँ।"

मारे खुशी के रज़िया की बाँछे खिल गई। उसने अल्लाह पाक का लाख-लाख शुक्र अदा किया। इकबाल यह पेपर लेकर सरदार जोगिन्दर सिंह के बँगले की तरफ़ भागा जो कि चकाला में ही रहते थे।

●

सरदार जोगिन्दर सिंह ने वह स्टैम्प पेपर देखा और मुस्कराए।

"अब मैं समझ लूँगा इस हरामज़ादे अल्ताफ़ के बच्चे से।"

वह इकबाल से बोले।

"तुम कोई चिन्ता न करो बेटे। यह स्टैम्प पेपर मुझे दे दो। मैं अस्सी हज़ार में इसे खरीदे लेता हूँ। अस्सी हज़ार रुपए मैं तुम्हारे नाम से बैंक में जमा कराए देता हूँ फिर उसके बाद देखा जाएगा।"

और यह सुनकर मारे खुशी के इकबाल का बुरा हाल हो गया। उसका सिर चकरा गया और वह सरदार साहिब का धन्यवाद करते हुए घिघियाने लगा।

"आपका अहसान हम लोग सारी ज़िन्दगी नहीं भूलेंगे।"

"अहसान काहे का बेटे।" वह बोले।

"मैं अभी चल कर तुम्हारी माता से बातें कर लेता हूँ। रुखसाना बेटी की शादी मैं इतने धूम-धाम से करूँगा कि दुनियाँ देखेगी।"

और वह उसी समय इकबाल को साथ लेकर अपने बँगले से बाहर निकले।

सरदार जोगिन्दर सिंह का नोटिस जब एक लाख रुपए की माँग

के लिए बम्बई के सबसे बड़े वकील की मार्फत इंस्पेक्टर अल्ताफ़ को मिला तो वह चकराकर रह गया। नोटिस में लिखा था कि अगर तुमने एक लाख की रकम चौबीस घण्टे के अन्दर न चुकाई तो तुम्हारे साथ कानूनी कार्रवाही की जाएगी और फिर खर्चे की ज़िम्मेदारी भी तुम पर होगी। सरदार जी के वकील ने साफ-साफ लिखा था कि हमारे मुवक्किल ने तुम्हारा स्टैम्प पेपर रईस मियाँ के बेटे इकबाल अहमद से खरीद लिया है और अब कर्ज़ के लेनदार वह हैं।"

वह अपना सिर पकड़े बैठा था कि इतने में शदो आ गई।

"क्या बात है ?" उसने पति को परेशान देख कर पूछा।

"तुम्हारा सिर।" अल्ताफ़ जल कर बोला।

"तुमने तो कहा था कि सारे कागज़ तुम्हारी सास ने रज़िया के बक्स से चुरा लिए हैं।"

"हाँ। सच तो है।" वह बोली "अम्मी जान ने सारे तुम्हारे और मेरे खत निकाल तो लिए हैं।"

"और वह स्टैम्प पेपर जो कि मैंने जोश में आकर तुम्हारे भाई साहिब को लिख मारा था।"

"स्टैम्प पेपर" शदो बोली "उसका तो मुझे पता नहीं।"

और फिर वह आश्चर्य से बोली।

"क्या आपने कोई सरकारी कागज़ मोल लेकर भेजा था।"

"जी"

"फिर"

"फिर क्या। सरदार जोगिन्दर सिंह के वकील का नोटिस आया है।"

"यह मुवा सरदार जोगिन्दर सिंह कौन है ?"

"होगा कोई तुम्हारी भाभी का यार।" अल्ताफ़ जल कर बोला। "वह बम्बई का एक बड़ा आदमी है और उसने इन लोगों से वह कागज़ खरीद दिया है। मेरी इसकी बड़ी पुरानी दुशमनी चली आ रही है और अब इसे यह मौका हाथ आया है। वह मुझे हरगिज़ न छोड़ेगा।"

"फ़िर" शदो का दम निकल गया। "अब क्या होगा।"

"एक लाख देना पड़ेगा।" अल्ताफ़ मरी हुई आवाज़ से बोला, "और पूरे एक लाख तो मेरे पास भी नहीं हैं और फिर अगर मैं दे दूं तो सरकार न पूछेगी कि इस इंस्पेक्टरी में एक लाख मेरे पास आया कहाँ से।"

वह सिर पकड़ कर बैठ गया।

●

"यह सिर पकड़ कर बैठने से काम न चलेगा, अल्ताफ़ मियाँ।" गफ़ार गुर्राया।

"सीधे-सीधे अपनी बेटी का ब्याह मुझ से कर दो। नहीं सब खाया पिया न उगलवा लिया तो गफ़ार नहीं, भंगी कह देना।" वह ग़रजा।

"वाह अच्छे रहे! रुखसाना तो गई। क्या तुम समझते हो कि मैं सब्र करके बैठ रहूँगा। रुखसाना नहीं सलमा सही।"

"मेरी बहिन बोली होती कि वह भी कुछ कम खूबसूरत नहीं है।"

"दूर हो जाओ मेरी नज़रों के सामने से।" अल्ताफ़ बड़ी जोर से गरजा।

●

अल्ताफ़ गफ़ार के आगे गिड़गिड़ा रहा था।

"यार गफ़ार भाई! खुदा के लिए मेरी मदद करो यार। मेरी इज्ज़त बचा लो नहीं तो मैं बेमौत मर जाऊँगा। तुम जानते हो कि मैं मुअत्तल हो चुका हूँ और मुकदमा लड़ने के लिए मेरे पास अब घेला भी नहीं है जो कुछ था वह मैं सरदार जोगिन्दर सिंह को दे बैठा हूँ।"

"उसे क्यों दिए?"

"मैंने कभी अपनी ससुराल में एक लाख कर्ज़ा लिया था और वह स्टैम्प पेपर मेरे साले के बेटे इकबाल ने सरदार के पास बेच दिया था। सरदार का नोटिस आया और मैंने जोड़-जोड़ कर एक लाख चुकाने में

ही अपनी कुशल समझी। वरना बात बहुत लम्बी हो जाती और मैं बहुत ज्यादा बदनाम हो जाता।"

वह एक ठंडी सांस लेकर बोला।

"इधर लाख गए और उधर ऐंटी करप्शन ब्रांच ने एक रिश्वत के मामले में मुझे पकड़ लिया और अब अपनी नौकरी और अपनी इज्ज़त बचाने के लिए मुझे पैसे की जरूरत है। अगर तुम मदद करोगे तो मैं आत्म हत्या करने से बच जाऊँगा और फिर मैं तुम्हारा कर्ज़ भी चुका दूंगा और इसी नौकरी से फिर लाखों कमा लूंगा। सिर्फ मेरी नौकरी बाकी रहनी चाहिए। समझ लो कि सब कुछ ठीक हो जाएगा और फिर यार मेरा जैसा तुम्हें कोई दोस्त न मिलेगा। लाखों का शराब का धंधा करते हो। रेस और सट्टे की ब्लैक करते हो, जेब कतरते हो और चोरियाँ करवाते हो, और मैं तुम्हें हर बार बचाता रहता हूँ।"

"तो खिलाता भी तो हूँ।" गफ़ार बोला, "कोई हराम में थोड़ा ही तुम मेरा काम करते हो। हजारों का हफ्ता नहीं लेते हो क्या ?"

"वह तो ठीक है !" अल्ताफ़ गिड़गिड़ाने लगा। "बस इस बार मदद करो सारी जिंदगी याद रखूंगा।"

"मगर उस दिन तो सलमा की शादी की बात पर तुमने मुझे गैट आउट कर दिया था।"

"मगर अब हाँ कर रहा हूँ। कसम खुदा की समझ लो कि सलमा से तुम्हारी शादी हो गई। तुम मेरे लिए सिर्फ तीस हजार का बन्दोबस्त कर दो। मैं इस झमेले से छूट जाऊँ तो सलमा से तुम्हारी शादी कर दूंगा।"

"इस झमेले से छुटने की राह अपन न देखेगा। तुम तो सलमा से मेरा निकाह कर दो। उसी वक्त तीस हज़ार न दूं तो सूअर की औलाद कह देना।"

"मगर"

"अगर मगर यार कुछ नहीं !" गफ़ार बोला।

"अपन साला गधा बनने को नहीं मांगता। तुम शादी कर दो। निकाह के वक्त तीस हज़ार ले लो। इससे पहले अपन साला एक धेला

भी देने को हामी नहीं है।"

"अच्छा !" अल्ताफ़ हार कर थक कर बड़ी मरी हुई आवाज़ में बोला।

"आज दस है तुम सोलह तारीख को बरात लेकर आ जाओ।"

"वह मारा !" गफ़ार बड़े ज़ोर से दहाड़ा।

"यह की है अक्लमंदी। सोलह को निकाह से पहले तीस हज़ार दूंगा।"

और वह अपनी जगह से उठकर खड़ा हो गया।

"यह क्या कह रहे हो तुम।"

रज़िया बड़ी बेचैनी से उठकर खड़ी हो गई।

"यह बहुत बुरी खबर सुनाई तुमने। गफ़ार जैसे आदमी की शादी और सलमा से। यह मैं हरगिज़ न होने दूंगी।"

वह अपने होंठ काटने लगी।

"कुछ भी हो आखिर को वह भी मेरी बच्ची है। मेरे स्वर्गीय पति की चहेती बहिन की बेटी है वह। उस पर इतना बड़ा सितम कभी न होने दूंगी।"

"मैं भी यही चाहता हूँ अम्मी !" इकबाल बोला।

"सलमा बहिन की इतनी बड़ी तौहीन हमारी तौहीन है। कुछ भी हो वह हमारी बहिन है।"

"माँ बाप के इन गुनाहों का फल इन बच्चों को कभी न मिलना चाहिए।" रज़िया बोली।

"कोई बात नहीं।" इकबाल कह रहा था।

"आप कल बाजी की शादी हो जाने दीजिए। हम सब कल ही वहाँ चलते हैं। मैं तीस हज़ार रुपए इस गफ़ार सुअर के बच्चे के मुँह पर मार दूंगा। तीस हज़ार के लिए सलमा बहिन कुरबानी का बकरा नहीं बन सकती।"

"मगर उसकी शादी है कब ?"

"अभी वक्त है।" इकबाल बोला "माली कह रहा था कि परसों बरात आएगी।"

"ठीक है!" रज़िया ने एक ठंठी साँस भरी। "हम परसों चलते हैं।"

और फिर वह अपनी बेटी की शादी के कपड़ों की देख माल में लग गई।

●

रज़िया अब चकाला वाली चाल में नहीं थी। बल्कि वह अब सरदार जोगिन्दर सिंह की बिल्डिग के एक खूबसूरत और फ़रनिश्ड फ़्लैट में रहती थी और वह अपनी इकलौती बेटी रुखसाना की यह मनपसंद शादी वहीं से कर रही थी। सरदार जोगिन्दर सिंह ने इस शादी में बड़ी दिलचस्पी ली थी और रज़िया ने मुँह बोले भाई के नाते रुख़साना के मामू बने हुए इस शादी के इतज़ाम में सबसे आगे थे।

शादी का पंडाल बड़े ही सुन्दर ढंग से सजाया गया था और बरातियों के लिए दावत का प्रबन्ध इतना शानदार किया गया था कि लोग हैरान हो रहे थे।

फिर वह एक घड़ी भी आन पहुँची जब सुहेल दुल्हा बना हुआ था। अपने दोस्तों के और हमदर्दों के झुरमुट में शादी के पंडाल में दाखिल हुआ।

दिल खोलकर बरातियों की आवभगत की गई और फिर रुख़साना और सुहेल की मनोकाँक्षा पूर्ण हुई और काज़ी साहिब ने इन दोनों का विवाह पढ़कर इन्हें वैवाहिक सम्पर्क में सदा के लिए बांध दिया।

खुशी और शोक के मिले जुले आंसू रज़िया और इकबाल की आंखों में मचल पड़े और रुख़साना सुहेल की दुल्हन बनकर अपने दिल में तमन्नाओं का एक ख्वाब लिए हुए अपने मायके से ससुराल चली गई।

सुहेल भी अब सरदार जोगिन्दर सिंह की कृपा से उन्हीं के फ़्लैट में रहने लगा था और वह अपनी दुल्हन को लेकर वहीं चला गया।

रज़िया ने अपनी बेटी को दहेज में बहुत कुछ दिया था। इतना कि देखने वालों की नज़रें हैरान होकर दहेज के सामान को देख रही थीं।

रज़िया ने अपनी बेटी की इस शादी पर पूरे पच्चीस हज़ार रुपये खर्च किए थे और उसने इस कीमती दहेज के साथ अपनी बेटी को एक कीमती तोहफ़ा और भी दिया था।

और वह कीमती तोहफ़ा था उसकी दी हुई आखिरी नसीहत। उसने विदाई के समय सच्चे कंठ से कहा था।

"आज से यह घर तुम्हारे लिए अजनबी है और वह घर जिसमें कि तुम ब्याह कर जा रही हो तुम्हारा अपना है। आज से तुम अपना सब कुछ अपने पति को समझना। उनकी खुशी और इच्छापूर्ति तुम्हारा ईमान होना चाहिए और याद रखना बेटी कि शरीफ़ लड़कियों का जिस घर में डोला जाता है फिर वहाँ से उनका जनाज़ा निकलता है। वह खुद नहीं निकला करती वहां से। तुम्हारे पति की खुशी और तुम्हारा ईमान ही अंत में काम आएगा बेटी। तुम इसका ध्यान रखना।"

और फिर वह बेटी को विदा करके शाँत हो गई और उसके सीने पर से एक बहुत बड़ा बोझ हल्का हो गया।

बहिन की जुदाई से इकबाल रोते-रोते बेहोश हो गया था।

●

गफ़ार भाई अपनी बत्तीसी और तोंद निकाले अल्ताफ़ के ड्राइंग रूम में दूल्हा बना बैठा था और उसके शौहदे और लफंगे किस्म के जाहिल दोस्त उसे घेरे बैठे थे और उससे गंदे-गंदे मज़ाक कर रहे थे कि इतने में रज़िया, इकबाल रुख़साना और सुहेल वहां पहुँच गए।

"यह शादी हरगिज़ नहीं हो सकती।"

रज़िया अन्दर पहुँच कर ज़ोर से चीखी।

"मैं अभी जाकर गफ़ार के मुँह पर तीस हज़ार रुपये मारे देता हूँ।" इकबाल बोला।

उसने अपने रुमाल से तीस हज़ार के नोटों का एक बंडल

निकाला।

"इस कमीने की इतनी जुर्रत कि वह तीस हजार में मेरी फूल जैसी बेटी को खरीदे।" रज़िया गरजी।

"मैं अपनी बेटी पर इतना बड़ा ज़ुल्म कभी न होने दूंगी। अपनी बेटी रुखसाना और सलमा में मैंने कभी फ़र्क नहीं समझा।"

"इकबाल।" रुखसाना बोली।

"तुम बाहर जाओ और उस गुण्डे और बदमाश और लफंगे गफ़ार के मुंह पर तीस हज़ार दे मारो और उसे जूते मारकर ड्राइंग रूम से बाहर निकाल दो।"

यह सुनते ही इकबाल बाहर की तरफ भागा और उसने जाते ही तीस हजार के नोटों का वह बंडल गफ़ार के मुंह पर मार कर कहा।

"कमीना कहीं का जलील। यह ले अपने तीस हज़ार रुपए और दूर हो जा यहाँ से। बड़ा आया है मेरी बहिन से शादी करने वाला" और इस पर गफार अपने कंधों को झटककर खड़ा हो गया।

"अबे ओ लौंडे" वह ज़ोर से गर्जा।

"अपन साला को तुम जानता है कि हम कौन है। हम बम्बई का दादा। हम तुम्हें मार कर फैंक देगा। तुम्हें पता तक न चलेगा और फिर तुम्हारी माँ रोती फिरेगी। कहे दे रहा हूँ।"

वह गुस्से के मारे लाल-पीला हो रहा था।

"अपन साला ने कितनों को मार कर गढ़े में फैंक दिया है।"

वह जोश में बके चला जा रहा था।

"हम वह रमजू साला को मार कर फैंक दिया होता और आज तक पुलिस साली के बाप को भी खबर न हुई। और हम," कि इसके साथियों ने देखा।

"होश में आओ गफार भाई। यह तुम क्या बक रहे हो।" इतने में पुलिस इंस्पेक्टर जो कि गफार के नाम वारंट लेकर आया था आगे बढ़ा।

"बहुत-बहुत शुक्रिया। दोस्त, तुम्हारा गुस्सा इस वक्त हमारे काम

आ गया ।"

और उसने गफार के हाथों में हथकड़ियाँ डालते हुए इकबाल की पीठ ठोकी ।

"हम तुम्हारे आभारी हैं ।"

और इन्स्पेक्टर जो गफार को लेकर बाहर निकलने ही वाला था कि अन्दर से सराज अलताफ का बेटा भागा हुआ आया । वह आते ही अलताफ से बोला ।

"गज़ब हो गया डैडी । सलमा ने जहर खा लिया ।"

वह होंठों पर ज़बान फेरते हुए बोली ।

"मगर यह न भूलना कि मेरी मौत भी तुम्हारी मुहब्बत के मातम में हो रही है और तुम्हारी इतनी ही याद मेरे लिए बहुत है," वह बड़बड़ाई ।

"मेरे माँ-बाप मेरी शादी गफार से कर रहे थे ।"

उसने नफरत से मुँह बिगाड़ा और उसे एक हिचकी आई । आखिरी झटका लगा उसके शरीर को और वह हमेशा के लिए मृत्यु के आलिंगन में चली गई । सारा घर बेइख्तयार धाड़ें मार-मार कर रोने लगा और रुखसाना सलमा के मुर्दा शरीर पर चादर डाल कर उससे लिपट गई । वह फूट-फूट कर रो रही थी ।



अलताफ ने लाख कोशिश की । बहुतेरे हाथ पाँव मारे उसने । उसके मुकदमे के लिए रजिया ने तीस हजार रुपए भी दिए । उसके घर की एक एक पाई खत्म हो गई । एक-एक चीज बिक गई उसके घर की मगर वह रिश्वत लेने के जुर्म में बरी न हो सका ।

और उसे छः साल कठोर कारावास का हुक्म सुना दिया गया और इस तरह उसके स्याह कारनामों की सज़ा मिल गई ।

और अब उसका खानदान निसहाय था और अब उसकी माँ ज़ेका और पत्नी शदो उसकी दया पर थीं जो कि कभी उसके सहारे जी रही थीं ।

मगर रज़िया ने इन लोगों के साथ कोई बुराई नहीं की। उसने अपनी किसी पिछली बात का बदला नहीं लिया इनसे। बल्कि वह इन लोगों को बड़ी सहृदयता से अपने घर ले आई और अपनी हैसियत के अनुसार उनकी खिदमत करने लगी।

सराज अपनी माँ और दादी को छोड़कर न जाने कहाँ चला गया। वह दुःशचरित्र और आवारा तो पहले ही से था। बाप जेल गया और वह इधर-उधर मारा-मारा फिर कर जेल की तैयारियाँ करने लगा था।

उसकी माँ और उसकी दादी को इसके बारे में कोई सूचना न मिली थी।

आज का दिन रुखसाना और सुहेल की जिन्दगी का मुबारक का दिन था। सुहेल ने इंजीनियरिंग का इम्तहान सम्मान के साथ पास कर लिया था।

और उसे आटोमुबाईल में एक हज़ार रुपए की जगह मिल गई थी। साथ साथ ही उसे एक शानदार बंगला मिला था। कार और मुलाज़म मिले थे।

और अब उसके बाप बनी अहमद का वह स्वप्न जिसे कि वह एक अरसे से देखता चला आ रहा था पूरा हो चुका था। उसे अपने ख्वाबों का हसीन सत्य मिल गया था।

उसका बेटा साहब बन गया था और उसे गली-गली ठेला चला कर फल बेचने से छुटकारा मिल गया था।

उसने जिस पौधे को अपने खून से सींचा था और परवान चढ़ाया था अब वह फूल और फल रहा था और उसे जिन्दगी की मुसीबतों से छुटकारा मिल गया था।

बनी अहमद खुश था और अपने बंगले के बेहद शानदार ड्राइंग रूम में डाइनिंग टेबल पर बैठा अपने खानदान वालों के साथ नाश्ता कर रहा था।

रेडियोग्राम खुला हुआ था और पंकज मलिक की सुरीली आवाज

गूंज़ रही थी।

"आज अपनी मेहनतों का मुझको समरा मिल गया।

आज अपनी मेहनतों का……।"

उसने अपने अल्लाह को दिल के साथ धन्यवाद किया और उसकी आँखों में खुशी के आँसू डबडबाए। उसने रुखसाना और सुहेल की तरफ बड़ी प्यार भरी नज़रों से देखा और सईदा, सुहेल की बहिन बोली।

"देखिए भैया! मैं कहे देती हूँ हाँ, मैं नन्हें मुन्ने भतीजे की पैदाइश की खुशी में एक भारी जोड़ा और पाँच सौ रुपए से कम न लूंगी, समझ लीलिए।"

सुहेल शर्मा गया और रुखसाना की नज़रें एकदम झुक गईं और वह नाश्ते की मेज़ पर से उठकर चली गई।

हाजिरा उसे प्यार भरी नज़रों से देखकर सईदा से बोली।

"पगली। बहू बेगम को नाश्ता तो कर लेने दिया होता।"

और फिर सुहेल भी इधर-उधर नज़रें चुराता हुआ उठ गया। वह दफ्तर जाने की तैयारी कर रहा था।

